प्राक्कथन

राजस्थान प्रदेशीय इतिहास पर प्रकाश डालने वाले विभिन्न साहित्यिक एवं पुरातात्विक सामग्री के साथ साथ अभिलेखीय सामग्री भी प्रभूत मात्रा में उपलब्ध है। इस अभिलेखीय सामग्री के सर्वेक्षण, सम्पादन एवं अध्ययन का कार्य वर्तमान शताब्दी के आरम्भ से ही अत्यन्त तीव्र गति से होने लगा था। इस क्षेत्र में डॉ० डी. आर. भण्डारकर एवं डॉ० एल. पी. टैस्सीटोरी की सेवाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय रहीं। डॉ० भण्डारकर ने अभिलेखीय सर्वेक्षण के कार्य के साथ साथ अनेक महत्वपूर्ण अभिलेखों का सम्पादन भी किया। इधर डॉ० टैस्सीटोरी ने जोधपुर एवं उसके उत्तरी भाग में स्थित रेगिस्तानी प्रदेश में स्थित अभिलेखों की खोज एवं उनका सम्पादन किया। इनके साथ ही स्थानीय इतिहास प्रेमियों में भी अभिलेखीय सामग्री के प्रति रुचि उत्पन्न हुई। परिणामस्वरूप नाथूराम भट्ट, शिवनाथसिंह राव, पंडित विश्वेश्वरनाथ रेउ, पं० रामकर्ण आसोपा, मुंशी देवीप्रसाद आदि ने अभिलेखीय सामग्री का सर्वेक्षण एवं सम्पादन किया एवं अनेक उपयोगी अभिलेख इतिहासवेत्ताओं के सम्मुख आए। अभिलेखीय सामग्री की उपलब्धि से इतिहास लेखन के क्षेत्र में एक नवीन दृष्टि का सूत्रपात हुआ। अब तक इतिहासकार स्थानीय ख्यातों-बातों तक ही सीमित था, लेकिन अभिलेखीय सामग्री के प्रकाश में आने से ख्यातों-बातों आदि में उपलब्ध तथ्यों का परीक्षण होने लगा व साथ ही नवीन तथ्य भी सम्मुख आए। इससे अब विभिन्न स्रोतों के सम्यक् अध्ययन के आधार पर प्रमाणिक इतिहास लिखे जाने लगे।

अभिलेखीय सामग्री के महत्व को देखते हुए इस सामग्री की संदर्भिका के निर्माण का कार्य सर्वप्रथम डॉ० कीलहार्न ने किया जिसमें भारत में उपलब्ध विभिन्न अभिलेखों को सूचिबद्ध किया गया। कीलहार्न द्वारा निर्मित संदर्भ सूची का हिन्दी अनुवाद बाबू श्यामसुन्दरदास ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका में किया। इसके उपरान्त डॉ० भण्डारकर ने एपीग्राफिया इण्डिका में नवोपलब्ध अभिलेखो को समाहित करते हुए उत्तरी भारत के अभिलेखों की सूची प्रकाशित की। राजस्थान में उपलब्ध अरबी फारसी के अभिलेखों की सन्दर्भिका डॉ० जेड. ए. देसाई ने अभी हाल ही

में तैयार की, जो राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा प्रकाशित कर दी गई है। डॉ० गोपीनाथ शर्मा ने भी मध्यकालीन राजस्थान से सम्बन्धित साहित्यिक, पुरातात्विक एवं पुरालेखीय सामग्री को सम्मिलित करते हुए एक संक्षिप्त सन्दर्भ सूची का प्रकाशन किया था, जिसका कि विस्तृत रूप राजस्थान के इतिहास के स्रोत (प्रथम भाग) के रूप में प्रकाशित हो चुका है। वस्तुतः शोध कार्य की दृष्टि से सन्दर्भ सूचियों का अत्यधिक महत्व है। इसी परम्परा का निर्वाह करते हुए डॉ० मांगीलाल व्यास 'मयंक' ने राजस्थान के अभिलेखों का विवरण काल क्रमानुसार प्रस्तुत किया है। डॉ० मयंक ने अद्यावधि प्रकाशित एवं अप्रकाशित चार सौ नागरी-अभिलेखों एवं एक सौ चौराणू अरबी-फारसी के अभिलेखों का विवरण प्रस्तुत खण्ड में दिया है जो राजस्थान के इतिहास पर कार्य करने वाले शोध-कर्मियों हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे। परिशिष्ट में प्रदत्त वंशावलियां एवं नामानुक्रमणियें अत्यन्त उपयोगी हैं।

मैं लेखक को उसके इस श्रम-साध्य कार्य की सफलता पर बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इस कृति का विद्वत् जगत् में आदर होगा।

रामप्रसाद व्यास

इतिहास विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय
जोधपुर.

भूमिका

इतिहास हमारे पूर्वजों द्वारा अर्जित अनुभवों का कोष है। इस महान अनुभव पूरित कोष में समाहित सामग्री की उपलब्धि के लिये हमें विभिन्न स्रोतों का सहारा लेना पड़ता है, जिन्हें हम इतिहास के साधन अथवा ऐतिहासिक स्रोत कहा करते हैं। राजस्थान प्रदेश की भी अपनी अत्यन्त समृद्ध एवं गौरवशाली ऐतिहासिक परम्परा रही है। उस ऐतिहासिक परम्परा की जानकारी से सम्बन्धित पर्याप्त साधन उपलब्ध होते हैं। ऐतिहासिक साधनों की विभाजन परम्परा के अनुसार स्थानीय ऐतिहासिक स्रोतों को भी दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पहले वर्ग में साहित्यिक सामग्री को सम्मिलित किया जा सकता है तथा दूसरे वर्ग में पुरातान्विक सामग्री की गणना होती है।

पुरातात्त्विक सामग्री की उपलब्धि की दृष्टि से राजस्थान पर्याप्त समृद्ध रहा है। स्थानीय भौगोलिक पर्यावरण की शुष्कता एवं प्रकृति की कृपणता सामान्यत: यह सन्देह उत्पन्न कर देती है कि स्थानीय मानवीय उपलब्धियां नगण्य रही होंगी अथवा मानवीय दृष्टि से इस प्रदेश में दारिद्रय ही रहा होगा ! लेकिन स्थानीय पुरातात्त्विक स्रोतों की प्राप्ति इस भ्रान्ति का निराकरण करती हुई प्रमाणित करती है कि यह प्रदेश मानवीय दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न रहा है तथा मानवीय उपलब्धियाँ भी अत्यन्त महान रही हैं। पुरातात्त्विक सामग्री से ही यह ज्ञात होता है कि राजस्थान में जन-जीवन का सूत्रपात अत्यन्त प्राचीन काल में हो गया था। लूनी नदी के आधार पट्ट में उपलब्ध आदि मानव के उपकरण स्थानीय ऐतिहासिक परम्परा को प्रागेतिहास काल तक ले जाते हैं। प्रागेतिहास काल से आरम्भ होने वाली यह ऐतिहासिक परम्परा प्रत्येतिहास काल में प्रवाहित होती हुई प्राचीन काल में प्रवेश करती है और प्राचीन काल से लेकर अद्यावधि समरसता से प्रवाहित होती चलती है।

युग-युगीन उपलब्ध पुरातात्त्विक सामग्री को भी अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से अलग-अलग वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है। मुख्य रूप से इसमें खण्डहर, मुद्राएं एवं अभिलेख सम्मिलित किये जा सकते हैं। खण्डहर हमें भूगर्भ एवं भूतल–दोनों स्थानों पर उपलब्ध होते हैं। भूगर्भ से उपलब्ध खण्डहर प्रागेतिहास एवं प्रत्येतिहासकालीन इतिहास की विशेष सामग्री प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार

की सामग्री हमें राजस्थान में कई स्थानों से उपलब्ध हुई है। राजस्थान में समय समय पर उत्खनन् कार्य होता रहा है। इससे अनेक स्थल तो प्रकाश में आ चुके हैं तथा उन विभिन्न स्थलों से पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो चुकी है। इन स्थलों में कालीबंगा[1], आहाड़[2], बागोर[3], रंगमहल[4], बैराट[5], रेड[6], साँभर[7] आदि प्रमुख हैं। लेकिन यह पुरातात्त्विक उत्खनन का आरम्भ मात्र है। वास्तव में अभी राजस्थान के विभिन्न भागों में पर्याप्त सामग्री भूगर्भ में सुरक्षित है। विशेषतः पश्चिमी राजस्थान में भौगोलिक परिवर्तन अधिक हुए हैं। इन भौगोलिक परिवर्तनों ने राजस्थान के इस भू-भाग को नितान्त शुष्क प्रदेश में परिवर्तित कर दिया है लेकिन किसी समय यह प्रदेश भी सम्पन्न रहा था। इसकी उस श्री-सम्पन्नता के दर्शन पुरातत्त्ववेत्ता की कुदाली ही करवा सकती है, जिसकी प्रतीक्षा अनेक स्थल कर रहे हैं।

राजस्थान के विभिन्न स्थलों पर हुई खुदाइयों के फलस्वरूप जो सामग्री प्रकाश में आई है, उसमें नगर अवशेष, मृद्भाण्ड, मुद्राएं व मुहरें, पाषाणयुगीन उपकरण, ताम्र उपकरण, मणियां, अस्थियां, आभूषण, मृण्मयी मूर्तियां, लोह उपकरण आदि सामग्री उपलब्ध होती है, जो युग विशेष के लोगों के जन-जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। उत्खनन से प्राप्त खण्डहरों के समान कुछ खण्डहर भूतल पर ही उपलब्ध होते हैं। ये खण्डहर प्राचीन नगरों अथवा निर्जन स्थानों पर उपलब्ध होते हैं। इनमें देवालय, दुर्ग, वापी, कूप आदि प्रमुख हैं। इनमें से काफी सामग्री तिथि युक्त भी प्राप्त होती है, क्योंकि इन स्थलों पर प्रायः तिथि युक्त अभिलेख प्राप्त हो जाते हैं। ये खण्डहर हमें युग विशेष की वास्तुकला का परिज्ञान कराते हैं। मन्दिरों व अन्य भवनों में मूर्तियां उपलब्ध होती हैं जो जन-जीवन की स्पष्ट झलक प्रदर्शित करती हैं व साथ ही उनकी विचारधारा का भी संक्षिप्त परिचय दे देती हैं। प्रतिमाओं से आर्थिक एवं सामाजिक क्रियाओं, वेशभूषा एवं आभूषण आदि का सही अनुमान लगा सकते हैं। देवालयों की समृद्धि समाज की आर्थिक समृद्धि की सूचक होती है।

खण्डहरों के बाद दूसरा साधन मुद्राएं हैं। मुद्राओं से हमें विभिन्न राजवंशों, उनके राजाओं के नाम, राजाओं की चारित्र्यिक विशेषताएं, राजाओं की विजयें, राजाओं का शासन काल, राज्य सीमा, जनता की आर्थिक दशा, धार्मिक मान्यताएं, धार्मिक नीति आदि अनेक विषयों से सम्बन्धित अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त होती हैं। यद्यपि मुद्राओं के आधार पर कुछ विषयों में मान्यता स्थापित करने में विशेष सावधानी की आवश्यकता रहती है। उदाहरण के लिये मुद्राओं के उपलब्धि स्थान के आधार पर राज्य विशेष की सीमा निर्धारित करते समय विशेष सावधानी रखने की आवश्यकता रहती है क्योंकि मुद्राएं व्यापारियों द्वारा भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाई व ले जाई जाती रही हैं।

मुद्राओं की दृष्टि से भी राजस्थान अत्यन्त सम्पन्न रहा है। यहां अत्यन्त प्राचीन काल से ही मुद्राओं का प्रचलन रहा है तथा वे विभिन्न युगों की मुद्राएं अच्छे संग्रहों के रूप में हमें प्राप्त होती हैं। राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर पुरातात्विक उत्खनन से जो सामग्री उपलब्ध हुई उस सामग्री में मुद्राएं व मुहरें भी प्राप्त हुई हैं। आहाड़ के उत्खनन से 6 ताम्र मुद्राएं, कुछ इन्डोग्रीक मुद्राएं तथा कुछ मुहरें प्राप्त हुई हैं। इन मुद्राओं की बनावट तथा अंकन शैली के आधार पर इनका काल तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर प्रथम शती ईसा पूर्व तक आंका गया है। उपलब्ध मुद्राओं में से एक मुद्रा चौकोर तथा शेष गोल हैं। रेड उत्खनन से 3075 रजत मुद्राएं उपलब्ध हुई हैं जो आहत मुद्राएं (पंचमार्क) हैं। इन मुद्राओं का प्रचलन काल छठी शताब्दी ई० पू० से द्वितीय शती ई० पू० तक माना गया है।[9] इसी प्रकार यहां मालवगण के सिक्के[10], सेनापति सिक्के[11], मित्र मुद्राएं[12], राजन्य मुद्राएं[13] व योधेय मुद्राएं[14] भी उपलब्ध हुई हैं। नगर[15], बैराट[16], रंगमहल[17] तथा साम्भर के उत्खनन[18] से पर्याप्त मुद्राओं की उपलब्धि हुई थी।

राजस्थान में राजपूत राज्यों की स्थापना के उपरान्त स्थानीय शासकों द्वारा भी यहां मुद्राओं का प्रचलन हुआ। राजपूत राजवंशों में सर्वाधिक प्राचीन राजवंश मेवाड़ का गहलोत वंश था, जिसने सर्वाधिक लम्बी अवधि तक मेवाड़ पर अपना आधिपत्य बनाये रखा। इस राजवंश के प्रारम्भिक शासकों ने ही अपनी मुद्राओं का प्रचलन आरम्भ कर दिया था।[19] अन्य राजपूत रजवाड़ों ने बहुत बाद में जाकर अपनी मुद्राओं का प्रचलन किया। अतः यहां दिल्ली के सुल्तानों एवं तदनन्तर मुगल बादशाओं की मुद्राओं का भी पर्याप्त चलन रहा। इधर दक्षिणी सीमावर्ती प्रदेशों में गुजरात के सुल्तानों की मुद्राएं तथा पश्चिमी राजस्थान में सिन्ध के अमीरों की मुद्राएं प्रचलन में रही। स्थानीय राजपूत राजवंशों में अधिकाँश राजवंशों को मुगल बादशाह शाह आलम के समय अपनी मुद्राएं चलाने का अधिकार प्राप्त हुआ।[20] अतः उस समय से राजपूत मुद्राओं का तेजी से चलन हुआ। आगे चलकर अंग्रेजी शासनकाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की कुछ मुद्राएं तथा बाद में ब्रिटिश सरकार की मुद्राओं का भी प्रचलन हुआ। ब्रिटिश मुद्राओं के प्रचलन से स्थानीय मुद्राएं प्रायः बन्द सी होने लगी फिर भी कुछ रजवाड़ों में स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त भी स्थानीय मुद्राओं का प्रचलन रहा। इन देशी रजवाड़ों के आधीन सामन्तों में से भी कुछ सामन्तों ने भी अपने नाम से मुद्राओं का प्रचलन किया था।[21] इस प्रकार पुरातात्त्विक साधनों में मुद्राओं की प्राप्ति हमें युग युग में होती है। अतः इस ऐतिहासिक स्रोत का उपयोग राजस्थान के इतिहास के निर्माण में पर्याप्त मात्रा में हो सकता है।

पुरातात्त्विक साधनों में तीसरा महत्त्वपूर्ण स्रोत अभिलेख हैं। इतिहास

लेखन में सर्वाधिक महत्त्व अभिलेखों का रहा है। अन्य स्रोतों की अपेक्षा अभिलेखों में उपलब्ध सामग्री अधिक प्रमाणिक होती है। यहां तक कि साहित्यिक स्रोतों में प्रदत्त तथ्यों की पुष्टि यदि अभिलेखों से होती है तो वे तथ्य प्रमाणिक माने जाते हैं। इस प्रकार अभिलेख अन्य साधनों की प्रमाणिकता की कसौटी के रूप में भी काम में लिये जाते हैं लेकिन इसका यह तात्पर्य नहीं कि अभिलेख शत प्रतिशत विश्वसनीय ही होते हैं। वास्तविकता यह है कि यदि अभिलेखों का अध्ययन ढंग से नहीं किया जाय, तो ये इतिहासकार को गुमराह भी कर सकते हैं। कभी-कभी जाली अभिलेख भी उपलब्ध होते हैं। ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण लेखों में प्रायः दान पत्र होते हैं, अतः कई लोग अपने लिये झूठे दान पत्रों का निर्माण करवा लिया करते थे। इनमें फिर अनेक झूठी घटनाएं भी सम्मिलित कर ली जाती थीं। अतः ताम्रपत्रों का अध्ययन करते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता रहती है। पाषाणोत्कीर्ण लेखों में से भी कभी-कभी जाली लेख निकल आते हैं। उदाहरणार्थ राजकीय प्रताप संग्रहालय उदयपुर में संग्रहीत सूरखण्ड का अभिलेख जाली अभिलेख है, जो महाराणा प्रताप के समय का है।[22] अतः अभिलेखों से ऐतिहासिक तथ्यों का चयन करने से पूर्व हमें अभिलेख की प्रामाणिकता पर विचार करना चाहिये तथा जब उसकी प्रामाणिकता स्थापित हो जाय तब उसका उपयोग ऐतिहासिक स्रोत के रूप में किया जाना चाहिये।

राजस्थान में अभिलेखों की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। यहाँ द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व से हमें अभिलेखों की प्राप्ति होने लगती है। इस तिथि के उपरान्त प्रचुर मात्रा में अभिलेख उपलब्ध होने लगते हैं। द्वितीय शती ईसा पूर्व के लेख नगरी[23] व घोसूंडी[24] में उपलब्ध हैं। इससे पूर्व सम्राट अशोक का अभिलेख राजस्थान में वैराट नामक स्थान से प्राप्त हुआ[25] जो बाभ्रू लेख भी कहलाता है। ईसा पूर्व के वर्षों के ये सभी लेख तिथि रहित हैं। ईसा की शतियों से प्राप्त होने वाले लेखों में हमें तिथियाँ उपलब्ध होने लगती हैं।

अभिलेखों से हमें कई प्रकार की महत्त्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध होती हैं। अभिलेखों में उपलब्ध इन विभिन्न सूचनाओं को निम्न प्रकार से विषयबद्ध किया जा सकता है।

राजनैतिक जीवन

अभिलेखों से हमें राजनैतिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाएं उपलब्ध होती हैं जो राजनैतिक इतिहास के निर्माण में सहायक होती हैं। अभिलेखों में हमें विभिन्न राजवंशों की उत्पत्ति, वंश वृक्ष, राजाओं द्वारा की गयी विजयें, प्रशासनिक अधिकारियों की व्यवस्था आदि सूचनाएं उपलब्ध होती हैं। राजस्थान में उपलब्ध होने वाले लेखों में ये सभी प्रकार की राजनैतिक सूचनाएं हमें उपलब्ध होती हैं।

राजवंशों की उत्पत्ति विषयक अभिलेखों के उदाहरण के रूप में कक्कुक का घटियाला लेख लिया जा सकता है।[26] इस अभिलेख में प्रतिहार वंश की उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि रघुवंशी राम का प्रतिहार (द्वारपाल) उसका भाई लक्ष्मण था। अत: लक्ष्मण के वंशज प्रतिहार कहलाए। इस प्रकार प्रतिहार वंश का सम्बन्ध सूर्यवंशी लक्ष्मण के साथ जोड़ने के अतिरिक्त यह भी कहा है कि प्रतिहार राजपूत वंश का मूल पुरुष हरिशचन्द्र नामक ब्राह्मण था। इस ब्राह्मण की ब्राह्मण पत्नि से उत्पन्न सन्तान प्रतिहार ब्राह्मण हुई तथा क्षत्रिय पत्नि भद्रा से उत्पन्न सन्तान प्रतिहार राजपूत हुई। इसी प्रकार चौहान राजवंश के विषय में सेवाड़ी से उपलब्ध महाराणा रत्नपाल के ताम्रपत्र[27] में कहा गया है कि इन्द्र की आँख से एक पुरुष निकला जिससे चाहमान (चौहान) वंश चला।[28] इस प्रकार चौहानों की उत्पति विषयक अग्निकुण्ड कथा से भिन्न तथ्य यह अभिलेख प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार मारवाड़ के राठौड़ों का सम्बन्ध भी अभिलेखों द्वारा कन्नौज से स्थापित होता है तथा इन्हें सूर्यवंशी भी बताया गया है। इस सम्बन्ध में रावल जगमाल का नगर अभिलेख दृष्टव्य है।[29] इस अभिलेख में कहा गया है कि सूर्यवंशी कन्नौजिया राठौड़ सीहा व सोनग ने अपनी तलवार की शक्ति से खेड़ पर अधिकार किया। इसी प्रकार बीकानेर के दुर्ग की प्रतोली पर उपलब्ध महाराणा रायसिंह कालीन लेख[30] भी इन राठौड़ों को सूर्यवंशी ठहराता है। इस प्रकार राजस्थान से उपलब्ध अभिलेखों से विभिन्न राजवंशों की उद्भव विषयक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

अभिलेखों से हमें विभिन्न राजवंशों के वंश वृक्ष भी प्राप्त होते हैं। इन वंशावलियों से शासकों का क्रम निर्धारण करने में कठिनाई का अनुभव नहीं होता। इन वंश वृक्षों से यह भी ज्ञात होता है कि कभी कभी शासक की मृत्यु के उपरान्त उसके ज्येष्ठ पुत्र के स्थान पर उसका अनुज उत्तराधिकारी हो जाता है। तदुपरान्त पुन: उसका पुत्र शासक बन जाता है। अत: स्पष्ट है कि उत्तराधिकार विषयक सर्वमान्य एवं सार्वभौम सिद्धान्त, कि ज्येष्ठ पुत्र ही उत्तराधिकारी होना चाहिये, का खण्डन होता भी दिखाई देता है। नाडोल के चौहानों के अभिलेखों से नाडोलिया चौहानों की वंशावली आसानी से तैयार हो जाती है। इसी प्रकार सुंधा पहाड़ी अभिलेख[31] से सोनगिरा चौहानों, किराडू अभिलेख से परमारों[32], बाउक के जोधपुर अभिलेख से प्रतिहारों[33], राजा साधारण के लाडनूं अभिलेख से दिल्ली के खिलजी राजवंश[34], जालोर दुर्ग की मस्जिद के अभिलेख से गुजरात के सुल्तानों[35], खाटूकलां के अभिलेख से नागोर के खानजादा राजवंश[36], रावल जगमाल के नगर अभिलेख[37] से राव मल्लीनाथ के वंशजों की वंशावली प्राप्त होती है। हस्तिकुण्डी अभिलेख[38] मरुमण्डल के राष्ट्रकूटों की वंशावली देता है। इस प्रकार से अभिलेख

विभिन्न राजवंशों की वंशावली की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन वंशावलियों में मात्र राजाओं का नाम ही नहीं मिलता है, वल्कि विभिन्न शासकों के नाम के साथ साथ उनकी विशिष्ट राजनैतिक उपलब्धि अथवा उसके काल की विशेष घटना का उल्लेख भी मिलता है। मेवाड़ प्रदेश में उपलब्ध गहलोतवंशीय शासकों के लेखों तथा मारवाड़ के प्रतिहार शासकों की वंशावलियों से इस तथ्य की पुष्टि होती है। अभिलेखों में प्राप्त होने वाली कुछ महत्वपूर्ण वंशावलियाँ प्रस्तुत रचना के साथ परिशिष्ट में दी जा रही हैं।

अभिलेखों में राजाओं द्वारा की गई विभिन्न विजयों का भी उल्लेख मिलता है, जिसके आधार पर एक शासक के राज्य विस्तार का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। घटियाला के प्रतिहार शासक कक्कुक के अभिलेख[39] से ज्ञात होता है कि वह वल्ल, स्त्रवणी मरु, माड, परिअंक, गोधनगिरी तथा वटनाणक मण्डल का विजेता था। इसी प्रकार चौहान दुर्लभराज को किणसरिया अभिलेख[40] में रासोसितन्न मण्डल का विजेता कहा है। महाराणा कुम्भा के रणकपुर अभिलेख[41] में उसे सारंगपुर, नागपुर, गागरोण, नराणक, अजयमेरू, मण्डोर, मण्डलपुर, बूंदी, खाटू चाटसू, जाना व अन्य दुर्गों का विजेता वताया गया है तथा कहा गया है कि उससे ढिल्ली तथा गुर्जरात्र के सुल्तानों को पराजित कर "हिन्दु सुरत्राण" की उपाधि प्राप्त की। इसी प्रकार अभिलेखों से हमें कई शासकों की सामरिक उपलब्धियों का प्रमाणिक विवरण मिलता है, जिनके सम्बन्ध में अन्य साधन प्रायः मौन रहते हैं। इन विजयों के द्वारा शासकों के राज्य विस्तार का सही अनुमान लगाया जा सकता है।

राजाओं की विजयों तथा राज्य विस्तार के साथ साथ अभिलेखों से हमें कतिपय प्रशासनिक सूचनाएं भी प्राप्त होती हैं। अभिलेखों में प्रसंगवंश हमें प्रशासनिक अधिकारियों का उल्लेख मिलता है। कभी कभी पद के साथ साथ पदाधिकारी का नाम भी मिलता है। उदाहरण के लिये घाणेराव अभिलेख[42] में दण्डनायक पदाधिकारी का उल्लेख मिलता है। प्रतापगढ़ अभिलेख[43] (946 ई) से हमें किसी महादेव नामक प्रान्तीय अधिकारी तथा कोक्कट नामक सेनापति का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार सारणेश्वर प्रशस्ति में हमें कई पदाधिकारियों का उल्लेख प्राप्त होता है।[44] इस लेख से ज्ञात होता है कि अल्लट का अमात्य ममट, सन्धिविग्रहिक दुर्लभराज, अक्षपटलिक मयूर व समुद्र वन्दिपति नाग और भिषगाधिराज रूद्रादित्य था। सन् 977 ई. के आहाड़ के देवकुलिका अभिलेख में मेवाड़ नरेश अल्लट, नरवाहन तथा शक्तिकुमार कालीन अक्षपटलाधीशों का उल्लेख मिलता है।[45] अर्थूणा की जैन मन्दिर प्रशस्ति (सन् 1109 ई.)[46] में परमारवंशीय

शासक विजयराज के संधि विग्रहिक वालम जाति के वामन कायस्थ का वर्णन मिलता है। इसी अभिलेख में ग्राम के शासक ग्रामणी का भी उल्लेख मिलता है।

सामाजिक जीवन

राजनैतिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाएं भी हमें अभिलेखों से प्राप्त होती है[47] पर प्रत्येक वर्ण के अन्तर्गत विभिन्न जातियों का उल्लेख हमें अभिलेखों में प्राप्त होता है। राजपूतों की कई ऐसी जातियों का उल्लेख भी मिलता है जो वर्तमान में दिखाई नहीं देती। या तो वे जातियां लुप्त हो चुकी हैं या उनका रूप अत्यधिक बदल गया है। उदाहरण के लिये पाल के सती स्मारक अभिलेखों में इस प्रकार की जातियां मिलती हैं।[47अ]

अभिलेखों से कुछ विशेष महत्वपूर्ण जातियों के अस्तित्व का पता भी लगता है। रामायण में आभीर जाति का उल्लेख मिलता है।[48] आभीरों को रामायण में पापी (दुष्ट कर्म करने वाली) जाति बताया है। कक्कुट के घटियाला लेख[49] में भी इसी रूप में इस जाति का उल्लेख स्पष्ट करता है कि नवीं शताब्दी तक यह जाति इस प्रदेश में थी। इसी प्रकार समरसिंह (चौहान) के जालोर अभिलेख[50] (सन् 1183 ई.) में तस्कर कार्य करने वाली पिल्वाहिक जाति का उल्लेख हुआ है।

अभिलेखों में समाज की शान्ति एवं सुरक्षा की व्यवस्था के विषय में भी अत्यन्त मनोरंजक तथ्य मिलते हैं। नाड्डोल से प्राप्त सन् 1141 ई. के एक अभिलेख[51] से ज्ञात होता है कि धालोप ग्राम को आठ वार्डों में बांटा गया था तथा प्रत्येक वार्ड से दो दो ब्राह्मणों का चुनाव किया गया। इन प्रतिनिधियों के मण्डल का मध्यक पीपलवाडा से निर्वाचित देवाइच को बनाया गया। इन्होंने निश्चय किया कि ग्राम के पंच चोरी का पता लगाने में सहयोग देंगे। इस निर्णय पर ग्रामवासियों की साक्षी भी दी गयी है तथा अभिलेख में यह भी कहा है कि यह लेख कायस्थ ठाकुर पेथड ने ग्रामवासियों की इच्छा से लिखा है। इस प्रकार समाज के लोगों में अपनी व्यवस्था के विषय में जो जागृति थी, उसका सही चित्र हमें मिल जाता है।

कुछ अभिलेखों में रीति रिवाजों का भी उल्लेख मिलता है। कहीं-कहीं प्रसंगवश आभूषणों का भी उल्लेख मिल जाता है।[52] अभिलेखों में सती-प्रथा विषयक सामग्री पर्याप्त मात्रा में मिलती है। हमें यह भी ज्ञात होता है। कि सती-प्रथा मात्र क्षत्रियों में ही नहीं वरन् ब्राह्मणों व वैश्यों में भी प्रचलित थी। सती प्रथा के विषय में यह भी उल्लेखनीय है कि सती केवल पति की मृत्यु पर ही नहीं वरन् पुत्र की मृत्यु पर मां सती हो जाती थी। इस प्रकार का एक सती स्मारक अभिलेख सिंघोड़ियों की बारी, जोधपुर में उपलब्ध है।[53] सती स्मारक अभिलेख विवाह की स्थिति पर भी प्रकाश डालते हैं। सतियों की संख्या से बहु पत्नी विवाह की प्रथा का

ज्ञान होता है। साथ ही उपपत्नियों (पासवानों) के अस्तित्व की प्रथा का भी ज्ञान होता है।

अभिलेखों में हमें ग्रामों एवं नगरों का भी वर्णन प्राप्त होता है जिससे ग्रामों के बसने की योजना एवं नगर योजना व नगरों के वैभव का ज्ञान हो जाता है। उदाहरणार्थ नाडोल से प्राप्त संवत् 1198 वि. के अभिलेख[54] से ज्ञात होता है कि धालोप नामक ग्राम अलग अलग वाड़ों (वार्डों) में विभाजित था। इन वाडों के मेरीवाडा, डीपावाड़ा, पीपलवाड़ा आदि नाम भी दिये गये हैं। नगरों का विस्तृत विवरण भी अभिलेखों में उपलब्ध होता है। उदाहरण के लिये ओसियां के संवत् 1013 के अभिलेख[55], संवत् 1028 की नाथ प्रशास्ति, एकलिंगजी[56] चित्तौड़ का चालुक्य कुमारपाल का अभिलेख (सन् 1150 ई.)[57] में विस्तार पूर्वक सम्बन्धित नगरों का वर्णन उपलब्ध होता है। इससे युग विशेष की नगर निर्माण योजना एवं नगरों के वैभव को समझा जा सकता है। चीरवे ग्राम (उदयपुर जिला) में उपलब्ध संवत 1330 के अभिलेख[58] से हमें चीरवा ग्राम की स्थिति तथा बसी हुई दशा विषयक सूचनाएं मिलती हैं। उस समय पर्वतीय क्षेत्रों में ग्राम किस प्रकार बसते थे तथा वे किन प्रकार घाटियों तथा वृक्षों से घिरे रहते थे, उनमें तालाबों व खेतों की क्या स्थिति रहती थी और उनमें मन्दिर किस प्रकार गांव के जीवन के अग होते थे आदि विषयों का इस अभिलेख द्वारा अच्छा बोध होता है।[59]

रसिया का छत्री का अभिलेख[60] से देलवाड़ा एवं नागदा नगरों का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इसमें नगर के राज प्रसादों, घरों, वन, वृक्षों, झीलों आदि का सजीव चित्रण हुआ है। इस अभिलेख से समाज में दास प्रथा एवं अस्पृश्यता की स्थिति का भी बोध होता है। इस प्रकार राजस्थान के अभिलेख सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर भी पर्याप्त प्रकाश डालते है। अतः सामाजिक इतिहास के निर्माण की दृष्टि से इन अभिलेखों का विशेष महत्व है।

आर्थिक जीवन

राजस्थान के अभिलेखों में हमें आर्थिक जीवन से सम्बन्धित सामग्री भी प्रभूत मात्रा में उपलब्ध होती है। स्थानीय अभिलेखों से व्यापार, कृषि, मुद्राप्रणाली, नाप व तोल की इकाइयां, व्यापारिक मार्ग व व्यापारिक केन्द्र कर प्रणाली आदि विषयों से सम्बन्धित सामग्री प्राप्त होती है। राजस्थान में लोगों को अपने जीवन-यापन के साधनों को प्राप्त करने में काफी कठिनाई का सामना करते रहना पड़ा है। स्थानीय लोगों का भी मुख्य धन्धा कृषि करना ही रहा है। यद्यपि कृषकों के जीवन से सम्बन्धित सूचनाएं तो हमें प्राप्त नहीं होती लेकिन कृषि से सम्बधित कतिपय सूचनाएं हमें अभिलेखों से अवश्य प्राप्त होती हैं।

वर्षा के अभाव के कारण यहां सिचाई के साधनों की आवश्यकता बनी रहती

थी। सिंचाई के साधन के रूप में कुओं का निर्माण करवाया जाता रहा तथा उन पर रहट लगाकर खेतों को पानी पिलाया जाता था। अभिलेखों में इस प्रकार कृत्रिम साधनों से सिंचित भूमि के लिये पीवल भूमि शब्द का प्रयोग मिलता है।[61] इन पीवल क्षेत्रों की सिंचाई के लिये रहट का प्रयोग होता था।[62]

खेतों का नामकरण करने की प्रथा का संकेत भी अभिलेखों में मिलता है। प्रतापगढ़ से प्राप्त संवत 999 के एक अभिलेख में बबूल के निकट स्थिति खेत को बब्बूलिका कहा गया है।[63] यही बात प्रतापगढ़ के संवत 1003 के अभिलेख में भी है।[64] इस अभिलेख में एक चरस से सिंचित होने वाले खेत को कोशवाह कहा गया है। पर नारायण अभिलेख (संवत 1644) में डोली (दानस्वरूप दी गयी भूमि) के लिये दोनकरी शब्द का प्रयोग किया जाता है।[65] इस लेख में कुए के लिये ढीवड्ढ शब्द का प्रयोग मिलता है। (षीमावली ग्रामे वीतलरा वीरपालेन ढीवडउ ? दत्तं)।

इस समय व्यापार भी पर्याप्त मात्रा में होता था। शासक भी व्यापार की व्यवस्था एवं उन्नति के लिए विशेष रूप से प्रयत्नशील रहा करते थे। उदाहरण के लिये प्रतिहार शासक कक्कुक के प्रयत्नों को लिया जा सकता है। उसके समय तक रोहिसकूप (घटियाला) आभीरों के उपद्रवों के कारण प्रायः उजड़ने लग गया था। लेकिन कक्कुक ने उन उपद्रवों को शान्त कर वहां बाजार का निर्माण करवाया। शान्ति की स्थापना हो जाने से वहां चारों ओर से व्यापारियों का आगमन होने लगा। इस प्रकार रोहिन्सकूप एक अच्छा व्यापार केन्द्र बन गया। कक्कुक की समस्त उपलब्धियों का विवरण हमें उसके घटियाला अभिलेख से प्राप्त होता है।[66]

इसी प्रकार सारणेश्वर (सांडनाथ) प्रशस्ति (संवत् 1010)[67] से ज्ञात होता है कि आहाड भी व्यापार का एक बहुत बड़ा केन्द्र बन गया था। यहाँ कर्नाटक, मध्यप्रदेश, लाट (गुजरात) तथा टक्क (पंजाब का एक भाग) तक के व्यापारी आकर रहने लगे थे। पटनारायण अभिलेख[68] से ज्ञात होता है कि चन्द्रावती उस समय तक (संवत् 1344) व्यापार का एक बहुत बड़ा केन्द्र बन गया था। जूना (जिला बाड़मेर) के आदिनाथ मन्दिर के अभिलेख[69] में उसे व्यापार के बहुत बड़े केन्द्र के रूप में वर्णित किया गया है। इस प्रकार अभिलेखों से हमें राजस्थान के विभिन्न व्यापार केन्द्रों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध सूत्रों से व्यापार मार्ग का अनुमान भी सहज ही लगाया जा सकता है। बाहर से आए हुए व्यापारियों के उल्लेख से राजस्थान के अन्य प्रदेशों के साथ स्थापित व्यापारिक सम्बन्धों का अनुमान भी किया जा सकता है।

राजस्थान के अभिलेखों से यह तो स्पष्ट है ही कि ओसवाल जाति व अन्य जातियों के लोग व्यापार कार्य में लगे हुए थे। नाडोल के सोमेश्वर मन्दिर की

प्रशस्ति[70] में भाट, भट्टापुत्र तथा बनजारों का उल्लेख व्यापारियों के रूप में हुआ है। इससे यह प्रतीत होता है कि भाट उस समय सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जा कर बेचने का काम करते थे तथा वे घोड़ों का व्यापार भी करते थे। पाणाहेड़ा (बांसवाड़ा) के एक अभिलेख (संवत् 1116) में हमें प्रसंगवश व्यापार की प्रमुख वस्तुओं का उल्लेख मिलता है।[71] इस लेख में गुड़, मजिष्ट, कपास, सूत, नारियल, सुपारी, बरतन, तेल, जव आदि का उल्लेख प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं के रूप में हुआ है। लेख से यह भी ज्ञात होता है कि गुड़, कपास, सूत, जव, मजिष्ट, नारियल आदि की गणना 'भरक' से होती थी तथा सुपारी का माप सहस्र की गणना से होता था।

अभिलेखों से हमें 'कर' विषयक जानकारी भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है। सारणेश्वर (सांडनाथ) प्रशस्ति में हमें मन्दिर के निमित्त व्यापारियों से वसूल किए जाने वाले करों की लम्बी सूची प्राप्त होती है। उस सूची के अनुसार उधर से गुजरने वाले हाथी पर एक द्रम्भ, घोड़े पर 2 रूपक, सींग वाले जानवरों पर द्रम्भ का चालीसवां भाग, लाटे पर एक तुला, हट्ट मे एक आढक अन्न, शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन हलवाई की प्रति दुकान से एक घड़िया दूध, जुआरी से एक पेटक, प्रत्येक घाणी से एक पल तेल, प्रति रधनी एक रूपक, मालियों से प्रतिदिन एक माला ली जाती थी।[72]

हस्तिकुण्डी अभिलेख[73] (संवत् 1053) से भी हमें करों की सूची प्राप्त होती है। उस लेख के अनुसार 20 बोझों पर गाड़ी के तथा ऊँट के भार पर तथा ऊँट की बिक्री पर एक रुपया लिया जाता था। जुआरियों, पान विक्रेताओं तथा तेल विक्रेताओं से एक कर्ष लिया जाता था। एक बोझ पर एक विशोपक लिया जाता था, लेकिन सूती कपड़े, तांबा, केसर के भार पर 10 पल लिए जाते थे। इसी प्रकार गेहूं, जौ, नमक आदि जिन्सों पर भी कर लगता था तथा कुम्हारों के व्यवसाय पर भी कर लगता था।

बाली के बोलामाता मन्दिर के अभिलेख (संवत् 1200) से ज्ञात होता है कि घोड़े के विक्रय पर 1 द्रम्म, गलपल्य से 2 द्रम्भ प्रति अरहट से 1 द्रम्म कर के रूप में लिया जाता था।[74] इसी प्रकार नाडलाई लेख के अनुसार बनजारों पर प्रति 20 पाइल भार वाले वृषभ पर 2 रुपया तथा धर्म के निमित्त गाडे के भार पर 1 रुपया कर निर्धारित किया गया। सुण्डा पर्वत अभिलेख से ज्ञात होता हैं कि चौहानवंशीय शासक चाचिगदेव ने भीनमाल से वसूल किये जाने वाले कई कर बन्द कर दिये थे।[75]

अभिलेखों से यह भी ज्ञात होता है कि करों की दृष्टि से राज्य को अलग अलग भागों में बांट दिया जाता था। चित्तौड़ से प्राप्त संवत् 1335 (सन् 1278 ई.) के अभिलेख में इन भागों को मण्डपिका कहा गया है।[76] प्रस्तुत अभिलेख

में इन मण्डपिकाओं से प्राप्त दान का विवरण दिया गया है। विवरण के अनुसार चित्तौड़ की मण्डपिका से 24 उधरा द्रम्म, 4 कर्ष घी तथा 6 कर्ष तेल, आधार की मण्डपिका से 36 द्रम्म, खोहर की मण्डपिका से 32 द्रम्म तथा सज्जनपुर की मण्डपिका से 34 द्रम्म प्राप्त करने की व्यवस्था की गयी थी। इससे यह भी अनुमान लगता है कि करों से प्राप्त होने वाली आय का एक भाग धर्मार्थ कार्यों में लगाया जाता था।

अभिलेखों में हमें राजस्थान में प्रचलित मुद्राओं एवं नाप-तोल की इकाइयों से सम्बन्धित सूचना भी प्राप्त होती है। मुद्राओं में से द्रम्म का उल्लेख तो प्रचुरता से हुआ है। द्रम्म के साथ साथ कई बार वीसलप्रिय[77] आदि विशेषण भी उपलब्ध होते हैं। वस्तुतः शासक विशेष द्वारा प्रचलित होने के कारण इनका इस प्रकार नामकरण हुआ है। अतः वीसलप्रिय द्रम्म से यही अभिप्राय लिया जा सकता है कि किसी वीसल (देव) नामक शासक द्वारा इसका प्रचलन हुआ। आगे चलकर हमें फिर इस प्रकार की परम्परा दिखाई देती है। उदाहरण के लिये जोधपुर में महाराजा विजयसिंह द्वारा प्रचलित रुपया विजैशाही रुपया जैसलमेर में अखैसिंह द्वारा प्रचलित रुपया अखैशाही रुपया कहलाता था। द्रम के साथ साथ द्रमशतार्द्ध, द्रम व द्रमार्ध के नाम से द्रम की अन्य इकाइयों का उल्लेख भी मिलता है।[78]

द्रम नामक मुद्रा के अतिरिक्त विंशोपक नामक मुद्रा का उल्लेख भी मिलता है[79] तथा विंशोपक के साथ भीमप्रिय[80] विशेषण भी मिलता है जिससे किसी भीम नामक शासक द्वारा इस मुद्रा के जारी किये जाने का संकेत मिलता है। इसी प्रकार रूपक[81], नाणा या नाणक[82], फदिया[83] आदि मुद्राओं का उल्लेख भी मिलता है।

अभिलेखों में ऋण पर मुद्रा देने का संकेत भी मिलता है तथा ऋण पर ब्याज का लेन-देन भी होता था। जालोर के महावीर मन्दिर के अभिलेख से ज्ञात होता है कि महावीर मन्दिर में 100 द्रम जमा करवाये गये जिसके ब्याज से पूजा कार्यादि की व्यवस्था की जाय।[84] इसी प्रकार जालोर के महावीर मन्दिर के दूसरे लेख से ज्ञात होता है[85] कि पचास द्रम मन्दिर में दिये गये जिनसे आधा द्रम प्रति माह ब्याज प्राप्त होगा और उसका उपयोग पूजा आदि कार्य में किया जायेगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि ब्याज की दर 1% प्रति माह अथवा 12% वार्षिक थी। इसी प्रकार रत्नपुर के जैन मन्दिर अभिलेख (माघ शुक्ला 10 संवत् 1343) में भी मन्दिर में दानस्वरुप जमा 30 द्रमों एवं उनके ब्याज से प्राप्त राशि का उपयोग कल्याणिक हेतु करने का उल्लेख हुआ है।[86]

अभिलेखों में माप-तोल की इकाइयों के रूप में माणी-पल व पलिका[87], पाइली[88], हारक[89], घाणक व कलस[90], पाइला-पल्ल व पल्लिका[91], द्रोण

व माणक[92] आदि नाम उपलब्ध होते हैं। इनका उपयोग द्रव पदार्थ घी-तेल मापने तथा अनाज मापने के लिये किया जाता था।

धार्मिक जीवन

अभिलेखों से धार्मिक जीवन से सम्बन्धित सूचनाएं पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती हैं। लोगों की धार्मिक भावनाओं की पर्याप्त अभिव्यक्ति अभिलेखों में हुई है। अभिलेखों में हमें विभिन्न धर्मों की स्थिति, धार्मिक क्रियाओं, धर्म स्थानों के निर्माण, धार्मिक दान कार्य आदि विषयों से सम्बन्धित सूचनाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती हैं।

स्थानीय अभिलेखों से राजस्थान में जिन धर्मों के अस्तित्व का हमें बोध होता है, उनमें बौद्ध धर्म का नाम नहीं है। यद्यपि नगरी अभिलेख में आये हुए शब्दों "स (र्व) भूतानां दयार्थे" और ता (कारिता) के आधार पर यह अनुमान अवश्य लगाया जाता है कि यह लेख बौद्ध धर्म से अथवा जैन धर्म से सम्बन्धित हो सकता है।[93] राजस्थान में बौद्ध धर्म के अस्तित्व की सूचना अन्य साधनों से अवश्य प्राप्त होती है, लेकिन अभिलेखीय साक्ष्य तो इस विषय में पूर्णतः मौन है। अभिलेखों से जैन धर्म के विस्तार एवं उन्नति के सम्बन्ध में पर्याप्त सूचनाएं मिलती हैं। राजस्थान में अत्याधिक मात्रा में जैन मन्दिर प्राप्त हुए हैं तथा अधिकांश मन्दिर अभिलेख युक्त हैं। इससे स्पष्ट है कि राजस्थान में जैन धर्म को पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त हुई तथा स्थानीय शासकों की भी इस धर्म के प्रति सद्भावना रही थी।

यद्यपि किसी शासक के जैन मतावलम्बी होने का प्रत्यक्ष उल्लेख किसी अभिलेख में नहीं हुआ है, लेकिन किसी जैन मत विरोधी शासक का उल्लेख भी प्राप्त नहीं होता है। वस्तुतः स्थानीय शासन में जैन मतावलम्बियों को प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुए। अतः उनके द्वारा जैन धर्म को पर्याप्त बढ़ावा दिया गया। इन प्रतिष्ठित पदाधिकारियों एवं व्यापारियों के प्रभाव से जैन धर्म को राजकीय समर्थन पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हुआ। इसका स्पष्ट उल्लेख स्थानीय जैन अभिलेखों में प्राप्त होता है।

राजस्थान में प्राप्त होने वाले जैन अभिलेखों में प्रायः मूर्तियों की प्रतिष्ठा-मन्दिर के निर्माण अथवा जीर्णोद्धार का उल्लेख मिलता है। इनमें मन्दिर के निमित्त दिये गये स्थायी दान तथा नियमित अनुदान का उल्लेख भी मिलता है। इस नियमित अनुदान की व्यवस्था स्थानीय शासकों द्वारा की जाती थी। ये शासक मन्दिर की नियमित आय के निमित्त भूमि कर अथवा व्यापारिक चुंगी निर्धारित कर दिया करते थे, जिसका उल्लेख पूर्व पृष्ठों में किया जा चुका है। जैन अभिलेखों में राजस्थान में प्रचलित गच्छ भेदों का उल्लेख भी उपलब्ध होता है। प्रमुख एवं प्रतिष्ठित जैन आचार्यों का नामोल्लेख एवं उनकी शिष्य परम्परा का उल्लेख भी

अभिलेखों में उपलब्ध होता है। इस प्रकार जैन धर्म के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचनाएं जैन अभिलेखों में प्राप्त हो जाती हैं। जैन अभिलेखों का प्रकाशन मुनि जिन विजय द्वारा प्राचीन जैन लेख माला में, बाबू पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जैन लेख संग्रह, श्री अगरचन्द्र नाहटा द्वारा 'बीकानेर के जैन शिला लेख' आदि में प्रकाशित हुए हैं। इस प्रकार जैन अभिलेख पर्याप्त मात्रा में प्रकाश में लाये जा चुके हैं तथा निरंतर लाये जा रहे हैं।

राजस्थान में हिन्दू धर्म अत्यधिक प्रबल रहा है। स्थानीय अभिलेखों में आरम्भ से ही हिन्दू धर्म के अस्तित्व का उल्लेख मिलने लगता है। घोसुण्डी शिलालेख में, जो राजस्थान में प्राप्त प्राचीनतम अभिलेखों में से एक है, हिन्दू धर्म का उल्लेख है। इस अभिलेख में अश्वमेध यज्ञ व वासुदेव (भगवान विष्णु) तथा नारायण वाटक के निर्माण का उल्लेख हुआ है।[94] इनके उपरान्त प्रत्येक युग में शैव एवं वैष्णव दोनों मतों के अभिलेख प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

वैष्णव अभिलेखों में वासुदेव[95], कैटभरिपु[96], मुरारि[97], आदिवराह[98]; वराह[99] आदि नाम प्राप्त होते हैं। इन्हीं नामों से अभिलेखों के आरम्भ में अभिवादन किया गया है। इसी प्रकार शैव अभिलेखों में भगवान शिव को अभिवादन किया गया है। उदाहरणार्थ संवत् 742 वि. के मण्डोर अभिलेख में अभिलेख का आरम्भ "ॐ नमः शिवाय" से किया गया है।[100] इसी प्रकार शंकर घट्टा अभिलेख के आरम्भ में भी शिव की वन्दना की गयी है।[101] कल्याणपुर लेख में "ॐ स्वस्ति प्रणम्य शंकर कर चरण मनः शिरोभिः" शब्दों से शिव की स्तुति की गई है।[102] शिव के लकुलीश स्वरूप का प्रचार भी राजस्थान में रहा है। मेवाड़ प्रदेश में लकुलीश मत का पर्याप्त प्रचार रहा तथा मारवाड़ में भी इस मत के अस्तित्व विषयक प्रमाण मिलते हैं। नाथ प्रशस्ति—एकलिंगजी में प्रशस्ति का आरम्भ "ॐ नमो लकुलीशाय" से हुआ है।[103] इसी प्रकार बुचलकला अभिलेख में परमेश्वर (शिव) के मन्दिर के निर्माण का उल्लेख हुआ है।[104] इस प्रकार के हजारों उल्लेख हमें विष्णु एवं शिव के सम्बन्ध में प्राप्त होते हैं जो इस तथ्य के सूचक हैं कि विष्णु एवं शिव की उपासना यहां प्रचुर मात्रा में होती रही है।

शिव के साथ शक्ति की उपासना भी यहां होती रही है। इस विषय में भी अभिलेखीय साक्ष्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। संवत् 646 ई. (संवत् 703 वि.) के सांमोली अभिलेख[105] में अरण्यवासिनी देवी के मन्दिर के निर्माण का उल्लेख हुआ है। संवत् 1056 के किणसूरिया अभिलेख में कल्यायनी, काली, भगवती आदि देवी स्वरूपों की स्तुति की गयी है।[106] इसी प्रकार जगत में स्थित देवी के मन्दिर के अभिलेखों में भी देवी की स्तुती की गयी है।[107] ओसियां के

सच्चियाय माता के मन्दिर में उपलब्ध अभिलेखों में देवी की स्तुति प्राप्त होती है।[108] इस प्रकार शैव मत के कारण शक्ति की उपासना की प्रचुरता का उल्लेख हमें स्थानीय अभिलेखों में मिल जाता है।

अभिलेखों से हमें सूर्य पूजा का उल्लेख भी मिलता है। सूर्य पूजा के विषय में एक लेख फलोदी के कल्याणराय मन्दिर में उपलब्ध है।[109] इसी प्रकार प्रतापगढ़ से प्राप्त भर्तृभट्ट द्वितीय के समय के एक संवत् 999 के अभिलेख में सूर्य मन्दिर के निमित्त दिये गये दान का उल्लेख हुआ है।[110] कई लेखों में अनेक देवताओं का उल्लेख एक साथ भी मिलता है। उदाहरण के लिये प्रतापगढ़ से प्राप्त संवत् 1003 के अभिलेख में[111] सूर्य, दुर्गा, शिव आदि अनेक देवताओं की स्तुति दी गयी है। इसी प्रकार राव जैता के रजलानी अभिलेख में[112] भी गणपति, सरस्वती आदि कई देवी देवताओं की स्तुति गाई गई है।

अभिलेखों में प्रसंगवश तीर्थों का भी उल्लेख हुआ है। उदाहरण के लिये विजोलिया लेख को लिया जा सकता है।[113] यद्यपि यह जैन अभिलेख है, लेकिन इसमें उत्तमाद्रि (जिसे वर्तमान में ऊपरमाल कहा जाता है) क्षेत्र में स्थित तीर्थों—घटेश्वर, कुमारेश्वर, सौभाग्येश्वर, दक्षिणेश्वर, मार्कण्डेश्वर, सत्योवरेश्वर, कुटिलेश, कर्करेश, कपिलेश्वर, महाकाल, सिद्धेश्वर, जातेश्वर, कोटीश्वर आदि का नामोल्लेख किया गया है। नाडोल से प्राप्त संवत् 1508 के एक जैन अभिलेख में राजस्थान के जैन तीर्थ स्थानों का नाम दिया है। इनमें चांपानेर, चित्रकूट, जाउर नगर, कायद्राह, नागहृद, ओसियाँ, नागौर, कुम्भपुर, देलवाड़ा, श्री कुण्ड आदि प्रमुख हैं।[114] अभिलेखों में हमें योगियों का उल्लेख भी मिलता है। उदाहरणार्थ नाथ प्रशस्ति—एकलिंगजी के श्लोकांक 13 से 17 तक हमें ऐसे योगियों का वर्णन मिलता है, जो भस्म लगाते हैं, वल्कल धारण करते हैं तथा जटा-जूट रखते हैं। इसी में हमें किसी वेदाङ्ग मुनि का उल्लेख मिलता है, जिसने स्याद्वाद (जैन) तथा सौगत (बौद्ध) विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था।[115] इससे स्पष्ट है कि धार्मिक शास्त्रार्थ भी होते थे।

अभिलेखों से हमें सूचना प्राप्त होती है कि राजस्थान में वैदिक यज्ञों का भी पर्याप्त प्रचार था। घोसूण्डी अभिलेख में अश्वमेध यज्ञ[116], नांदसा यूप स्तम्भ अभिलेख पष्ठि रात्रि यज्ञ[117], बड़वा स्तम्भ लेख में त्रिरात्र यज्ञ तथा अन्य स्तम्भ से अप्तोयाम यज्ञ[118] तथा विजयगढ़ यूप स्तम्भ लेख में पुण्डरीक यज्ञ[119] का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार अग्नि प्रवेश कर प्राण त्यागने का उल्लेख भी धार्मिक क्रिया के रूप में मिलता है।[120]

अभिलेखों से धार्मिक दान परम्परा का ज्ञान भी होता है। बर्नाला अभिलेख (संवत 335) में[121] गर्ग त्रिरात्र यज्ञ के अवसर पर सम्वत्स (बछड़े सहित)

90 गायों के दान में दिये जाने का उल्लेख है। राजाओं द्वारा ब्राह्मणों एवं मन्दिरों के निमित्त इस प्रकार दिये जाने वाले सैकड़ों दानपत्र उपलब्ध होते हैं। इन दान पत्रों से स्पष्ट होता है कि दान विशेष तिथियों अथवा पर्वों पर दिये जाते थे।[122] मन्दिरों में अक्षय नीवी के रूप में दान देने का उल्लेख भी मिलता है, जिसके व्याज से मन्दिर को नियमित आय होती रहे। राजाओं द्वारा मन्दिरों में दान के लिये करों की राशि निर्धारित कर दी जाती थी। पुराणों में वर्णित 16 महादानों (तुला पुरुष, हिरण्यगर्भ, ब्रह्माण्ड, कल्पवृक्ष, गो सहस्र, कामधेनु, हिरण्याश्व, हिरण्याश्वरथ, हेमहस्तिरथ, पंचलांगस, धरादान, विश्वचक्र, कल्पलता, सप्तसागर, रत्नधेनु तथा महाभूतघर) में से भी कुछ दानों का उल्लेख अभिलेखों में मिलता है।[123] दान पत्रों के अन्त में दान का उल्लंघन करने पर होने वाले पाप का वर्णन करने वाले श्लोक भी प्राप्त होते हैं। गोढवाड़ के चौहान शासकों के दानपत्रों में प्राय: इस प्रसंग में निम्न श्लोक मिलते हैं:—

स्वदत्ता परदत्तां च यो हरेत वसुन्धरां।
स विष्ठायां कृमिर्भूत्वा पितृभिस्सह पच्यते।
बहुभि वसुधादत्ता राजभिस्सगरादिभि:।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं।
षष्टि वर्ष-सहस्राणि स्वर्गे मोदति भूमिद:।
आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेदति।

इन श्लोकों में मौलिकता नहीं है वरन् ये प्राचीन धर्मशास्त्रों से उद्‌धृत किये गये हैं। श्लोकों से स्पष्ट है कि सभी प्रकार के दान धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर आत्म-कल्याणार्थ दिये जाते थे। दान के उद्देश्य को आचार्य वृहस्पति ने अपनी स्मृति में इस प्रकार व्यक्त किया है—

यत्किंचित कुरुते पापं पुरुषो वृत्तिकर्षित:।
अपिगोचर्म मात्रेण भूमि दानेन शुध्यति।
स नर: सर्वदा भूप: यो ददाति वसुन्धराम्।
भूमि दानस्य पुण्येन फलं स्वर्ग परंदर।

अभिलेखों के अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि राजस्थान के राजाओं में धार्मिक कट्टरता नहीं थी बल्कि धार्मिक सहिष्णुता की भावना थी। मेवाड़ के महाराणा आरम्भ से ही शैव मतावलम्बी थे, लेकिन चित्तौड़ दुर्ग में उपलब्ध वैष्णव एवं जैन मन्दिर अभिलेखों एवं जैन कीर्ति स्तम्भ के अभिलेखों से स्पष्ट हो जाता है कि उन शासकों ने वैष्णव एवं जैन धर्मों को भी संरक्षण प्रदान किया था। गोडवाड़ के चौहान अभिलेखों से भी इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है। इन शासकों ने जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया था। ओसियां एवं घटियाला के अभिलेखों से

स्पष्ट है कि प्रतिहार शासकों ने भी जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया था। यह सहिष्णुता की भावना शासकों तक ही सीमित नहीं थी वरन् जनता में भी व्याप्त थी। मध्य एवं उत्तर मध्य कालीन शासकों के समय के अरबी-फारसी अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इस्लाम धर्म के प्रति भी स्थानीय शासकों में सहिष्णुता की भावना विद्यमान थी। नागोर के शेख सुलेमान के अभिलेख (12 रवि उल अव्वल हि. स. 952) से ज्ञात होता है कि शेख सुलेमान ने एक पौसाल (पाठशाला) अली युसुफ दौलत खान हुसैन अकबर सैय्यद कबीर से लेकर सन्त कीरतचन्द को सौंप दी। अन्त में यह भी कहा है कि अब जो कीरतचन्द से छीनेगा वह कष्टों का भागी होगा। इससे स्पष्ट है कि अभिलेख स्थानीय जनता की धार्मिक सहिष्णुता की भावना को भी प्रकट करते हैं। अरबी-फारसी अभिलेखों से राजस्थान में इस्लाम संस्कृति के उदय एवं विकास विषयक विवरण उपलब्ध होता है। इस्लाम धार्मिक केन्द्रों का भी पता चलता है।

इस प्रकार राजस्थान में उपलब्ध होने वाले अभिलेख स्थानीय इतिहास से सम्बन्धित पर्याप्त सामग्री प्रदान करते हैं। अतः ऐतिहासिक अनुसन्धान कार्य में इनकी उपयोगिता एवं महत्ता निर्विवाद है। लेकिन अभिलेखों का प्रकाशन समय समय पर अलग-अलग पत्रिकाओं में हुआ, जिसकी सूचना प्राप्त करने में अनुसन्धाताओं को अनावश्यक श्रम करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त कई अभिलेख ऐसे भी हैं, जिनका अभी तक प्रकाशन भी नहीं हुआ है। अतः इन समस्त प्रकाशित एवं अप्रकाशित अभिलेखों की सूचना एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रस्तुत विवरणिका की रचना की गई है, ताकि अनुसन्धाताओं को आधारभूत सामग्री को ढूंढने में अधिक कठिनाई का अनुभव न हो। राजस्थान के सभी अभिलेखों की विवरणिका तीन खण्डों मे तैयार की गयी है, जिसमें से प्रथम खण्ड प्रस्तुत है तथा शेष दो खण्ड भी शीघ्र ही पाठकों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया जायेगा। प्रथम खण्ड दो भागों में है। प्रथम भाग में नागरी अभिलेख दिये गये हैं तथा द्वितीय भाग में अरबी फारसी अभिलेखों का विवरण है।

अद्यावधि उपलब्ध अभिलेखों में तिथि विक्रम संवत् में ही उपलब्ध है, कहीं कहीं विक्रम संवत् के साथ साथ शक संवत् भी उपलब्ध होता है। इनके अतिरिक्त एक अभिलेख गुप्त संवत् तथा एक अभिलेख सिंह संवत् का भी मिला है। विक्रम सम्वत् की प्रधानता के कारण विक्रम सम्वत् की दृष्टि से ही अभिलेखों को काल क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है। गुप्त सम्वत् तथा सिंह सम्वत् के अभिलेख नागरी अभिलेखों के अन्त में दिये गये हैं। प्रत्येक अभिलेख का यथा-सम्भव शीर्षक दे दिया गया है तथा शीर्षक के उपरान्त अभिलेख से सम्बन्धित तथ्य अलग-अलग कॉलमों के अन्तर्गत इस प्रकार दिये गये हैं—

क. कॉलम में अभिलेख का प्राप्ति स्थान दिया गया है।

ख. कॉलम में अभिलेख में उपलब्ध तिथि दी गई है।

ग. कॉलम में अभिलेख की विषय-वस्तु दी गई है।

घ. कॉलम में अभिलेख के प्रकाशन से सम्बन्धित सूचना है।

ङ. कॉलम में अभिलेख में उल्लिखित सृजक, लेखक तथा तक्षक के नाम दिये गये हैं।

च. कॉलम में अभिलेख की भाषा दी गई है।

इस प्रकार प्रत्येक अभिलेख से सम्बन्धित यथासम्भव अधिक से अधिक सूचनाएं देने का प्रयास किया गया है। आशा है ये सूचनाएं अनुसंधाताओं के लिए सहायक सिद्ध होंगी। अन्त में दो परिशिष्ट दिये गये हैं। प्रथम परिशिष्ट में अभिलेखों में उपलब्ध विभिन्न राजवंशों की वंशावलियां दे दी गई हैं। दूसरे परिशिष्ट में व्यक्तियों एवं ग्रामों की नामानुक्रमणियें प्रस्तुत की गई हैं।

मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत विवरणिका अनुसंधाताओं को उनके कार्य में कुछ सहायता कर सकेगी। प्रस्तुत पुस्तक के प्रणायन में डा. बी. एस. माथुर से निरन्तर प्रेरणा मिलती रही इसके लिए मैं इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। डॉ. गोपीनाथ शर्मा का मैं आभारी हूँ, जिन्होंने पाण्डुलिपि का अवलोकन कर अपनी सम्मति प्रदान की। अपने गुरुदेव डॉ रामप्रसाद व्यास के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हुं जिन्होंने प्राक्कथन लिखने का कष्ट किया। श्री सुखवीरसिंह गहलोत एम.ए., एलएल. बी. तथा श्री दुर्गालाल माथुर से मिलने वाले परामर्श एवं सहयोग के लिए उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। मैसर्स राजस्थान पुस्तक मन्दिर को भी धन्यवाद देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिनकी तत्परता से पुस्तक पाठकों तक पहुंच सकी है।

620, रसाला रोड़,
जोधपुर

'मयंक'

पाद-टिप्पणियां

1. द्रष्टव्य : इण्डियन आर्कियोलाजी 1960–61 पृष्ठ 31-32, 1962-63 पृष्ठ 20-31
2. एक्सकेवेशन ऐट आहाड़-ले० डॉ० हसमुखलाल धीरजलाल सांखलिया
3. बागोर में उत्खनन का तृतीय वर्ष : डॉ० मिश्रा
4. रंगमहल-दी स्वीडिश आर्कियोलॉजिकल एक्सपीडिशन टू इण्डिया 1952-54
5. राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत-डॉ० शर्मा, पृष्ठ 12.
6. रेड का उत्खनन-के. एन. पुरी
7. राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत-डॉ० शर्मा, पृष्ठ 16.
8. डॉ० हं. धी. सांखलिया : एक्सकेवेशन एट आहाड़ अध्याय 4
9. डॉ० वासुदेव उपाध्याय : भारतीय सिक्के, पृष्ठ 80-87, एक्सकेवेशन एट-रेड, अध्याय 7 पृ. 46
10. इन मुद्राओं पर "मालवानां जय:" तथा मालव सेनापतियों माप्य, मजुप आदि नाम मिलते हैं।
11. रेड उत्खनन से 6 सेनापति मुद्राएं प्राप्त हुई जिन पर 'वच्छघोष' अंकित है।
12. इन मुद्राओं पर सूर्य मित्र, ब्रह्ममित्र, ध्रुवमित्र आदि नाम अंकित है।
13. डॉ० वासुदेव उपाध्याय : भारतीय सिक्के पृष्ठ 87
14. वही. पृष्ठ 80-82.
15. एक्सकेवेशन एट वैराट पृष्ठ 3-4
16. वही पृष्ठ 21-22.
17. स्वीडिश आर्कियोलॉजिकल एक्सपिडीशन टू इण्डिया 1952-54 पृ. 171
18. आर्कियोलॉजी एण्ड हिस्टॉरिकल रिसर्च-साम्भर, पृ. 48.
19. डॉ० मयंक : वैब कृत राजपूताने के सिक्के पृष्ठ 7 व 173, जर्नल ऑफ द न्यूमिस्मेटिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया खण्ड 25 पृष्ठ 66, खण्ड 26 पृष्ठ 284-85; ओझा निबन्ध संग्रह भाग 1 पृष्ठ 91
20. डॉ० मयंक : वैब कृत राजपूताने के सिक्के, प्रस्तावना पृष्ठ 6 तथा 183
21. वही पृष्ठ 22 व 64.
22. वरदा, वर्ष 2 अंक 4 पृष्ठ 18, डॉ० गोपीनाथ शर्मा : मेवाड़ एण्ड द मुगल एम्परर्स पृष्ठ 115-16.
23. वरदा, वर्ष 4 अंक 4 पृष्ठ 2 पर आचार्य परमेश्वर सोलंकी का लेख "उदयपुर संग्रहालय के कतिपय अप्रकाशित लेख"
24. एपीग्राफिया इण्डिका भाग 16 पृष्ठ 25–27, भाग 22 पृष्ठ 198-205;

इण्डियन एण्टीक्वेरी भाग 61 पृष्ठ 203; डॉ. वासुदेव उपाध्याय: "प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन पृ. 24"

25 डॉ. वासुदेव उपाध्याय: प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन, पृष्ठ 23

26 जर्नल ऑफ द रायल एशियाटिक सोसाइटी 1895 पृष्ठ 516

27 दुर्गालाल माथुर: रा. प्र. अ. खण्ड 1 पृ. 18 तथा ए.ई. खण्ड 11 पृष्ठ 308

28 लेख की पंक्ति 5

29 द्रष्टव्य अन्वेषण वर्ष 1 अंक 1 पृष्ठ 56 पर मेरा लेख 'राठोड़ों की रावल शाखा' तथा प्रॉसिडिंग्ज ऑफ राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस 'प्रथम अधिवेशन' पृष्ठ 211 पर मेरा लेख

30 ज.ए.सो.बं. (न्यू सिरीज) खण्ड 16 पृष्ठ 279

31 ए.इं. खण्ड 9 पृष्ठ 74

32 जैन लेख संग्रह भाग 1 पृष्ठ 251

33 ज.रा.ए.सो. सन् 1894 पृष्ठ 4; प्रो.रि.आ.स.वे.स. 1906-7 पृष्ठ 30; ए. इं. खण्ड 18 पृष्ठ 95

34 ए.इं. खण्ड 12 पृष्ठ 23

35 मयंक: मा. अ. पृष्ठ 148–49

36 इं. आ. 1962-63 पृष्ठ 61

37 प्रॉसिडिंग्ज ऑफ राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस प्रथम अधिवेशन पृष्ठ 211

38 ए. इं. खण्ड 10 पृष्ठ 20

39 ज. रा. ए. सो. 1895 पृष्ठ 516, ए इं. खण्ड 9 पृष्ठ 279

40 दुर्गालाल माथुर : रा. प्र. अ. खण्ड 1 भाग 1 पृष्ठ 1, ए. इं. खण्ड 12 पृष्ठ 59

41 भा. इ. पृष्ठ 114; प्रचीन लेखमाला, भाग 2, पृष्ठ 28; आ. स. इं., एन. रि. 1907-8 पृष्ठ 214

42 पूर्णचन्द नाहर : जै. ले. सं. भाग 1 पृष्ठ 218; ए. इं. भाग 11 पृष्ठ 70

43 ए. इं. खण्ड 14 पृष्ठ 182-84

44 भा. इ. भाग 2 पृष्ठ 67-68; वीर विनोद भाग 1 पृष्ठ 380

45 ओझा : उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड 1 पृष्ठ 124-133

46 वीर विनोद भाग 2 पृष्ठ 1197-98; ओझा : वांसवाड़ा राज्य का इतिहास पृष्ठ 35

47 ओसियां जैन मन्दिर में उपलब्ध संवत् 1013 के अभिलेख में बताया गया है कि प्रतिहार वत्सराज के समय समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र–वर्णों में विभाजित था। द्रष्टव्य नाहर : जैन लेख संग्रह भाग 1 पृष्ठ 192

47 अ. ज. प्रॉ. ए. सो. वं. खण्ड 12 पृष्ठ 105 व अन्य
48 रामायण युद्ध काण्ड, सर्ग 22 श्लोक 32
49 ए. इं. खण्ड 9 पृष्ठ 280
50 ए. इं. खण्ड 11 पृष्ठ 53; पूर्णचन्द नाहर; जैन लेख संग्रह भाग 1 पृष्ठ 238
51 ए. इं. खण्ड 9 पृष्ठ 159, खण्ड 11 पृष्ठ 39; दुर्गालाल माथुर : रा. प्र. अ. खण्ड 1 भाग 1 पृष्ठ 33
52 दृष्टव्य नाथ प्रशस्ति, एकलिंगजी (971 ई.) भा. इ. भाग 2 पृष्ठ 69-72, ना. प्र. प. भाग 1 पृष्ठ 256
53 मयंक : जोधपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ 219
54 ए. इं. खण्ड 9 पृष्ठ, खण्ड 11 पृष्ठ 39, दुर्गालाल माथुर : रा.प्र. अ. खण्ड 1 भाग 1 पृष्ठ 33
55 पूर्णचन्द नाहर : जैन लेख संग्रह भाग 1 पृष्ठ 788
56 भा. इ., भाग 2 पृष्ठ 69-72, नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग 1 पृष्ठ 256-59, वी. वि. भाग 1 पृ. 381
57 ए. इं. खण्ड 2, इं. ए. खण्ड 2 पृ. 521, जै. ले. सं. भाग 3 पृ. 82-84
58 ए. इं. खण्ड 27 पृ. 285-92, विजन्ना ओरियेन्टल जर्नल, खण्ड 11, पृ. 155-62
59 डॉ. गोपीनाथ शर्मा : राजस्थान के इतिहास के स्रोत भाग 1 पृष्ठ 111
60 भा. अं. भाग 4 पृष्ठ 74-77
61 ए. इं. खण्ड 11 में चौहानों के अभिलेख देखिये
62 ग्रामेयकै अरहट्ट प्रति 8 टीकड़ा राजस्थान के इतिहास के स्रोत भाग 1 पृ. 118
63 ए. इ. खण्ड 14 पृष्ठ 187
64 ए. इं. खण्ड 14 पृष्ठ 182-84
65 छनारे ग्रामे दोणकरी क्षेत्र 1 उभयदत्त
66 ए. इं., खण्ड 9 पृष्ठ 277-79 तथा 280
67 भा. इ. भाग 2 पृष्ठ 67-68, वी. वि. भाग 1 पृष्ठ 380
68 राजस्थात के इतिहास के स्रोत भाग 1 पृष्ठ 117
69 पूर्णचन्द नाहर : जैन लेख सग्रह भाग 1 पृष्ठ 244 लेखाङ्क 918
70 ए. इं. खण्ड 9 पृष्ठ 159, खण्ड 11 पृष्ठ 39 तथा दुर्गालाल माथुर ; रा. प्र. अ. खण्ड 1 भाग 1 पृष्ठ 33
71 वीर विनोद भाग 2 पृष्ठ 1191-96
72 भा. इ. भाग 2 पृष्ठ 67-68; वी. वि. भाग 1 पृष्ठ 380

73 भा. इ. भाग 3 पृष्ठ 68-69, जै. ले. सं. भाग 1 पृष्ठ 233; ए. इं. खण्ड 10 पृष्ठ 17-20
74 ए. इं. खण्ड 11 पृष्ठ 33, दुर्गालाल माथुर : रा. प्र. अ. खण्ड 1 भाग पृष्ठ 41
75 ए. इं. खण्ड 9 पृष्ठ 70-74;
76 ओझा : उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग 1 पृष्ठ 175-76
77 नाहर : जै. ले. सं. भाग 2 पृष्ठ 163
78 नाहर : जै. ले. सं भाग 1 पृष्ठ 238 लेखांक 903
79 नाहर : जै. ले. सं. भाग 1 पृष्ठ 214, ए. इं. खण्ड 11 पृष्ठ 43; दुर्गालाल माथुर : रा. प्र. अ. खण्ड 1 भाग 1 पृष्ठ 38
80 नाहर : जै. ले. सं. भाग 1 पृष्ठ 244; ए. इ. खण्ड 11 पृष्ठ 59
81 वी. वि. भाग 2 पृष्ठ 1191-96
82 नाहर : जै. ले. सं. भाग 3 पृष्ठ 36
83 मांगीलाल व्यास : जोधपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ 293
84 नाहर : जै. ले. सं. भाग 1 238
85 नाहर : जै. ले. सं. भाग 1 पृष्ठ 238; जिन विजय : प्रा. जै. ले. सं. भाग 2 लेखांक 363
86 पूर्णचन्द नाहर : जै. ले. सं. भाग 2 पृष्ठ 163 लेखांक 1706
87 ए. इं. खण्ड 14 पृष्ठ 182-84
88 वी. वि. भाग 2 पृष्ठ 1191-96
89 पूर्णचन्द नाहर : जै. ले. सं. भाग 1 पृष्ठ 226
90 वही, भाग 1 पृष्ठ 213
91 वही, भाग 1 पृष्ठ 213
92 वही, भाग 1 पृष्ठ 238
93 राजस्थान के इतिहास के स्रोत पृष्ठ 43
94 ए. इं. खण्ड 14 पृष्ठ 25
95 द्रष्टव्य घोसूण्डी अभिलेख
96 द्रष्टव्य अपराजित का अभिलेख-ए. इं. खण्ड 4 पृष्ठ 31
97 ए. इं. खण्ड 12 पृष्ठ 13-17
98 शोधपत्रिका 1956 (सितम्बर-दिसम्बर) पृष्ठ 54-57
99 भा. इ. भाग 2 पृष्ठ 67-68; वी. वि. भाग 1 पृ. 380
100 एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट आर्कियोलॉजिकल डिपार्टमेण्ट, जोधपुर 1934, पृ. 5
101 राजस्थान भारती वर्ष 9 अंक 2 पृष्ठ 30-31
102 जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री खण्ड 35 भाग 1 पृष्ठ 73-74

103 भा. इं. भाग 2 पृष्ठ 69-72; वी. वि. भाग 1 पृष्ठ 381-83
104 ए. इं. खण्ड 9 पृष्ठ 198-200
105 इं. ए. भाग 29 पृष्ठ 189, ए. इं. खण्ड 20 पृष्ठ 97-99
106 इं. ए. खण्ड XLII पृष्ठ 267 ए. इं. खण्ड XII पृष्ठ 59
107 ओझा : बांसवाड़ा राज्य का इतिहास पृष्ठ 38; डूंगरपुर राज्य का इतिहास पृष्ठ 55; मरूभारती अप्रेल 1957 पृष्ठ 57
108 पूर्णचन्द नाहर : जै. ले. सं. भाग 1 पृष्ठ 198 लेखांक 804
109 ज. प्रॉ. ए. सो. वं. खण्ड 12 पृष्ठ 101
110 ए. इं. खण्ड 14 पृष्ठ 187
111 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ राजपूताना म्यूजियम अजमेर 1914; ए. इं., खण्ड 14 पृ. 182-84
112 मांगीलाल व्यास 'मयंक' : जो. रा. इं., पृष्ठ 292-93
113 ए. इं. खण्ड 26, पृष्ठ 90-100
114 राजस्थान के इतिहास के स्रोत, भाग 1, पृष्ठ 143
115 भा. इं. भाग 2 पृष्ठ 69-72; वी. वि. भाग 1 पृष्ठ 381-83
116 न गाजा मनेन पाराशरीपुत्रेण स ण सर्वतातेन अश्वमेध (ए. इं. भाग 14 पृष्ठ 25)
117 ए. इं. भाग 8 पृष्ठ 36
118 ए. इं भाग 23 पृष्ठ 46; भाग 26 पृष्ठ 118
119 डॉ. शर्मा: राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पृष्ठ 45
120 ए. इं. खण्ड 20 संख्या 9 पृष्ठ 97-99; इं. ए. भाग 29 पृष्ठ 189
121 कार्पस इन्स्क्रिप्सनम् इण्डिकेरम, भाग 3 पृष्ठ 252
122 डॉ. वासुदेव उपाध्याय : प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन, पृष्ठ 148-49
123 दृष्टव्य राजप्रशस्ति महाकाव्य

राव सीहा का लेख

103 भा. इं. भाग 2 पृष्ठ 69-72; वी. वि. भाग 1 पृष्ठ 381-83
104 ए. इं. खण्ड 9 पृष्ठ 198-200
105 इं. ए. भाग 29 पृष्ठ 189, ए. इं. खण्ड 20 पृष्ठ 97-99
106 इं. ए. खण्ड XLII पृष्ठ 267 ए. इं. खण्ड XII पृष्ठ 59
107 ओझा : बांसवाड़ा राज्य का इतिहास पृष्ठ 38; डूंगरपुर राज्य का इतिहास पृष्ठ 55; मरूभारती अप्रेल 1957 पृष्ठ 57
108 पूर्णचन्द नाहर : जै. ले. सं. भाग 1 पृष्ठ 198 लेखांक 804
109 ज. प्रॉ. ए. सो. वं. खण्ड 12 पृष्ठ 101
110 ए. इं. खण्ड 14 पृष्ठ 187
111 एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ राजपूताना म्यूजियम अजमेर 1914; ए. इं., खण्ड 14 पृ. 182-84
112 मांगीलाल व्यास 'मयंक' : जो. रा. इं., पृष्ठ 292-93
113 ए. इं. खण्ड 26, पृष्ठ 90-100
114 राजस्थान के इतिहास के स्रोत, भाग 1, पृष्ठ 143
115 भा. इं. भाग 2 पृष्ठ 69-72; वी. वि. भाग 1 पृष्ठ 381-83
116 न गाजा मनेन पाराशरीपुत्रेण स ण सर्वतातेन अश्वमेध (ए. इं. भाग 14 पृष्ठ 25)
117 ए. इं. भाग 8 पृष्ठ 36
118 ए. इं भाग 23 पृष्ठ 46; भाग 26 पृष्ठ 118
119 डॉ. शर्मा: राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पृष्ठ 45
120 ए. इं. खण्ड 20 संख्या 9 पृष्ठ 97-99; इं. ए. भाग 29 पृष्ठ 189
121 कार्पस इन्स्क्रिप्सनम् इण्डिकेरम, भाग 3 पृष्ठ 252
122 डॉ. वासुदेव उपाध्याय : प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन, पृष्ठ 148-49
123 दृष्टव्य राजप्रशस्ति महाकाव्य

राव सीहा का लेख

नक्शा
मारवाड़ राज्य
मीलों का स्केल
१ इंच = ८४ मील
Marwar State
सूचना
नदी
पहाड़
नमक
रैलवे
पा ल न पु र
सि रो ही
उ द य पु र

नागरी अभिलेख

संकेताक्षर तालिका

आ०स०इं०: एन०रि०—आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एन्युअल रिपोर्ट
आ०स०इं०रि०—आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इडिया रिपोर्ट्स
इं०आ—इंडियन आर्कियोलॉजी
इं०इं०—इंडियन इन्स्क्रप्सन्स
इं०ए०—इंडियन एण्टीक्वेरी
ए०इं० —एपीग्राफिया इडिका
ए०इ०अ०प०स०—एपीग्राफिया इंडिका अरेबिक एण्ड पर्सियन सप्लीमेण्ट
ए०इं०मु०—एपीग्राफिया इण्डो मुस्लिमिका
एन०एन्टी०राज०—एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान – कर्नल टॉड
ए०रि०इं०ए०—एनुअल रिपोर्ट ऑफ इण्डियन एपीग्राफी
ज०ए०सो०बं०—जर्नल ऑफ द एशियेटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल
ज०प्रा०ए०सो०ब०—जर्नल एण्ड प्रॉसिडिंग्ज ऑफ द एशियेटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल
ज०बि०रि०सो०—जर्नल ऑफ द बिहार रिसर्च सोसाइटी
ज०बो०ब्रा०रा०सो०—जर्नल ऑफ द बोम्बे ब्रांच ऑफ रायल एशियेटिक सोसाइटी
ज०रा०ए०सो०—जर्नल ऑफ द रॉयल एशियेटिक सोसाइटी
जै०ले०स० - जैन लेख संग्रह–पूर्णचन्द्र नाहर
जो०रा०इ०—जोधपुर राज्य का इतिहास–डॉ० मयंक
प्रो०ए०सो०बं०—प्रॉसिडिंग्ज ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल
प्रा०जै०ले०सं०—प्राचीन जैन लेख सग्रह–मुनि जिन विजय
प्रो०रि०आ०स०, वे०स०—प्रोग्रेसिव रिपोर्ट ऑफ आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, वेस्टर्न सर्कल
बु०डे०कॉ०रि०इं०—बुलेटिन ऑफ द डेक्कन कॉलेज रिसर्च इन्स्टीट्यूट–पूना
बो०गे०—बोम्बे गेजेटियर–जेम्सन
भा०इ०—भावनगर इन्स्क्रप्सन्स
भा०प्रा०सं०इं०—भावनगर प्राकृत एण्ड संस्कृत इन्स्क्रप्सन्स
रा०प्र०अ०— राजस्थान के प्रमुख अभिलेख-दुर्गालाल माथुर
वि०ओ०ज०—वियन्ना ओरियन्टल जर्नल
सुमेर०रि०—एनुअल रिपोर्ट ऑफ सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी

१. रानी जयावली का अभिलेख

क. बुचकला (जिला जोधपुर)

ख. चैत्र शुक्ला ५ वि० सं० ८७२.

ग. अभिलेख में कहा गया है, कि महाराजाधिराज परमेश्वर श्री वत्सराजदेव के पुत्र परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्री नागभट्टदेव के शासन काल में उनके एक विषय धङ्कङ्क ग्राम (वुचकला) में प्रतिहार राजा बपुक के पुत्र श्री जज्जक की पुत्री रानी जयावली ने, जो कि ताकुंगुव वश के वाङ्गानक गोत्रीय हरगुप्त के पुत्र मंभुवक की पत्नी थी, परमेश्वर का देवगृह बनवाया।

घ. भण्डारकर द्वारा ए० इं० खण्ड IX पृष्ठ १९८ पर फलक सहित सम्पादित।

ङ. देइआ के पुत्र पञ्चहरि द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

२. प्रतिहार बाउक का अभिलेख

क. जोधपुर

ख. चैत्र सुदि ५ वि० सं० ८९४ (मुंशी देवीप्रसाद ने ९४० पढ़ा व कीलहार्न ने ४ पढ़ा)।

ग. अभिलेख में प्रतिहार हरिचन्द्र से बाउक तक की वंशावली दी गई है। प्रायः प्रत्येक शासक के साथ उसके काल की विशेष घटना का उल्लेख भी हुआ है। [देखिये परिशिष्ठ १]

घ. देवीप्रसाद व कीलहार्न द्वारा ज०रा०ए०सो० १८९४ पृष्ठ ४ पर सम्पादित। भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०; वे०स० १९०६–७ पृष्ठ ३० पर संशोधित। रामचन्द्र मजूमदार द्वारा ए०इं० खण्ड XVIII पृष्ठ ९५ पर फलक सहित सम्पादित।

ङ. विष्णुरवि के पुत्र हेमकार कृष्णेश्वर द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

३. प्रतिहार भोजदेव के ताम्रपत्र

क. दौलतपुरा (जिला नागोर)

ख. फाल्गुन सुदी १० ३ (१३) वि० सं० ६००

ग. इसमें प्रतिहार शासकों की महाराज देवशक्ति से भोजदेव (प्रथम) तक की वंशावली दी गई है। (देखिए परिशिष्ट १) इसके अतिरिक्त भोजदेव के प्रपितामह वत्सराज द्वारा दिए गए दान के पुनर्नवीकरण का उल्लेख है, जो कि भोजदेव के पितामह महाराज नागभट्ट के समय तक चालू था व भोज के समय किसी कारणवश स्थगित हो गया था। यह दान पत्र महोदय से प्रदान किया गया। इसमें भोजदेव का उपनाम प्रभास दिया गया है।

घ. कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड V पृष्ठ २११ पर सम्पादित व भण्डारकर द्वारा ज०बों०ब्रां०रो०ए०सो०, खण्ड XXI पृष्ठ ४१० पर संशोधित। हार्नले द्वारा ज०रो०ए०सो०, १६०४ पृष्ठ ६४ पर टिप्पणी व कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड VIII परि० I पृष्ठ I पर टिप्पणी।

ङ. ....

च. संस्कृत

४. प्रतिहार कक्कुक का स्तम्भ लेख

क. घटियाला (जिला जोधपुर)

ख. चैत्र सुदी २ वि० सं० ६१८

ग. घटियाला (रोहिंसकूप) पहले आभीरों के उपद्रवों के कारण त्रस्त था व प्रायः उजड़ गया था, पर कक्कुक ने उपद्रवों को शांत कर इसे फिर से स्थापित किया।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०,वे०स० १६०६–७ पृष्ठ ३४ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड IX पृष्ठ २८० पर सम्पादित।

ङ. मगजातीय मातृरवि द्वारा लिखित व हेमकार कृष्णेश्वर द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

५. प्रतिहार कक्कुक का जैन अभिलेख

क. घटियाला

ख. चैत्र सुदि २ बुधवार वि० सं० ६१८

ग. लेख में कहा गया है कि लक्ष्मण रघुकुलतिलक राम का प्रतिहार था। उसी से प्रतिहार वंश चला। तदुपरान्त हरिचन्द्र से कक्कुक तक की वंशावली दी

है (देखिए परिशिष्ट १) कक्कुक को मरू, माड, वल्ल, स्रवणी, परिश्रंक, गोघनागिरी व वटनाणक मण्डल का विजेता कहा है। उक्त तिथि को उसने रोहिंसकूप में एक बाजार का निर्माण करवाया व एक स्तम्भ स्थापित करवाया। इसी समय एक स्तम्भ मण्डोर में भी स्थापित करवाया।

घ. देवीप्रसाद व कीलहार्न द्वारा ज०रा०ए०सो० १८९५ पृष्ठ ५१६ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. प्राकृत

❀

६. कक्कुक का स्तम्भलेख

क. घटियाला

ख. चैत्र सुदि २ बुधवार वि० सं० ९१८

ग. लेखाङ्क ५ की भाँति इसमें भी प्रतिहार शासकों की कक्कुक तक की वंशावली दी गई है। तदनन्तर कहा गया है कि कक्कुक ने स्रवनी, वल्ल, गुजरात व माड में अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त करली थी। इसने रोहिंसकूप (घटियाला) व मण्डोर में एक एक स्तम्भ स्थापित किया था।

घ. भंडारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे० स० १९०६-७ पृष्ठ ३४ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड IX पृष्ठ २७९ पर सम्पादित।

ङ. कक्कुक द्वारा सृजित

च. संस्कृत

❀

७. जैन मन्दिर अभिलेख

क. गांगाणी (जिला जोधपुर)

ख. आषाढ़ सुदि १ वि० सं० ९४७

ग. प्रतिमा स्थापित किए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. बाबू पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग II पृष्ठ १९४ पर प्रकाशित

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

८. राणुक का देवली लेख

क. घटियाला

ख. भाद्रपद सुदि ४ वि० सं० ९४७

ग. राणुक की मृत्यु व उसकी पत्नि संपल्ल देवी के सती होने का उल्लेख है।
घ. ए०इं० खण्ड XIX पृष्ठ ८-६ पर निर्देशित
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

६. हस्तिकुण्डी के राष्ट्रकूट विदग्धराज का अभिलेख

क. बीजापुर (जिला पाली)
ख. संवत् ६७३
ग. लेखाङ्क १७ में राष्ट्रकूट विदग्धराज की उक्त तिथि दी गई है।
घ. ए०इं० खण्ड X पृष्ठ २४ पर सम्पादित
ङ. देखिए लेखाङ्क १७
च. संस्कृत

❀

१०. स्मारक स्तम्भ अभिलेख

क. चिराई (जिला जोधपुर)
ख. ज्येष्ठ सुदि १० सोमवार वि०सं० ६६३ [२२ मई सन् ६३७ ई०]
ग. अभिलेख में स्तम्भ निर्माण का उल्लेख हुआ है।
घ. इं०आ० १६५६-६० पृष्ठ ६० पर निर्देशित
ङ. ....
च. ....

❀

११. स्मारक स्तम्भ लेख

क. चिराई
ख. ज्येष्ठ सुदि १० सोमवार वि० सं० ६६३ [२२ मई सन् ६३७ ई०]
ग. अभिलेख में स्तम्भ के निर्माण का व प्रतिहार जातीय दुलहराज के पुत्र अर्जुन का नामोल्लेख हुआ है।
घ. इं०आ० १६५६-६० पृष्ठ ६० पर निर्देशित
ङ. ....
च. ....

❀

१२. राष्ट्रकूट मम्मट की तिथि

क. बीजापुर

ख. माघ वदि ११ संवत् ६६६

ग. लेखाङ्क १७ में मम्मट की उक्त तिथि दी गई है।

घ. देखिए लेखाङ्क १७

ङ. वही

च. वही

❀

१३. शिव मन्दिर अभिलेख

क. थांवला

ख. पौष सुदि ४ वि० सं० १०१३

ग. अभिलेख में महाराजधिराज सिंधुराज के राज्यकाल में मन्दिर के निमित्त विभिन्न व्यक्तियों द्वारा भिन्न-भिन्न दान दिए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. रत्नचन्द्र अग्रवाल द्वारा वरदा वर्ष ५ अंक १ में प्रकाशित तथा डा० दशरथ शर्मा द्वारा टिप्पणी वरदा वर्ष ५ अंक २

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४. जैन मन्दिर अभिलेख

क. ओसियां

ख. फाल्गुन सुदि ३ वि० सं० १०१३

ग. प्रतिहार शासक वत्सराज का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा आ०स०इं०, एन० रि० १६०८-६ पृष्ठ १०८ पर निर्देशित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ १६२ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१५. लाख का नाडोल अभिलेख

क. नाडोल

ख. वि० सं० १०२४

ग. चौहान वंश की नाडोल शाखा के संस्थापक महाराजा लाग (लक्ष्मण) का नामोल्लेख हुआ है ।

घ. टॉड द्वारा एन०एन्टी०राज० खण्ड I पृष्ठ २०६ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

✿

१६. नाडोल अभिलेख में लक्ष्मण की तिथि

क. नाडोल

ख. वि० सं० १०३६

ग. नाडोल अभिलेख (लेखाङ्क ८६) में नाडोल की चौहान शाखा के संस्थापक लाखण (लक्ष्मण) की उक्त तिथि दी गई है ।

घ. देखिए लेखाङ्क ८६

ङ. वही

च. वही

✿

१७. राष्ट्रकूट धवल का अभिलेख

क. बीजापुर

ख. (i) माघ शुक्ला १३ वि० सं० १०५३

(ii) माघ शुक्ला १३ रविवार वि० सं० १०५३ [२४ जनवरी सन् ६६७ ई०]

ग. इसमें हरिवर्मन् से वलप्रसाद तक की स्थानीय राष्ट्रकूट नरेशों की वंशावली दी गई है (वंशावली के लिए देखिए परिशिष्ट १) प्रायः प्रत्येक शासक के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख भी इस अभिलेख में हुआ है। अन्त में कहा गया है कि वृद्धावस्था में धवल ने सांसारिक भोगों का परित्याग कर दिया व अपने पुत्र बलप्रसाद को राज्यासीन किया ।

घ. कीलहार्न द्वारा ज०ए०सो०बं० खण्ड LXII भाग I पृष्ठ ३०६ पर निर्देशित व रामकर्ण आसोपा द्वारा ए०इं० खण्ड X पृष्ठ २० पर सम्पादित

ङ. ....

च संस्कृत

✿

१८. चालुक्य मूलराज के ताम्रपत्र

क. वालेरा

ख. माघ सुदि १५ चन्द्रग्रहण [१६ जनवरी सन् ६६५ ई०]

ग. चालुक्य मूलराज के ये ताम्रपत्र अणहिलपाटक से प्रदान किए थे।

घ. ध्रुव द्वारा वि०ओ०ज० खण्ड V पृष्ठ ३०० पर व देवीप्रसाद द्वारा प्रो०ए० सो० बं० १८६२ पृष्ठ १६८ पर निर्देशित व स्टेन कोनोअ द्वारा ए०इं० खण्ड X पृष्ठ ७८ पर फलक सहित सम्पादित

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६. चौहान दुर्लभराज व दधिचिक चच्च का अभिलेख

क. किणसरिया (परवतसर)

ख. वैशाख सुदि ३ (अक्षय तृतीया) रविवार वि०सं० १०५६

ग. अभिलेख में कहा गया है कि चौहान वंश में शासक वाक्पतिराज हुआ जिसका कि पुत्र सिंहराज था व सिंहराज का पुत्र दुर्लभराज था, जिसे दुर्लंध्यमेरू व रासोसितन्न-मण्डल का विजेता कहा गया है। इसके अनन्तर दधिचिक वंश के वर्णन में कहा गया है कि इस वंश में मेघनाथ हुआ जिसकी पत्नि का नाम मासटा था। इसका उत्तराधिकारी वैरिसिंह था, जिसकी पत्नि का नाम दुन्दा था। वैरिसिंह का उत्तराधिकारी चच्च था, जिसके द्वारा भवानी के स्थानीय मन्दिर का निर्माण हुआ।

घ. रामकर्ण आसोपा द्वारा इं०ए० खण्ड XLII पृष्ठ २६७ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XII पृष्ठ ५६ पर फलक सहित सम्पादित। दुर्गालाल माथुर द्वारा रा० प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ १ पर सम्पादित।

ङ. कवि कल्या के पुत्र गौड़ कायस्थ महादेव द्वारा सृजित

च. संस्कृत

❀

२०. परमार देवराज का ताम्रपत्र

क. भीनमाल

ख. माघ सुदि १५ संवत् १०५६ [सन् १००२ ई०]

ग. प्रस्तुत ताम्रपत्र में महाराजाधिराज देवराज द्वारा श्रीमाल नगर के नगरकोट के वाहर दक्षिण दिशा में स्थित भूमि आउरकाचार्य को देने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. न्यास के पुत्र सुर्यरवि द्वारा लिखित

च. संस्कृत

❀

२१. दहित का स्मारक अभिलेख

क. वरलू (जिला जोधपुर)

ख. आषाढ़ सुदि ६ वि० सं० १०६३

ग. राजा जविकव के पुत्र महावराह (राजपूतों की एक प्राचीन जाति-वराहा) दहित की उक्त तिथि को मृत्यु होने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६११-१२ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

२२. परमार देवराज के ताम्रपत्र

क. भीनमाल

ख. (i) माघ सुदि १५ वि० सं० १०६६ [१४ जनवरी सन् १०१२ ई०]
 (ii) चन्द्रग्रहण (बुधवार)

ग. अभिलेख में (परमार) महाराजा देवराज के साथ महासामन्त पूर्णचन्द व मातृक का नामोल्लेख भी हुआ है। मातृक को महाराजा का गुरु कहा गया है।

घ. ए०इं० खण्ड XIX पृष्ठ १८ पर भण्डारकर द्वारा निर्देशित।

ङ. न्यास के पुत्र सूर्यरवि द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

२३. बालकनाथ के मन्दिर के कीर्तिस्तम्भ का लेख

क. पौकरण

ख. आषाढ़ सुदि ६ शनिवार वि० सं० १०७०

ग. अभिलेख में कहा गया है कि परमार शियपुष्प का पुत्र घिघक युद्ध में मारा गया। इस घिघक के पुत्र वनपाल ने पिता की स्मृति में मन्दिर का निर्माण करवाया। घिघक की पत्नि का नाम महिम दिया है।

घ. ....
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

२४. जैन मन्दिर अभिलेख

क. ओसियां
ख. आषाढ़ सुदि १० रविवार स्वस्तिनक्षत्र, वि० सं० १०७५
ग. मन्दिर से सम्बन्धित दान आदि का उल्लेख
घ. भण्डारकर द्वारा आ०स०इं०, एन०रि० १९०८-९ पृष्ठ १०८ पर निर्देशित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

२५. रानी संपिका का अभिलेख

क. घटियाला
ख. चैत्र वदि १ रविवार वि० सम्वत १०८२
ग. अभिलेख में संपिका को प्रतिहार वंशीय सुभच्छराज की पत्नि बताया है। सुभच्छराज रोहिंसकूप के प्रतिहार शासक कर्कुक (कक्कुक) का वंशज था [देखिए लेखाङ्क ४,५,६]
घ. ए०इं० खण्ड XIX में पृष्ठ १९ पर भण्डारकर द्वारा निर्देशित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

२६. प्रतिहार चहिल का स्मारक अभिलेख

क. घटियाला
ख. पौष सुदि १५ वि० सं० १०९०
ग. अभिलेख में स्थानीय प्रतिहार शासक चहिल की मृत्यु का उल्लेख हुआ है। चहिल को सुभच्छराज (देखिये लेखाङ्क २५) का पुत्र बताया गया है। सुभच्छ-राज के लिए कहा गया है कि यह कर्कुक (कक्कुक) का वंशज था [कक्कुक के लिए देखिए लेखाङ्क ४,५ व ६ व परिशिष्ट १]
घ. ए०इं० खण्ड XIX पृष्ठ २०.पर भण्डारकर द्वारा निर्देशित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

२७. परमार पूर्णपाल का अभिलेख

क. भडुण्ड

ख. कार्तिक वदि ५ वि० सं० ११०२

ग. अभिलेख में परमार धंधुक के पुत्र पूर्णपाल का उल्लेख हुआ है। पूर्णपाल को अर्वुद मण्डल (आवू) का शासक वताया गया है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०अ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ५० पर निर्देशित व रामकर्ण आसोपा द्वारा ज०वो०ब्रां०रा०ए०सो० खण्ड XXIII पृष्ठ ७८ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

२८. गुहिल पुत्र का तीर्थस्भ स्मारक अभिलेख

क. वागोडिया

ख. फाल्गुन सुदि ३ वि० सं० ११११

ग. किसी गुहिलपुत्र (गहलोत वंशीय) की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

२९. परमार कृष्णराज का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. माघ सुदि ६ रविवार वि०सं० १११७ [३१ दिसम्बर सन् १०६० ई०]

ग. परमार शासक कृष्णराज का उल्लेख हुआ है। कृष्णराज को धंधुक का पुत्र व देवराज का पौत्र बताया गया है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ३७ पर निर्देशित व जेक्सन द्वारा वो०गे० खण्ड I भाग I पृष्ठ ४७२ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

३०. महाराज कृष्णदेव का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. ज्येष्ठ वदि १२ शनिवार वि० सम्वत ११२३ [१२ मई सन् १०६७ ई०]

ग. अभिलेख में श्री श्रीमाल (भीनमाल) में महाराजाधिराज श्री कृष्णराज के शासन का उल्लेख हुआ है (अद्येह श्री श्रीमाले महाराजधिराज श्री कृष्णराज राज्ये)

घ. जेक्सन द्वारा बो०गे० खण्ड I भाग I पृष्ठ ४७३ पर सम्पादित।

ङ. ....

चं. सस्कृत

❀

३१. चौहान खिद्रपाल का अभिलेख

क. आउवा

ख. आश्विन कृष्णा १५ शनिवार [१२ सितम्बर सन् १०७५ ई०]

ग. [चौहानों की नाडोल शाखा के शासक] अणहिल के पुत्र खिद्रपाल का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५० पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३२. जैन अभिलेख

क. कोरटा

ख. वैशाख सुदि ३ वृहस्पतिवार वि० सम्वत ११४३ [८ अप्रेल सन् १०८७ ई०]

ग. जैन मन्दिर से सम्बन्धित सूचना।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३३. महाराज जोजलदेव का अभिलेख

क. सादड़ी

ख. वैशाख सुदि २ बुधवार वि० सम्वत ११४७ [२३ अप्रेल सन् १०९१ ई०]

ग. अभिलेख द्वारा महाराज जोजलदेव ने यह आज्ञा प्रसारित की कि लक्ष्मण स्वामी

आदि देवताओं की यात्रा के उत्सव के समय उस देवता को मानने वाले व नहीं मानने वाले प्रत्येक राज्य कर्मचारी को, सुन्दर वस्त्र आदि धारणकर, भाग लेना चाहिए। नृत्यकार, संगीतकार व शूलधारियों को भी यात्रा-उत्सव में भाग लेने का आदेश दिया गया है।

घ. कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड IX पृष्ठ १५८ पर निर्देशित भण्डारकर द्वारा ए० इं० खण्ड XI पृष्ठ २७ पर व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ७ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३४. महाराज जोजलदेव का आज्ञाभिलेख

क. नाडोल

ख. वैशाख सुदि २ बुधवार वि० सम्वत ११४७ [२३ अप्रेल सन् १०९१ ई०]

ग. इसका विषय लेखाङ्क ३३ के अनुसार ही है।

घ. कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड IX पृष्ठ १५९ व भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४५ पर निर्देशित; भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ २८ पर व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ७ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३५. जैन अभिलेख

क. पाली

ख. आषाढ़ सुदि ८ गुरुवार सम्वत ११५१

ग. पल्लिका (पाली) के निवासी एवं प्रद्योतनाचार्यगच्छ के अनुयायी आदा व मादाक द्वारा आत्मश्रेयार्थ प्रदत्त दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३६. स्मारक अभिलेख

क. भावी

ख. भाद्रपद शुक्ला ३ रविवार वि० सम्वत ११५९

ग. अभिलेख में किसी जयराज की मृत्यु का उल्लेख हुआ है ।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३७. श्री लक्ष्मणस्वामिदेव का अभिलेख

क. सादड़ी

ख. वैशाख सुदि ३ वि० सम्वत ११६२

ग. मन्दिर की मर्यादा के सम्बन्ध में कोई आदेश दिया गया है ।

घ ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३८. महाराज अश्वराज का अभिलेख

क. सेवाड़ी

ख. चैत्र सुदि १ वि० सम्वत ११६७

ग. महाराज अश्वराज व महाराज कुमार कटुकराज के समय में पौत्री के पौत्र व उत्तमराज के पुत्र उप्पलराज द्वारा, जो राजकीय अस्तबल का अधिकारी था, नित्य पूजा के लिए दिए जाने वाले दान का उल्लेख हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स०, १९०७·०८ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २२६ पर लिप्यन्तरित । भण्डारकर द्वारा ए०इं खण्ड XI पृष्ठ २८ पर व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०प्र० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ १२ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३९. कामेश्वर मन्दिर अभिलेख

क. आउवा

ख. फाल्गुन वदि आदित्य दिने वि० सं० ११६८

ग. कामेश्वर मन्दिर हेतु दिए जाने वाले दान का उल्लेख किया गया है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५० पर निर्देशित।

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

४०. देवली अभिलेख

क. काला पहाड़, खेजड़ला

ख. चैत्र वदि १५ रविवार सम्वत ११६९

ग. किसी वतल सुत चेताजी का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

४१. कटुकराज का अभिलेख

क. सेवाड़ी

ख. सम्वत ११७२ [सन् १११५ ई०]

ग. अभिलेख में चौहान शासकों की वंशावली निम्न प्रकार से दी गई है– अणहिल, इसका पुत्र जिन्द (जिन्दराज), इसका पुत्र अश्वराज, इसका पुत्र कटुकराज। इसके अतिरिक्त सेनापति यशोदेव का नामोल्लेख हुआ है। इसके पुत्र का नाम वाहड दिया है व वाहड के पुत्र का नाम थल्लक दिया गया है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-०८ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित। भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ३० पर व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा० प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ १४ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

४२. परमार वीसल का अभिलेख

क. जालोर

ख. आषाढ़ सुदि ५ मंगलवार वि० सम्वत ११७४ [२५ जून सन् १११८ ई०]

ग. अभिलेख में परमार शासकों की निम्न वंशावली दी गई है— वाक्पतिराज, इसका पुत्र चन्दन, इसका पुत्र देवराज, इसका पुत्र अपराजित, इसका पुत्र विज्जल, इसका पुत्र धारावर्ष, इसका पुत्र वीसल, जिसकी कि रानी मल्लारदेवी ने सिंधुराजेश्वर के मन्दिर पर स्वर्ण कलश चढ़वाया।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५४ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

४३. जालोर अभिलेख

क. जालोर

ख. वैशाख वदि १ शनिवार वि० सम्वत ११७५ [२९ मार्च सन् १११९ ई०]

ग. अभिलेख सुपाठ्य नहीं है, मात्र तिथि ही पढ़ी जा सकी।

घ. भडारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे० स० १९०८-९ पृष्ठ ५६ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

४४. किष्किन्धा के चौहान रूद्र का अभिलेख

क. केकिन्द

ख. वैशाख सुदि १५ गुरूवार सम्वत ११७६ [१५ अप्रेल सन् ११२० ई०] चन्द्रग्रहण

ग. राजपुत्र राणा महिपाल व किष्किन्धा (केकिन्द) के चौहान रूद्र का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स, वे०स० १९१०-११ पृष्ठ ३५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

४५. महाराज रत्नपाल के ताम्रपत्र

क. सेवाड़ी

ख. ज्येष्ठ वदि ८ गुरूवार वि० सम्वत ११७६ [२२ अप्रेल सन् ११२०]

ग. इन ताम्रपात्रों के द्वारा गुन्दकुर्च्चा (गुन्दोच) के ब्राह्मणों को महाराज रत्नपाल के पितामह जेन्दराज द्वारा दिए गए अधिकार का पुनर्नवीकरण किया गया है। इस गुन्दकुर्च्चा ग्राम के नामकरण के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण बात इसमें कही गई है, कि कान्यकुब्ज के शासक जाजुक ने गोविन्द नामक ब्राह्मण को उतनी ही भूमि प्रदान कर दी जितनी कि भूमि पर वह अश्वारूढ़ हो कर चार प्रहर में घूम सका। उसी गोविन्द के कारण इस ग्राम का नाम गुन्दकुर्च्चा पड़ा। इसके अतिरिक्त चौहान शासकों की निम्न वंशावली भी इसमें दी गई है:—इन्द्र आँख से एक पुरूष निकला जिससे चहमान वंश चला। इस वंश में लक्ष्मण हुआ, उसका पुत्र सोहित था, जो धार का अधिकारी हुआ, इसका पुत्र बलिराज था, इसका उत्तराधिकारी इसका चाचा विग्रहपाल हुआ, इसका पुत्र महेन्द्र था, इसका पुत्र अणहिल्लदेव, इसके पुत्र बलप्रसाद व जैसलदेव थे, जेसलदेव का पुत्र पृथ्वीपाल था व इसका पुत्र रत्नपाल था।

घ. रामकर्ण आसोपा द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ३०८ पर फलक सहित सम्पादित व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ पृष्ठ १८ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

४६. पिप्लराज का अभिलेख

क. केकिन्द

ख. चैत्र वदि १ सम्वत ११७८

ग. किष्किन्धा (केकिन्द) पर महामण्डलिक श्री राणक पिप्लराज व श्री रांहामुसक- देवी के संयुक्त शासन का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९१०-११ पृष्ठ ३५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

४७. स्मारक अभिलेख

क. घड़ाव (कड़वड़)
ख. फाल्गुन वदि....(७?) शुक्रवार वि० सम्वत ११८०
ग. किसी गुहिल की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।
घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित (व्यक्तिगत संग्रह)
ङ. ....
च. सस्कृत

❀

४८. स्मारक अभिलेख

क. घड़ाव (कड़वड़)
ख. फाल्गुन सुदि ७ शुक्रवार वि० सम्वत ११८०
ग. किसी गुहिल की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।
घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

४९. स्मारक लेख

क. वड़लू
ख. माघ वदि ११ शनिवार वि० सम्वत ११८४
ग. पंवार वंशीय सतरिया (?) के पुत्र सिणगसाल (?) की मृत्यु का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।
घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

५०. चालुक्य सिद्धराज का अभिलेख

क. भीनमाल
ख. आषाढ़ सुदि १५ वि० सं० ११८६
ग. चालुक्य सिद्धराज के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ३८ पर निर्देशित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

५१. महाराज रायपालदेव का अभिलेख

क. नाडलाई (नारलाई)
ख. माघ सुदि ५ वि० सं० ११८९
ग. महाराज रायपाल की पत्नि मानलदेवी व पुत्रों, रुद्रपाल व अमृतपाल द्वारा दिये जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।
घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८–९ पृष्ठ ४३ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ३५ पर सम्पादित। दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०ले० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ २८ पर सम्पादित। पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २१३ पर लिप्यन्तरित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

५२. स्तम्भ अभिलेख

क. वस्सी (नागोर)
ख. वि० सम्वत ११८९ [सन् ११३२-३३]
ग. अभिलेख में चौहान महाराज अजयपाल की मृत्यु व उसकी तीन रानियों के सती होने का उल्लेख हुआ है। मुख्य रानी का नाम सोमलदेवी दिया गया है।
घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ५४ पर निर्देशित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

५३. लक्ष्मण स्वामि के मन्दिर का लेख

क. सादड़ी
ख. ज्येष्ठ सुदि ११ बुधवार वि० सम्वत ११९२

ग. तैंजवाल गोकल राज का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

५४. सती स्मारक अभिलेख

क. घड़ाव (कड़वड़)

ख. आषाढ़ सुदि ६ वि० सं० ११९४

ग खीची लक्ष्मण के पुत्र की मृत्यु व पुत्र वधु के सती होने का उल्लेख अभिलेख में हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

५५. महाराज रायपालदेव का अभिलेख

क. नाडलाई

ख. आश्विन वदि १५ मंगलवार वि० सं० ११९५

ग. गुहिलवंशीय राउत उधरण के पुत्र ठाकुर राजदेव, जो महाराज रायपाल का सामन्त था, द्वारा दिए जाने वाले दान का उल्लेख किया गया है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४३ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ३६ पर सम्पादित। दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ३० पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

५६. स्मारक अभिलेख

क. उंस्तरा

ख. वैशाख सुदि १० वि० सं० ११९८

ग. जिसवा के पुत्र जसपाल का नामोल्लेख हुआ है ।
घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा संग्रहीत ।
ङ. ....
च. सस्कृत

❀

५७. महाराजा रायपाल का अभिलेख

क. नाडोल
ख. श्रावण वदि ८ रविवार वि० सं० ११९८ [१६ अगस्त सन् ११४२]
ग. अभिलेख के अनुसार धालोप नामक नगर में ८ मोहल्ले थे, प्रत्येक मोहल्ले से दो-दो ब्राह्मण प्रतिनिधियों ने एकत्रित होकर देवाइच को अपना मध्यक बनाया व यह निश्चय किया कि यदि भट्ट, भट्टपुत्र, दौवारिक, सार्पटिक, वणिज्जारक आदि द्वारा कुछ खो जाता है अथवा छीन लिया जाता है, तो उसका पता चौकडिका अर्थात पंचायत से लगाया जायगा और उसके लिए साधनों की प्राप्ति महाराज रायपाल द्वारा होगी ।
घ. कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड IX पृष्ठ १५९ व भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४५ पर निर्देशित । भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ३९ व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ३३ पर सम्पादित ।
ङ. धालोप के लोगों की सम्मति से गौड़ कायस्थ वादिग के पुत्र ठकुर पेथड द्वारा लिखित ।
च. संस्कृत

❀

५८. चालुक्य जयसिंह सिद्धराज की तिथि

क. किराडू
ख. वि० संवत् ११९८ (?)
ग. देखिये लेखाङ्क ७७
घ. लेखाङ्क ७७ के अनुसार
ङ. वही
च. वही

❀

५६. रायपाल का अभिलेख

क. नाडलाई

ख. कार्तिक वदि १ रविवार वि० सं० १२०० [२६ सितम्बर सन् ११४३ ई०]

ग. नाडलाई की महाजन सभा के द्वारा महावीर चैत्य के लिये दिए जाने वाले दान का उल्लेख हुआ है ।

घ. पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २१३ पर व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४० पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६०. सती स्मारक अभिलेख

क. पाल

ख. सम्वत १२००

ग. जोधाराय की माता के सती होने का उल्लेख प्रस्तुत लेख में हुआ है ।

घ. श्री दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित ।

ङ. ....

च देशज

❀

६१. केकिन्द अभिलेख

क. केकिन्द

ख. चैत्र सुदि ४ सोमवार वि० सं० १२०० [२० मार्च सन् ११४४ ई०]

ग. भगवान गुणेश्वर के निमित्त दिए जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९१०-११ पृष्ठ ३५० पर निर्देशित

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६२. स्मारक अभिलेख

क. वड़लू

ख. वैशाख वदि २ सम्वत १२००

ग. राणा वेदडिदिवा के पुत्र सलपण की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा संग्रहीत ।

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

६३. महाराज रायपाल का अभिलेख

क. नाडलाई

ख. ज्येष्ठ सुदि ५ गुरुवार वि० सम्वत १२०० [२० मई सन् ११४३ ई०]

ग. राउत राजदेव द्वारा रथयात्रा पर आने के समय अपनी माता के निमित्त धर्म के निमित्त दिये जाने वाले दान का पृथक पृथक उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ४३ पर व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा० प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ३८ पर सम्पादित। पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले० सं० भाग १ पृष्ठ २१४ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६४. महाराज रायपाल का नाडोल अभिलेख

क. नाडोल

ख. भाद्रपद वदि ८ बुधवार वि० सम्वत १२०० [२३ अगस्त सन् ११४४ ई०]

ग. महाराज रायपाल का नामोल्लेख हुआ है।

घ. कीलहार्न द्वारा ए०इ० खण्ड IX पृष्ठ १५६ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६५. महाराज रायपाल का अभिलेख

क. नाडोल

ख. भाद्रपद वदि ८ बुधवार वि० सम्वत १२०० [२३ अगस्त सन् ११४४ ई०]

ग. किसी कर्णाट राणक भनन द्वारा दिए जाने दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. भंडारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे० स० १९०८-९ पृष्ठ ५४ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६६. चालुक्य जयसिंह का अभिलेख

क. बाली

ख. ....वि० सम्वत १२०० [सन् १२४३ ई०]

ग. लेख में कहा गया है कि महाराजधिराज जयसिंह (चालुक्य) का महासामन्त कटुकराज (चौहान-नाडोल शाखा) था । उस समय बालही (बाली) रानी श्री त्रिहुणक के अधिकार में थी । इस समय वहुघूणद देवी की यात्रा के निमित्त पाल्हा के पुत्र वोपण ने दान दिया ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४५ पर निर्देशित । भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ३३ पर दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र० अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४१ पर सम्पादित ।

ङ. कुलचन्द्र द्वारा लिखित ।

च संस्कृत

❀

६७. महामात्य पृथ्वीपाल का जैन अभिलेख

क पाली

ख. ज्येष्ठ वदि ६ रविवार वि० सं० १२०१

ग. महामात्य आनन्द के पुत्र महामात्य पृथ्वीपाल द्वारा दिए जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४५ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६८. केकिन्द अभिलेख

क. केकिन्द

ख. चैत्र सुदि १४ गुरूवार वि० सम्वत १२०२ [२८ मार्च सन् ११४६ ई०]

ग. अभिलेख में राणक सहनपाल व रानी सांवलदेवी द्वारा दिए जाने वाले दानों का पृथक पृथक उल्लेख है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स, वे०स० १९१०-११ पृष्ठ ३५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६९. चौहान रायपालदेव का अभिलेख

क. नाडलाई (नारलाई)

ख. आश्विन वदि ५ शुक्रवार वि० सं० १२०२

ग. अभिलेख में महाराजाधिराज रायपालदेव के शासन काल में नाडलाई के ठाकुर राउत राजदेव द्वारा महावीर चैत्य के साधुओं को दिए जाने वाले दान का उल्लेख है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०ई० खण्ड XI पृष्ठ ४३ व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४६ पर सम्पादित। पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २१४ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

७०. स्मारक अभिलेख

क. वड़लू

ख. आसोद सुदि ३ मंगलवार सम्वत १२०३

ग. राला के पुत्र पंवार वंशीय मंविदेव की मृत्यु का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

७१. चालुक्य कुमारपाल का अभिलेख

क. किराडू

ख. सम्वत १२०५

ग. लेखाङ्क ७३ में उल्लिखित चालुक्य कुमारपाल व उसके सामन्त परमार सोमेश्वर का काल।

घ. लेखाङ्क ७३ के अनुसार

ङ. लेखाङ्क ७३ के अनुसार

च. संस्कृत

❀

७२. परमार जसधवल का अभिलेख

क. कोयलवाव

ख. माघ सुदि १ सोमवार वि० सम्वत १२०८

ग. (परमार) जसधवल (यशोधवल) का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ए०इं० खण्ड XIX पृष्ठ ४३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

७३. चालुक्य कुमारपाल का अभिलेख

क. किराडू

ख. माघ वदि १४ शनिवार वि० सं० १२०९ [२४ जनवरी सन् ११५३ ई०]

ग. प्रस्तुत अभिलेख में चालुक्य कुमारपाल से प्राप्त आज्ञा को अल्हणदेव ने प्रसारित किया है कि, किराटकूप लाटर्हद व शिव प्रदेश में माघ मास के दोनों पक्षों की अष्टमी, एकादशी व चतुर्दशी को पशु वध नहीं किया जा सकेगा। इस आज्ञा का उलंघन करने वाले से दण्ड स्वरूप ५ द्रम्म लिए जाऐंगे। राजाज्ञा ठाकुर खेलादित्य द्वारा लिखी गई व नाडोल निवासी, पोरवाड़ जातीय शुभंकर के पुत्रों पुतिग व शालिग द्वारा प्रसारित की गई।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ४४ व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र० अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४८ पर सम्पादित। भा०प्रा०सं०इं० पृष्ठ १७२ पर प्रकाशित।

ङ. सूत्रधार भाइल द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

७४. चालुक्य कुमारपाल का जैन अभिलेख

क. पाली

ख. द्वितीय ज्येष्ठ वदि ४ वि० सम्वत १२०९ [१३ मई सन् ११५३ ई०]

ग. चालुक्य कुमारपाल के राज्यकाल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स०, १९०७-८ पृष्ठ ४५ पर निर्देशित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं०भाग १ पृष्ठ २०५ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

७५. चालुक्य कुमारपाल का अभिलेख

क. भटुण्ड

ख. ज्येष्ठ सुदि ६ गुरूवार वि० सम्वत १२१० [२० मई सन् ११५४ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि चालुक्य कुमारपाल के शासनकाल में श्री वैजक नाडोल का दण्डनायक था।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ५६ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

७६. पंचकुंडों का लेख

क. मण्डोर

ख ज्येष्ठ सुदि १ रविवार वि० सम्वत १२१३

ग. राठोड़ भुवणि के पुत्र सलखा व उसकी तीन पत्नियों सलखणदेवी चहुवाणी, सावलदेवी सोलकिणी व सेजणदेवी गहलोतणी, का नाम्मोलेख हुआ है।

घ. मांगीलाल व्यास द्वारा अन्वेषणा खण्ड १ अंक १ पृष्ठ ४५ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. देशज

❀

७७. चालुक्य कुमारपाल का अभिलेख

क. नाडोल

ख. माघ वदि १० शुक्रवार वि० सं० १२१३ [६ नवम्बर सन् ११५६ ई०]

ग. चालुक्य कुमारपाल के शासन काल में महाराज योगराज के पौत्र व महा-मण्डलिक वत्सराज के पुत्र महामण्डलिक प्रतापसिंह द्वारा दिए जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा ई०ए० खण्ड XII पृष्ठ २०३ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

७८. दण्डनायक वैजल्लदेव का अभिलेख

क. घाणेराव

ख. भाद्रपद सुदि ४ मंगलवार वि० सम्वत १२१३ [२१ अगस्त सन् ११५६ ई०]

ग. दण्डनायक वैजल्लदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ७० पर निर्देशित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २१८ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

७९. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. नाडोल

ख. वैशाख सुदि १० मंगवार वि० सं० १२१५

ग. प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४६ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

८०. कुमारपाल का अभिलेख

क. बाली

ख. श्रावण वदि १ शुक्रवार वि० सं० १२१६ [३ जुलाई सन् ११५९ ई०]

ग. महाराज कुमारपाल के शासन काल में नाडोल के दण्डनायक वयजलदेव (लेखाङ्क ७८) द्वारा एक मन्दिर को भूमि दिए जाने का उल्लेख है। इस समय वालही (वाली) का जागीरदार अनुपमेश्वर था।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ५५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

८१. सती स्मारक अभिलेख

क. घड़ाव (कड़वड़)

ख. श्रावण सुदि ६ वि० सम्वत १२१७

ग. दला के पुत्र गुहिल महिद राव की मृत्यु व उसकी पत्नियों महणदेवी व कागल देवी के सती होने का उल्लेख अभिलेख में हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

८२. महाराज पुत्र कीर्तिपाल के ताम्रपत्र

क. नाडोल

ख. श्रावण वदि ५ सोमवर वि० सं० १२१८ [२५ जुलाई सन् ११६० ई०]

ग. सांभर के चौहान शासक वाक्पतिराज से लेकर नाडोल के चौहान शासकों की केल्हणदेव तक की वंशावली दी गई है (देखिए परिशिष्ट १) बताया गया है कि कीर्तिपाल अल्हण का सबसे छोटा पुत्र था जिसे कि १२ ग्राम मिले हुए थे। कीर्तिपाल द्वारा प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में उसके १२ ग्रामों में से एक को क्रमश: नारलाई के जैन महावीर को दो द्रम्म दिए जाने का निश्चय हुआ।

घ. कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड IX पृष्ठ ६८ पर सम्पादित व रामकर्ण द्वारा इं०ए० खण्ड XL पृष्ठ १४६ पर पुन: सम्पादित। पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २१० पर लिप्यन्तरित।

ङ. नैगम कायस्थ सावा के पौत्र व दामोदर के पुत्र शुभंकर द्वारा सृजित।

च. संस्कृत

❀

८३. महाराज अल्हणदेव के ताम्रपत्र

क. नाडोल

ख. श्रावण सुदि १४ रविवार वि० सम्वत १२१८ [६ अगस्त सन् ११६१ ई०]

ग. इस लेख में भी लेखाङ्क ८२ की तरह नाडोल के चौहान शासकों की लक्ष्मण से अल्हण देव तक वंशावली दी है [देखिए परिशिष्ट १] अल्हण देव द्वारा नाडोल में स्थित षंडेरक गच्छ के उपास्य देव महावीर के धूप दीप की व्यवस्था हेतु चुंगी से प्राप्त आय में से प्रतिमास ५ द्रम्म दिए जाने का उल्लेख है।

घ. टॉड द्वारा एन०एंटी०राज० खण्ड I पृष्ठ ७०७ पर निर्देशित, ध्रुव द्वारा ज० बो०ब्रा०रा०ए०सो० खण्ड XIX पृष्ठ ३० पर सम्पादित व कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड IX पृष्ठ ६४ पर पुन: सम्पादित। इं०इं० (लेखाङ्क १०) में प्रकाशित, पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २०६ पर लिप्यन्तरित, दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ५१ पर सम्पादित।

ङ. नैगम कायस्थ मनोरथ के पौत्र व वासल के पुत्र श्रीधर द्वारा सृजित।

च. संस्कृत

❀

८४. चालुक्य कुमारपाल व परमार सोमेश्वर का अभिलेख

क. किराडू

ख. आश्विन सुदि १ गुरुवार वि० सम्वत १२१८ [२१ सितम्बर सन् ११६१ ई०]

ग. प्रस्तुत अभिलेख में परमारों का उत्पति आबू के यज्ञ कुण्ड से ही बताई गई है। तदनन्तर सिंधुराज से सोमेश्वर तक परमार-शासकों की वंशावली दी गई है [वंशावली हेतु देखिए परिशिष्ट १] सोमेश्वर के लिए कहा गया है कि इसने जयसिंह-सिद्धराज के माध्यम से वि० सं० ११९८ (?) में अपने खोए हुए राज्य को पुन: प्राप्त किया व कुमारपाल के समय संवत १२०५ में मन्दिर को पवित्र किया। सवत १२१८ में इसने जज्जक से तणुकोट्ट व नवसर के दुर्ग स्वगत किए।

घ. पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २५१ पर लिप्यन्तरित व विश्वेश्वरनाथ रेउ द्वारा इं०ए० में सम्पादित।

ङ. नरसिंह द्वारा सृजित, यशोदेव द्वारा लिखित व सूत्रधार जसोधर द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

८५. स्मारक अभिलेख

क. डूंगेलाव (पुराना पाल)

ख. भाद्रपद सुदि...... वि० सं० १२१८

ग तस गोत्रीय दाजी (?) की मृत्यु का उल्लेख।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

८६. महाराज पुत्र गजसिंहदेव का अभिलेख

क. झांवर

ख श्रावण वदि १ सम्वत १२१६

ग. अभिलेख में माण्डव्यपुर (मण्डोर) के (नाडोल के चौहान वंशीय) शासक महाराज पुत्र गजसिंहदेव का उल्लेख हुआ है। फिर कहा गया है कि गजसिंह के सेनाध्यक्ष सोलंकी जसधवल ने, जो दामोदर का पुत्र था, मन्दिर के निमित्त कुछ दान दिया।

घ. तेस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं०, खण्ड XII पृष्ठ ४३ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

८७. केल्हणदेव के ताम्रपत्र

क. वांनेरा

ख. श्रावण वदि १५ बुधवार वि० सम्वत १२२० [३ जुलाई सन् ११६३]

ग. महाराज केल्हणदेव के शासन काल में महाराज पुत्र कुमरसीह के पुत्र अजयसीह द्वारा भूमि दान िए जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है। दान पत्र पर राजपुत्र कीर्तिपालदेव (म राज केल्हण का लघु भ्राता), दूतक व चामुण्डराज की स्वीकृति व हस्ताक्षर भी हैं।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०८-६ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित व गर्डे द्वारा ए इं खण्ड XIII पृष्ठ २०८ पर फलक सहित सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

८८. स्मारक अभिलेख

क. बड़लू

ख. वैशाख सुदि १४ सम्वत १२२१

ग प्रवान के साथ देसल के पुत्र जिजा की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा संग्रहीत।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

८९. स्मारक अभिलेख

क. बड़लू

ख. वैशाख सुदि १४ सं० १२२१

ग. सलखण के पुत्र प्रवान की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा संग्रहीत।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

९०. केल्हणदेव का साण्डेराव अभिलेख

क. सांडेराव

ख. माघ वदि २ शुक्रवार वि० सम्वत १२२१ [१ जनवरी सन् ११६५ ई०]

ग. महाराज केल्हणदेव की माता आनलदेवी व अन्य कुछ व्यक्तियों द्वारा षण्डेरक गच्छीय मूलनायक-महावीर के मन्दिर के निमित्त दिए जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-०९ पृष्ठ ५१ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ४७ पर सम्पादित, दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ २८ पर सम्पादित। पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २२९ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६१. चालुक्य कुमारपाल का अभिलेख

क. जालोर

ख. वि० सम्वत १२२१ [सन् ११६४ ई०]

ग. अभिलेख में गुर्जरधराधीश्वर परमार्हत चालुक्य महाराजाधिराज श्री कुमारपाल देव द्वार पार्श्वनाथ के मन्दिर का निर्माण करवाए जाने का उल्लेख हुआ है। इस जैन चैत्य का नाम कुवर विहार बताया गया है। यह भी कहा गया है कुमारपाल ने जवालीपुर (जालोर) के कांचनगिरीगढ़ (स्वर्णगिरीगढ़) पर श्री हेमसूरि के उपदेशों से प्रभावित होकर श्री देवाचार्य द्वारा सद् विधि से इस चैत्य का निर्माण करवाया था।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५४-५५ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

६२. सती स्मारक अभिलेख

क पाल

ख. वैशाख सुदि ११ मंगलवार वि० सं० १२२२

ग. धाणासीहा की मृत्यु का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०४ व ज०ए०सो०बं० खण्ड X पृष्ठ १०४ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

६३. रणसीदेव का अभिलेख

क. अजहारी

ख. फाल्गुन सुदि १३ रविवार वि० सम्वत १२२३ [५ मार्च सन् ११६७ ई०]

ग. चण्डपल्ली (चन्द्रावती) के शासक महामण्डलिक राजकुल रणसीदेव (सम्भवत: मेवाड़ का शासक रावल रणसिंहदेव, गहलोत) के शासन काल का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९१०-११ पृष्ठ ३९ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

९४. नाडोल चौहान केल्हणदेव का ताम्रपत्र

क. बांणेरा

ख. ज्येष्ठ वदि १२ सोमवार वि० सं० १२२३

ग. नाडोल के चौहान शासक केल्हणदेव के शासन का उल्लेख है। केल्हणदेव को नाडुल-मण्डल का शासक बताया गया है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५३ पर व गर्डे द्वारा ए०इं० खण्ड XIII पृष्ठ २१० पर फलक सहित सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

९५. केल्हणदेव का अभिलेख

क. नाडोल

ख. श्रावण वदि १५ मंगलवार वि० सं० १२२३

ग. नाडोल के शासक केल्हणदेव के इस अभिलेख में चौहानों की नाडोल शाखा के संस्थापक लाखण (लक्ष्मण) की तिथि वि०सं० १०३९ दी है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४५ व आ०स०इं०, एन०रि० १९०७-८ भाग २ पृष्ठ २२८ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

९६. राणा विजयसिंह का अभिलेख

क. पीपाड़

ख. कार्तिक वदि ११ सं० १२२४

ग. अभिलेख में राणा श्री राजकुल विजयसिंह को पिप्पलपाद (पीपाड़) का शासक बताया गया है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

९७. केल्हणदेव का अभिलेख

क. सादड़ी

ख. फाल्गुन सुदि २ सोमवार वि० सम्वत् १२२४ [१२ फरवरी सन् ११६८ ई०]

ग. अभिलेख में केल्हणदेव के शासन काल का उल्लेख हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ५६ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

९८. जसधरपाल का अभिलेख

क. केकिन्द

ख. वि० सम्वत् १२२४ [सन् ११६७ ई०]

ग. अभिलेख में जसधरपाल को महामण्डलेश्वर कहा गया है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९१०-११ पृष्ठ ३६ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

९९. राजा भीमदेव का अभिलेख

क. सांचोर

ख. वैशाख वदि १३ वि० सम्वत् १२२५

ग. अभिलेख में राजा भीमदेव के शासन काल का उल्लेख हुआ है ।

घ. पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४८ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१००. सोलंकी कुमारपालदेव का अभिलेख

क. सोजत

ख. आश्विन वदि ३ गुरुवार वि० सम्वत् १२२६

ग. अभिलेख में कुमारपालदेव के राज्यकाल में महामण्डलेश्वर कुमारपालदेव की पत्नि की मृत्यु का उल्लेख हुआ है ।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१०१. सती स्मारक अभिलेख

क. पाल

ख. मार्गशीर्ष सुदि २ शनिवार वि० सम्वत् १२२६

ग. अभिलेख में प्रतिहार थांथा की पुत्री सोनली की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड १२ पृष्ठ १०६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च देशज

❀

१०२. केल्हणदेव का अभिलेख

क. झांवर

ख. भाद्रपद सुदि १० वि० सं० १२२७

ग. सप्तसत भूमि के प्रधान नगर नाड्डूल (नाडोल) के महाराजाधिराज परमेश्वर केल्हणदेव के शासन काल में माण्डव्यपुर के शासक महाराज पुत्र श्री चामुण्डराज के समय नांनद, आत्मज सनध, द्वारा १ द्रम्म दान दिए जाने का उल्लेख है। दान कर्त्ता की जाति राठोड़ बताई गई है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०४ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत (देशज)

❀

१०३. कुमारपाल का अभिलेख

क. नाडलाई

ख. मार्गशीर्ष सुदि १३ सोमवार वि० सम्वत् १२२८ [अभिलेख में '१२' अंकों में ही लिखा है व २८ को अक्षर 'अठावीस' -'अष्टाविंश' लिखा है।

ग. अभिलेख में कहा गया है कि कुमारपाल (चालुक्य) के समय में नाडोल का शासक (चौहान) केल्हण था और लक्ष्मण वोरिपद्मक (वोर्डी) का राणक था और अणसिंह सोनाण ग्राम का ठाकुर था।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४४ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ४८ पर सम्पादित । दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ६८ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१०४. राणक काक का शिवमन्दिर अभिलेख

क. आउवा

ख. आश्विन वदि १ बुधवार वि० सम्वत् १२२९ [७ अक्टूबर सन् ११७२ ई०]

ग. अभिलेख में सोनपाल के पुत्र राणक काक द्वारा कामेश्वर के मन्दिर को दिए जाने वाले दान का उल्लेख है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५० पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१०५. स्मारक अभिलेख

क. पाल

ख. वैशाख वदि १२ बुधवार वि० सं० १२३२

ग अभिलेख में धर्टक जाति व पोचस गोत्र के वांवण के पुत्र गोल्हण की मृत्यु का उल्लेख हुआ है ।

घ. नैरगीनोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०५ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१०६. लखणपाल व अभयपाल का अभिलेख

क. नाडलाई

ख. वैशाख सुदि ३ वि० सम्वत् १२३३

ग. अभिलेख में सनाणक स्थान को राजकुमार लखणपाल व अभयपाल के संयुक्त अधिकार में बताया है । यह भी कहा गया है कि इस समय नाडोल का शासक केल्हणदेव था ।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५० व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ७० पर सम्पादित व पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २३१ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

१०७. लखणपाल व अभयपाल के अभिलेख

क. लालराई

ख. ज्येष्ठ वदि १३ गुरूवार वि० सम्वत् १२३३

ग. अभिलेख में कीतिपाल (नाडोल के शासक केल्हणदेव चौहान का भाई) के पुत्रों लखणपाल व अभयपाल, जो सिनाणव के अधिकारी (भोक्तृ) थे व महारानी महिबलदेवी द्वारा संयुक्त रूप से दिए जाने वाले दान का उल्लेख है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ४९ व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ७० पर सम्पादित। पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २३१ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१०८. सच्चियाय माता मन्दिर अभिलेख

क. ओसियां

ख. चैत्र सुदि १० गुरूवार वि० सं० १२३४

ग. बडांसु गोत्र के साधु वहुदा, इसके पुत्र जाल्हण व इसकी पत्नि सूहव, इनके पुत्र साधु माल्हा व दोहित्र साधु गयपाल द्वारा सचियायमाता के मन्दिर में प्रतिमाओं के बनवाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

१०९. चालुक्य भीमदेव द्वितीय का अभिलेख

क. किराड़ू (वाड़मेर)

ख. कार्तिक सुदि १३ गुरूवार वि० सं० १२३५ [२६ अक्टूबर सन् ११७८ ई०]

ग. अभिलेख में अणहिल पाटक के महाराजाधिराज श्री भीमदेव व उसके सामन्त (चौहान) राजपुत्र श्री मदन ब्रह्मदेव (किरातकूप का शासक) व शासन का संचालक तेजपाल का नामोल्लेख हुआ है। फिर कहा है कि तेजपाल की पत्नि मानस (?) ने, तुरुष्कों द्वारा प्रतिमा को तोड़ दिए जाने पर, नवीन प्रतिमा स्थापित की।

घ. विश्वेश्वरनाथ रेउ द्वारा इं०ए० में सम्पादित व भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ० स०, वे०स० १९०६-७ पृष्ठ ४२ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

११०. महाराज केल्हणदेव का सच्चियाय माता मन्दिर अभिलेख

क. ओसियां

ख. कार्तिक सुदि १ वुधवार वि० सम्वत् १२३६

ग. अभिलेख में महाराजाधिराज केल्हणदेव (नाडोल चौहान) का नामोल्लेख हुआ है व उसके पुत्र सिंहविक्रम को माण्डव्यपुर का शासक बताया गया है।

घ पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ १९८ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१११. चौहान केल्हणदेव का अभिलेख

क. सांडेराव (जिला पाली)

ख. कार्तिक वदि २ वुधवार वि० सम्वत् १२३६

ग. महाराज केल्हणदेव के राज्य काल में रानी जाल्हणदेवी द्वारा, उसकी भुक्ति में स्थित, पार्वश्नाथ के मन्दिर को दिए जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०ज० १९०८-९ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित व

ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५२ पर सम्पादित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २२९ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

११२. महाराज पृथ्वीदेव चौहान का अभिलेख

क. फलोदी

ख. प्रथम आषाढ़ सुदि १० बुधवार वि० सं० १२३६

ग. महाराज पृथ्वीदेव के शासन काल में परमार वंश के कौडिण्य गोत्रीय पाल्हण के पुत्र व विक्रमपुर के मण्डलेश्वर राणा कतिआ का नामोल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०वं०, खण्ड XII पृष्ठ ९३ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. देशज मिश्रित संस्कृत

❀

११३. सती स्मारक अभिलेख

क. ऊंस्त्रा (जिला जोधपुर)

ख. चैत्र वदि ६ सोमवार वि० सम्वत् १२३७

ग. अभिलेख में कहा गया है कि गुहिल राणा तिहुणपाल की मृत्यु पर उसकी रानियाँ, वोडानी, पल्हणदेवी व मातादेवी, सती हुई ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०,वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

११४. महाराज समरसिंहदेव का अभिलेख

क. जालोर

ख. वैशाख सुदि ५ गुरूवार वि० सं० १२३९ [२८ अप्रेल सन् ११८३ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि चौहान वंशीय महाराज अणहिल के वश में महाराज अल्हण हुआ, उसका पुत्र कीर्तिपाल, व उसका पुत्र महाराज समरसिंह

था। समरसिंह के मामा राजपुत्र जोजल ने पिल्विहिकों के तस्कर को प्रतिबन्धित कर दिया।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०ग्रा०स०, वे०स० १६०८–६ पृष्ठ ३५ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५३ पर सम्पादित। पूर्णचन्द नाहर द्वारा जैं०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २३८ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

११५. जयतसिंहदेव का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. अश्विन वदि १० बुधवार वि० सम्वत् १२३६ [२५ अगस्त सन् ११८२ ई० अथवा १२ अक्टूम्बर सन् ११८३ ई०]

ग. अभिलेख में (नाडोल चौहान) महाराजपुत्र जयतसिंहदेव का उल्लेख हुआ है।

घ. जेक्सन द्वारा बों०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४७४ पर सम्पादित व भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०ग्रा०स०, वे०स० १६०७-८ पृष्ठ ३८ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

११६. केल्हणदेव का अभिलेख

क. पाल (जोधपुर)

ख. वैशाख सुदि ७ वि० सं० १२४१

ग. अभिलेख में कहा गया है कि सोढलदेव (मुनि जिनविजय ने इसे मोढ़लदेव पढ़ा है।), जो महाराज केल्हणदेव का पुत्र था, घंघाणकपद्र का जागीरदार था व यशोवीर पल्ल (पाल) का शासक था। ये दोनों ही स्थान माण्डव्यपुर (मण्डोर) के अधीन थे।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रा०ए०सो०बं० खण्ड X पृष्ठ ४०७ पर सम्पादित, मुनि जिनविजय द्वारा प्रा० जै०ले०सं० में लिप्यन्तरित व अनुदित—लेख संख्या ४२६

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

११७. स्मारक अभिलेख

क. पाल (जोधपुर)

ख. माघ सुदि ६ शुक्रवार वि० सम्वत् १२४२ [३१ जनवरी सन् ११८६ ई०]

ग. धंघल जातीय पुष (खुख) के पौत्र व सोढा के पुत्र धुधा की मृत्यु का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है। स्मारक गोवर्धण मोहिया ने बनवाया।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०वं० खण्ड XII पृष्ठ १०५ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

११८. सोलंकी भीमदेव का अभिलेख

क. सांचोर

ख. वैशाख वदि ५ शनिवार वि० सं० १२४२ [२३ मार्च सन् ११८५ ई]

ग. सत्यपुर (सांचोर) में राज श्री भीमदेव (द्वितीय) के शासन काल में उपकेश (ओसवाल) जाति के भण्डारी जगसींह के पौत्र, भण्डारी पाल्हा के पुत्र छोधा के बड़े भण्डारी तोम की पत्नि धासकि द्वारा महावीर मन्दिर की चतुष्किका के जीर्णोद्धार करवाए जाने का उल्लेख अभिलेख में हुआ है।

घ. सुमेर रि० १९३६ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

११९. समरसिंह का अभिलेख

क. जालोर

ख. वि० सम्वत् १२४२

ग. अभिलेख में (सोनगिरा चौहान) समरसिंहदेव का नाम्मोलेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५५ पर सम्पादित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २३९ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१२०. स्मारक अभिलेख

क. पाल

ख. पौष वदि १४ सोमवार वि० सं० १२४४ [३० नवम्बर सन् ११८७ ई०]

ग. धार्कट जाति व पोचस गोत्रीय समधर के पुत्र की मृत्यु एवं पुत्र वधु के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

१२१. जैन मन्दिर अभिलेख

क. पाल (जोधपुर)

ख. माघ सुदि १० सोमवार वि० सम्वत् १२४४ [३ जनवरी सन् ११८८ ई०]

ग. मन्दिर से सम्बन्धित।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड X पृष्ठ ४१० पर सम्पादित।

ङ. ....

च. देशज मिश्रित संस्कृत

❀

१२२. स्मारक अभिलेख

क. पाल (जोधपुर)

ख. चैत्र वदि १ सोमवार वि० सं० १२४४ [१५ फरवरी सन् ११८८ ई०]

ग. धर्कट जाति के दासार गोत्रीय कोलिया, घणवा सुत की मृत्यु का उल्लेख अभिलेख में हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०५ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

१२३. जैन मन्दिर अभिलेख

क. जसोल (बाड़मेर)

ख. कार्तिक वदि २ वि० सम्वत् १२४६

ग. अभिलेख खेट्ट (खेड़) के भानदेवाचार्य के गच्छ के महावीर स्वामी के मन्दिर से सम्बन्धित है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६११-१२ पृष्ठ ५४ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१२४. जैन मन्दिर अभिलेख

क. पाल (जोधपुर)

ख. वैशाख सुदि ४ शुक्रवार वि० सं० १२४८ [१७ अप्रेल सन् ११६२ ई०]

ग. मन्दिर से सम्बन्धित दान का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है। दानकर्त्ता के रूप में किसी धिरादव नामक व्यक्ति का पुत्र यशचन्द्र तथा पुत्री दूदा का नामोल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड X पृष्ठ ४१० पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१२५. सती स्मारक अभिलेख

क. गंगाणा देवल (पाल और झांवर के मध्य)

ख. वैशाख सुदि ४ वि० सं० १२४८

ग. यशचन्द व उसकी बहिन दूदी, जो धिरादव के पुत्र पुत्री थे, की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित (व्यक्तिगत संग्रह)।

ङ. ....

च. देशज

❀

१२६. स्मारक अभिलेख

क. उंस्त्रा (जोधपुर)

ख. ज्येष्ठ सुदि ६ सोमवार वि० सम्वत् १२४८ [४ मई सन् ११६२ ई०]

ग. गुहिलौत्र (गहलोत) राणा मोतीश्वर की मृत्यु पर उसकी मोहिल वंशीय रानी राजी के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. देशज

❀

१२७. सचियायमाता मन्दिर अभिलेख

क. ओसियां

ख चैत्र सुदि १३ वि० सम्वत् १२४८

ग. महिल के पुत्र श्री........, पुत्र राणा पघिड़त, पुत्र राणा खागरवध, पुत्र राजपुत्र द्वारा सचियायमाता के मन्दिर के निमित्त दिए जाने वाले दान का उल्लेख।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित (व्यक्तिगत संग्रह)।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१२८. स्मारक अभिलेख

क. घटियाला (जोधपुर)

ख. कार्तिक सुदि १ रविवार वि० सं० १२४८

ग. अभिलेख में दुरपाल की पुत्री हुणदेवी का नामोल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१२९. जैन मन्दिर अभिलेख

क. पाल (जोधपुर)

ख. कार्तिक वदि १ वि० सं० १२५०

ग. अभिलेख में माण्डव्यपुर भुक्ति के शासक (नाडोल चौहान) महाराज पुत्र सोघल देव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड X पृष्ठ ४०६ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३०. सती स्मारक अभिलेख

क. बड़लू (जोधपुर)

ख. **श्रावण वदि ११ मंगलवार वि० सं० १२४६**

ग. पंवार वंशीय राणा वारुना (?) के पुत्र नाल्ह एवं पुत्र वधु सोनलदेवी का नामोल्लेख हुआ है । सम्भवतः नाल्ह की मृत्यु पर सोनलदेवी सती हुई होगी ।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३१. जयतसींहदेव का अभिलेख

क. सादड़ी (जिला पाली)

ख. **आषाढ़ सुदि ११ मंगलवार वि० सं० १२५१**

ग. अभिलेख में नदूल (नाडोल) के महाराजाधिराज जयतसींहदेव के शासन काल में श्री लाखण द्वारा मन्दिर के निमित्त दिए जाने वाले दान का उल्लेख है ।

घ. सुमेर रि० १६३८ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३२. महाराज जयतसिंहदेव का अभिलेख

क. सादड़ी (जिला पाली)

ख. **वि० सं० १२५१**

ग. केल्हण के पुत्र जयतसिंहदेव का नामोल्लेख हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स०, १६०७-८ पृष्ठ ३८ व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ७३ पाद टिप्पणी २ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३३. जैन मन्दिर अभिलेख

क. जालोर

ख. ज्येष्ठ सुदि ११ वि० सं० १२५६

ग. अभिलेख में जैन मन्दिर की सजावट किये जाने के सम्बन्ध में उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५५ पर सम्पादित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २३९ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३४. नाणा अभिलेख

क. नाणा (जिला पाली)

ख. माघ सुदि ७ शुक्रवार वि० सं० १२५७ [१२ जनवरी सन् १२०१ ई०]

ग. अभिलेख में एक कपिला को वनाए रखने के लिए किसी कायस्थ द्वारा दिये जाने वाले दान का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४९ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३५ महाराज सामन्तसिंह का अभिलेख

क. वामणेरा (जिला पाली में स्थित कोरटा का एक भाग)

ख. माघ सुदि ९ शुक्रवार वि० सं० १२५८ [४ जनवरी सन् १२०२ ई०]

ग. अभिलेख में (गुहिल) महाराजा सामन्तसिंह का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित।

ङ. ....

च संस्कृत

❀

१३६. गुहिल महाराजा सामन्तसिंह का अभिलेख

क. वामणेरा (जिला पाली)

ख. चैत्र वदि ३ सोमवार वि० सम्वत् १२५८ [११ फरवरी सन् १२०२ ई०]

ग. अभिलेख में महाराजा सामन्तसिंह के शासनकाल का उल्लेख हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०,वे०स० १६०८-६ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३७. महाराज सामन्तसिंह का अभिलेख

क. सांडेराव (जिला पाली)

ख. चैत्र सुदि १३ शुक्रवार वि० सम्वत् १२५८ [८ मार्च सन् १२०२ ई०]

ग, अभिलेख में महाराज सामन्तसिंह (गुहिल) के शासन काल का उल्लेख हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०८-६ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३८. महाराज सामन्तसिंह का अभिलेख

क. बामणेरा (जिला पाली)

ख. वैशाख सुदि १२ रविवार वि० सं० १२५८ [५ मई सन् १२०२ ई०]

ग. महाराज सामन्तसिंह (गुहिल वंशीय) के शासन काल का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०८-६ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१३९. सोनगरा चौहान उदयसिंह का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. वि० सम्वत् १२६२ [सन् १२०५ ई०]

ग. लेख में कहा गया है कि इस समय श्रीमाल (भीनमाल) पर महाराज श्री उदय सिंहदेव का शासन था ।

घ. जेक्सन द्वारा बो०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४७४ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४०. धांधलदेव का अभिलेख

क वेलार (जिला पाली)

ख. फाल्गुन सुदि ७ गुरूवार वि० सम्वत् १२६५ [१२ फरवरी सन् १२०६ ई०]

ग. धांधलदेव के शासन काल का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २१६ व जिनविजय द्वारा प्रा० जै०ले०सं० संख्या ४०३ पर प्रकाशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४१. जैन मन्दिर अभिलेख

क. जालोर

ख. दीपोत्सव दिन सं० १२६८

ग. अभिलेख में उक्त तिथि को पूर्णदेवसूरी के शिष्य श्री रामचन्द्राचार्य द्वारा पार्श्वनाथ मन्दिर के नवनिर्मित मण्डप पर स्वर्ण-कलश की प्रतिष्ठा किए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५५ पर सम्पादित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २३६ पर प्रकाशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४२. सुल्तान सम्सुद्दीन अल्तमश गोरी का अभिलेख

क. मंगलाना (तहसील परवतसर)

ख. ज्येष्ठ वदि ११ रविवार वि० सं० १२७२ [२६ अप्रेल सन् १२१५ ई०]

ग. अभिलेख में सुरत्राण समसदन गोर को योगिनीपुर (दिल्ली) का शासक बताया है व वलणदेव को रणस्थम्भपुर गढ़ (रणथम्भोर दुर्ग) का गढ़ पति कहा गया है। वलणदेव के आधीन दधीच वंशीय महामण्डलेश्वर कदुवराजदेव के पौत्र व पद्मसींहदेव के पुत्र महाराज पुत्र जयत्रसिंहदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. रामकर्ण आसोपा द्वारा ए०इं० खण्ड XII पृष्ठ ५८ व भण्डारकर द्वारा प्रो०रि० आ०स०, वे०स० १९०६-७ पृष्ठ ४० पर निर्देशित व रामकर्ण आसोपा द्वारा इं०ए० खण्ड XLI पृष्ठ ८७ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४३. सोनगिरा चौहान उदयसिंह का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. भाद्रपद सुदि ६ शुक्रवार वि० सम्वत् १२७४ [३१ अगस्त सन् १२१८ ई०]

ग. अभिलेख में इस समय श्री श्रीमाल (भीनमाल) में श्री महाराजाधिराज श्री उदयसिंहदेव के शासन का उल्लेख हुआ है ।

घ. जेक्सन द्वारा बॉ०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४७५ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४४. तोपखाना अभिलेख

क. जालोर

ख. वैशाख सुदि १५ रविवार (?) वि० सं० १२८२

ग. प्रस्तुत अभिलेख में (सोनगिरा चौहान) उदयसिंह का नामोल्लेख हुआ है ।

घ. सुमेर रि० १९३१ पृष्ठ ७ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४५. धांधलदेव का अभिलेख

क. नाणा (जिला पाली)

ख. वि० सं० १२८३ [सन् १२२६ ई०]

ग. अभिलेख में अणहिलनगर के शासक चालुक्य अजयपालदेव के पुत्र भीमदेव (द्वितीय) के शासन काल का उल्लेख हुआ है व छाहम (?) विसधवल के पुत्र धांधल देव को (चालुक्य) भीमदेव (द्वितीय) का सामन्त कहा गया है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४९ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४६. सोमसिंहदेव का अभिलेख

क. नाणा

ख. माघ वदि १५ सोमवार वि० सं० १२९०

ग. प्रस्तुत अभिलेख में चन्द्रावती के शासक (परमार) महाराजाधिराज सोमसिंहदेव का नामोल्लेख हुआ है। सोमसिंह के पुत्र कान्हड़देव के कृपापात्र लक्ष का नाणक (नाणा) पर अधिकार होने का भी उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४९ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४७. सती स्मारक अभिलेख

क. किणसरिया (परवतसर से लगभग ४ मील की दूरी पर स्थित एक पहाड़)

ख. ज्येष्ठ सुदि १३ सोमवार वि० सं० १३००

ग. कीर्तिसिंह के पुत्र दधिचिक विक्रम की मृत्यु व उसकी रानी नैलादेवी के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है व कहा गया है कि यह स्मारक स्तम्भ उनके पुत्र जगधर ने स्थापित करवाया।

घ. रामकर्ण आसोपा द्वारा ए०इं० खण्ड XII पृष्ठ ५८ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१४८. सोनगरा चौहान उदयसिंह का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. वि० सम्वत् १३०५ [सन् १२४८ ई०]

ग. अभिलेख में महाराजाधिराज श्री उदयसिंह का श्री श्रीमाल (भीनमाल) में शासन होने का उल्लेख हुआ है।

घ. जेक्सन द्वारा बो०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४७६ पर सम्पादित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१४९. सोनगरा चौहान उदयसिंह का अभिलेख

क. भीनमाल
ख. आश्विन वदि १४ वि० सम्वत् १३०६
ग. अभिलेख में महाराजाधिराज श्री उदयसिंह के शासन काल का उल्लेख हुआ है।
घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५६ पर सम्पादित।
ङ. वाहड़ के पुत्र ध्रुव नागुल द्वारा लिखित।
च. संस्कृत

❀

१५०. सुरभि लेख

क. नाणां
ख. आषाढ़ सुदि ५ गुरूवार वि० सम्वत् १३१४
ग. चक्रस्वामी के मन्दिर के निमित्त दिए जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।
घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४९ पर निर्देशित।
ङ. ....
च. देशज

❀

१५१. सुंधा माता अभिलेख

क. सूंधा पहाड़ी (जिला जालोर)
ख. ....३ वि० सं० १३१९
ग. चहमान वंशीय शासकों की लक्ष्मण से चाचिगदेव तक की वंशावली निम्नानुसार दी गई है—चौहान वंश में शाकंभरी (सांभर) का कुमार लक्ष्मण नडुल (नाडोल) का शासक हुआ। इसका पुत्र सोमित था, जिसने कि अर्बुद (आबू)

के शासक के ऐश्वर्य को नष्ट किया । इसका पुत्र वलिराज था जिसने मुञ्जराज की सेना को पराजित किया । इसका चचेरा भाई महिन्दु (महेन्द्र) था । महिन्दु का पुत्र अश्वपाल था, अश्वपाल का पुत्र अहिल था । अहिल ने गुर्जर शासक भीम को पराजित किया व इसके चाचा अणहिल्ल ने भी इसी गुर्जराधिपति को पराजित किया, शाकम्भरी को जीता मालवा के शासक भोज के सेनापति साधा और तुरुष्कों (तुर्कों) को पराजित किया । इसका पुत्र बलप्रसाद था, जिसने राजा कृष्णदेव को कारागार से मुक्त करने हेतु भीम (चालुक्य भीमदेव प्रथम) को बाध्य किया । इसके भाई जिन्दुराज ने सांडेराव में सफलता पूर्वक युद्ध किया । इसका पुत्र पृथ्वीपाल था जिसने गुर्जर नरेश कर्ण की सेना को पराजित किया । इसके भाई योजक ने बलात् अणहिलपुर पर अधिकार कर लिया । इसके भाई आसराज ने सिद्धराज को मालव प्रदेश में सहायता प्रदान की । इसका पुत्र अल्हादन था जिससे कि भयभीत हो गुर्जरराज ने सुराष्ट्र में उपद्रव बन्द कर दिए । इसके पुत्र केल्हणदेव ने दाक्षिणात्य राजा भीलिम को पराजित किया व तुरुष्कों का नाश किया । इसके भाई कीर्तिपाल ने किरातकूप के अधिपति आसल को पराजित किया व कसहृद में तुरुष्कों की सेना को हराया । इसकी राजधानी जवालीपुर (जालोर) थी । इसके पुत्र समरसिंह ने कनकाचल (स्वर्णगिरी) पर दुर्ग की प्राचीर का निर्माण करवाया व समरपुर नामक ग्राम बसाया । इसके पुत्र उदयसिंह का शासन नड्डुल (नाडोल), जाबालीपुर (जालोर), माण्डव्यपुर (मण्डोर) वाग्भटमेरू, सुरचण्ड रतहृड, खेड, रामसैन्य, श्रीमाल (भीनमाल), रत्नपुर, सत्यपुर (सांचोर) व अन्य स्थानों पर था । इसने उन तुरुष्कों को पराजित किया जो गुर्जराधिपति द्वारा पराजित नहीं हुए थे और सिंधु के राजा को नष्ट किया । इसकी पत्नि प्रह्लादनदेवी के दो पुत्र चचिगदेव व चामुण्डराज हुए । चचिगदेव ने गुर्जराधिपति वीरम को पराजित किया व सल्य, पट्टुक, संग व नहर का पराजित किया । श्रीमाल में कुछ कर लगाए । चचिगदेव सुंधा पहाड़ी पर आया व कुछ दान दिया ।

घ. कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड IX पृष्ठ ७४ पर सम्पादित ।

ङ. देवाचार्य के शिष्य रामचन्द्र व इसके शिष्य सूरी जयमंगल द्वारा सृजित, वैद्य विजयपाल के पुत्र नांवसीह द्वारा लिखित व सूत्रधार जिसपाल के पुत्र जिसरविन द्वारा उत्कीर्ण ।

च. संस्कृत

❀

१५२. जैन मन्दिर अभिलेख

क. जालोर

ख. माघ सुदि १ सोमवार वि० सम्वत् १३२०

ग. अभिलेख में महावीर स्वामी के खिम्वरायेश्वर मन्दिर के प्रमुख पुजारी भट्टारक रावल लक्ष्मीधर द्वारा दिये जाने वाले दान का उल्लेख है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०८–६ पृष्ठ ५५ पर निर्देशित व पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४० पर लिप्यन्तरित।

ङ. ····

च. संस्कृत

❀

१५३. भीनमाल अभिलेख

क. भीनमाल

ख. माघ सुदि ६ वि० सं० १३२०

ग. ····

घ. जेक्सन द्वारा बों०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४७७ पर सम्पादित।

ङ. सुभट द्वारा सृजित, देवक द्वारा लिखित व सूत्रधार भीमसींह द्वारा उत्कीर्ण।

च. सस्कृत

❀

१५४. चौहान भीमदेव का अभिलेख

क. सांचोर

ख. वैशाख वदि १३ वि० सं० १३२२

ग. अभिलेख में सत्यपुर (सांचोर) के शासक भीमदेव के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०७-८ पृष्ठ ३५ पर निर्देशित।

ङ. ····

च. संस्कृत

❀

१५५. चच्चिगदेव का अभिलेख

क. जालोर

ख. मार्गशीर्ष सुदि ५ बुधवार वि० सम्वत् १३२३ [३ नवम्बर सन् १२६६ ई०]

ग. अभिलेख में (सोनगिरा चौहान) चच्चिगदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०,वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५५ पर निर्देशित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४० व जिनविजय द्वारा प्रा०जै० ले०सं० भाग २ लेखाङ्क ३६३ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. सस्कृत

१५६. महाराजकुल चच्चिगदेव चौहान का लेख

क. भीनमाल

ख. आश्विन वदि १ मंगलवार वि० सम्वत् १३२८

ग. महाराज चच्चिगदेव द्वारा श्री आहुडेश्वर के मन्दिर को दिए जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. रत्नचन्द्र अग्रवाल द्वारा ज०वि०रि०सो० खण्ड XL भाग ४ पृष्ठ १ पर सम्पादित

ङ. ....

च. संस्कृत

१५७. राव सीहा का स्मारक लेख

क. वीठू

ख. कार्तिक वदि १२ सोमवार वि० सं० १३३०

ग. सेता के कंवर (पुत्र) राठड़ (राठौड़) सीहा की मृत्यु का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५७ पर निर्देशित व इं०ए० खण्ड XL पृष्ठ १८१ पर सम्पादित तथा मांगीलाल व्यास 'मयंक' द्वारा अन्वेषणा भाग १ अंक १ पृष्ठ ४५ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. देशज

१५८. उदयसिंह का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. आश्विन सुदि ४ वि० सम्वत् १३३०

ग. अभिलेख में (सोनगरा चौहान) राजाधिराज उदयसिंहदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. जैक्सन द्वारा बॉ०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४७८ पर सम्पादित।

ङ. सुभट द्वारा सृजित, वैदक द्वारा लिखित व गोषसीह द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

१५९. तोपखाना अभिलेख

क. जालोर

ख. आश्विन सुद........वि० सं० १३३१

ग. प्रस्तुत अभिलेख में (सोनगिरा चौहान) चचिगदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. सुमेर रि० १९३१ पृष्ठ ७ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६०. सोनगरा चौहान चचिगदेव का अभिलेख

क. रतनपुर

ख. माघ सुदि १ वि० सं० १३३२

ग. महामण्डलेश्वर राजा चचिगदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६१. जैन अभिलेख

क. रतनपुर

ख. वि० सम्वत् १३३३

ग. अभिलेख में (सोनगिरा चौहान) चचिगदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४८ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१६२. महाराजकुल चच्चिगदेव का अभिलेख

क. भीनमाल
ख. आश्विन सुदि १४ सोमवार वि० सं० १३३३
ग. अभिलेख में महाराजकुल चच्चिगदेव के शासनकाल का उल्लेख हुआ है।
घ. जेक्सन द्वारा बों०गे० भाग १ खण्ड १ पृष्ठ ४८० पर सम्पादित व जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ लेखाङ्क ४८० पर लिप्यन्तरित।
ङ. सुभट द्वारा सृजित व गोगा के अनुज सूत्रधार भीमसींह द्वारा उत्कीर्ण।
च. संस्कृत

❀

१६३. महाराज चच्चिग का अभिलेख

क. भीनमाल
ख. आश्विन वदि ८ वि० सम्वत् १३३४
ग. अभिलेख में चौहानों की निम्न वंशावली दी गई है—महाराजकुल समरसिंह, इसका पुत्र उदयसिंह, इसके पुत्र वहधसिंह, चचिगदेव व चामुण्डराजदेव। इसके अतिरिक्त श्री श्रीमाल (भीनवाल) पर महाराजकुल चचिग के शासन का भी उल्लेख हुआ है।
घ. जेक्सन द्वारा बों०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४८१ पर सम्पादित।
ङ. नगुल के पुत्र देदक द्वारा सृजित व नाना के पुत्र देपाल द्वारा उत्कीर्ण।
च. संस्कृत

❀

१६४. जैन मन्दिर अभिलेख

क. हथुण्डी
ख. श्रावण वदि १ सोमवार वि० सं० १३३५ [२९ जुलाई सन् १२८० ई०]
ग. महावीर के मन्दिर को दिए जाने वाले दान का उल्लेख इसमें हुआ है।
घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित।
ङ. ....
च. देशज

❀

१६५. महाराजकुल सांवतसिंह का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. आश्विन सुदि १ वि० सं० १३३९

ग. अभिलेख में महाराजकुल सांवतसिंह के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. जेक्सन द्वारा बॉ०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४८३ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६६. रूपादेवी का अभिलेख

क. बुर्त्र

ख. ज्येष्ठ वदि ७ सोमवार वि० सं० १३४० [८ मई सन् १२८४ ई०]

ग. समरसिंह का पुत्र उदयसिंह था। उदयसिंह का पुत्र चहुमान चच्च था। चच्च की पत्नि लक्ष्मीदेवी से रूपादेवी का जन्म हुआ जिसका विवाह तेजसिंह से हुआ। रूपादेवी के गर्भ से क्षेत्रसिंह का जन्म हुआ।

घ. कीलहार्न द्वारा ए०इं० खण्ड IV पृष्ठ ३१३ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६७. महाराजकुल सामन्तसिंहदेव का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. आश्विन वदि १० रविवार वि० सं० १३४२ [१५ सितम्बर सन् १२८६ ई०]

ग. महाराजकुल सामन्तसिंह के शासनकाल का उल्लेख हुआ है।

घ. जेक्सन द्वारा बॉ०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४८५ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६८. मांगलिया राव सीहा का स्मारक अभिलेख

क. ऊंस्त्रा (जिला जोधपुर)

ख. वैशाख वदि ११ सोमवार वि० सं० १३४४

ग. राणा तिहुणपाल के पुत्र मांगलिया राव सीहा की मृत्यु व उसकी रानी हमीरदेवी के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. देशज

❀

१६९. राव टीया का स्मारक अभिलेख

क. ऊंस्त्रा

ख. वैशाख वदि ११ सोमवार वि० सं० १३४४

ग. रावसीहा के पुत्र राव टीया की मृत्यु व उसकी पत्नि भोमलदेवी के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. देशज

❀

१७०. महाराज सामन्तसिंह का अभिलेख

क. सांचोर

ख. कार्तिक सुदि १४ सोमवार वि० सं० १३४५ [८ नवम्बर सन् १२८८ ई०]

ग. अभिलेख में (सोनगरा चौहान) महाराजकुल सामन्तसिंहदेव के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स०, १९०७-८ पृष्ठ ३५ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५८ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१७१. सामन्तसिंह का जैन मन्दिर अभिलेख

क. हंथुडी

ख. प्रथम भाद्रपद वदि ९ शुक्रवार वि० सं० १३४५ [२६ अगस्त सन् १२८९ ई०]

ग. अभिलेख में (सोनगिरा चौहान) महाराजकुल सामन्तसिंह के राज्य काल का उल्लेख हुआ है, जो नड्डुल (नाडोल) का शासक था।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २३३ तथा मुनि जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ लेखाङ्क ३२० पर लिप्यन्तरित ।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१७२. सामन्तसिंहदेव का अभिलेख

क. भीनमाल
ख. माघ वदि २ सोमवार वि० सं० १३४५ [१० जनवरी सन् १२८९ ई०]
ग. अभिलेख में (सोनगिरा चौहान) महाराजकुल सामन्तसिंहदेव के राज्य काल का उल्लेख हुआ है ।
घ. जेक्सन द्वारा बों०गे० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४८६ पर सम्पादित ।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१७३. सामन्तसिंहदेव का जैन अभिलेख

क. रतनपुर
ख. चैत्र सुदि १५ गुरूवार वि० सम्वत् १३४८ [३ अप्रेल सन् १२९२ ई०]
ग. सामन्तसिंहदेव के शासन काल का उल्लेख हुआ है ।
घ. पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४९ पर लिप्यन्तरित ।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१७४. सामन्तसिंहदेव का मन्दिर अभिलेख

क. बाग़ेरा
ख. आषाढ़ वदि ५ शुक्रवार वि० सम्वत् १३४८ [२० जून सन् १२९२ ई०]
ग. महाराजकुल सामन्तसिंहदेव के शासन का उल्लेख हुआ है ।
घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित ।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१७५. सामन्तसिंहदेव का अभिलेख

क. जूना

ख. वैशाख सुदि ४ वि० सं० १३५२

ग. महाराजकुल सामन्तसिंह के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०६-७ पृष्ठ ४० पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ५९ पर सम्पादित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४४ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१७६. तोपखाना अभिलेख

क. जालोर

ख चैत्र वदि ५ गुरूवार सम्वत् १३५३

ग. चौहान सामन्तसिंह के शासनकाल का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. सुमेर रि० १९३१ पृष्ठ ७ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१७७. महाराजकुल सामन्तसिंहदेव का अभिलेख

क. जालोर

ख. वैशाख वदि ५ गुरूवार वि० सम्वंत् १३५३

ग. महाराजकुल सामन्तसिंह का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५५ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ६१ पर सम्पादित। पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० खण्ड १ पृष्ठ २४० पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१७८. महाराजकुल सामन्तसिंह व कान्हड़देव का अभिलेख

क. चोहटन

ख. फाल्गुन वदि ११ वि० सं० १३५५

ग. अभिलेख में महाराजकुल सामन्तसिंह व कान्हड़देव के संयुक्त शासन का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०ग्रा०स०, वे०स० १९०६-७ पृष्ठ ४३ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ६० पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१७९. सामन्तसिंह का हस्तिकुण्ड अभिलेख

क. हथूण्डी (जिला-पाली)

ख. चैत्र वदि ४ सोमवार सम्वत् १३५६

ग. नाडोल मण्डल के महाराजकुल सामन्तसिंह (चौहान) के शासनकाल में महावीर के मन्दिर के निमित्त नेचापद्र (नेचवा) ग्राम की माण्डवीं से ४० द्रम्म दान स्वरूप दिये जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है। फिर कहा गया हैं कि राता महावीर के निमित्त पूर्व प्रदत्त २४ वीसलप्रिय द्रम्मों की परास्परा को कायम रखा जायगा। अभिलेख में इस कार्य के सम्पादन कर्त्ता पंचकुल का भी उल्लेख है।

घ. रत्नचन्द्र अग्रवाल द्वारा वरदा वर्ष १४ अंक ४ पृष्ठ ३ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१८०. महाराजकुल सामन्तसिंहदेव का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. फाल्गुन सुदि १५ वि० सम्वत् १३५६ (चन्द्र ग्रहण)

ग. महाराजकुल सामन्तसिंहदेव के पुत्र राजन् कान्हड़देव द्वारा दिए जाने वाले दान का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१८१ अलाउद्दीन व ताजुद्दीन का अभिलेख

क. पंडुखा
ख. वैशाख वदि ६ वि० सम्वत् १३५८
ग. अभिलेख में जोगिनीपुर (दिल्ली) के शासक अलावदी (अलाउद्दीन) व उसके मेडान्तक (मेड़ता) स्थित प्रतिनिधि ताजदीअली (ताजुद्दीन अली) का नामोल्लेख हुआ है।
घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०९-१० पृष्ठ ६१ पर निर्देशित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१८२. तोपखाना अभिलेख

क. जालोर
ख. चैत्र वदि १३ सोमवार वि० सं० १३६१
ग. ....
घ. सुमेर रि० १९३१ पृष्ठ ७ पर निर्देशित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१८३. मन्दिर अभिलेख

क. चौहटन
ख. पौष सुदि ६ गुरुवार सम्वत् १३६५ [१९ दिसम्बर सन् १३०८ ई०]
ग. अभिलेख में उत्तमराशी के शिष्य धर्मराशी द्वारा मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०६-७ पृष्ठ ४३ पर निर्देशित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१८४. धूहड़ का स्मारक अभिलेख

क. तिरसिंघड़ी

ख. वि० सम्वत् १३६६

ग. आश्वत्थाम के पुत्र धूहड़ की मृत्यु का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा इं०ए० खण्ड XL पृष्ठ ३०१ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. देशज

❀

१८५. स्मारक अभिलेख

क. घड़ाव (कड़वड़)

ख. वैशाख सुदि ४ सोमवार वि० सं० १३७०

ग. श्री तीनू के पुत्र की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१८६. जगदीश मन्दिर प्रतिमा अभिलेख

क. आसोप

ख. ज्येष्ठ वदि ११ सोमवार सं० १३७३

ग. श्वेत संगमरमर की प्रतिमा के आसन पर उक्त तिथि एवं आसपाल के पुत्र राव चूण्डा का नाम उत्कीर्ण है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

१८७. सुल्तान कुतुबुद्दीन का अभिलेख

क. लाडनूं

ख. भाद्रपद वदि ३ शुक्रवार वि० सं० १३७३ [६ अगस्त सन् १३१६ ई० अथवा २६ अगस्त सन् १३१७ ई०]

ग प्रस्तुत अभिलेख में कास्यप गोत्रीय क्षत्रिय साधारण द्वारा सपादलक्ष प्रदेश की राजधानी नागपत्तन (नागोर) से साढ़े सात योजन की दूरी पर स्थित लाडनू नामक स्थान पर एक वापी खुदवाने व उसकी प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हुआ है। अभिलेख हरितान (हरियाणा) प्रदेश के नगर ढिल्ली (दिल्ली) के शासकों की निम्न नामावली वंशानुक्रम से दीं गई है—साहव्वदीन, कुत्बुदीन, समसद्दीन, पेरोजसाही, अलावदीन, मोजदीन, नसरदीन, ग्यासदीन, कुद्दी अलावदीन जो कि इस समय ढिल्ली का शासक था। कुद्दी अलावद्दीन के संबंध में कहा गया है कि उसने वंश, तिलंग, गूर्ज्जर, कर्णाट, गौडदेस, गर्ज्जदार्ज्जन के के पहाड़ी राजाओं व पांड्यों, जो कि समुद्र के किनारे पर थे, को प्रराजित किया व निज स्तम्भ बनवाया।

इसके अनन्तर राजा साधारण का वंश परिचय देते हुए कहा गया है कि "पश्चिम दिशा में इष्ठ (रामकर्ण आसोपा ने इसे उइ पढ़ा है) नामक नगर में क्षत्रिय राजा भुवनपाल रहता था जो कि कास्यप गोत्रीय था। भुवनपाल का विवाह सुशीला से हुआ, जिसके गर्भ से नाल्हड़ का जन्म हुआ था। नाल्हड़ की पत्नि जोण्हीति के गर्भ से कीर्तिपाल उत्पन्न हुआ। कीर्तिपाल की नाल्हड़ नामक पत्नि के गर्भ से साधारण का जन्म हुआ। उक्त पितृ वंश के अनन्तर राजा साधारण के मातृ परिवार का परिचय निम्नानुसार दिया है—"साधारण नामक क्षत्रिय के जौणपाल नामक पुत्र था। जौणपाल के जूमा नामक पुत्र हुआ। जूमा का विवाह श्रीमद गोत्रीय कन्या जोई से हुआ। जोई ने नाल्हड़ नामक कन्या को जन्म दिया जिसके कि गर्भ से साधारण का जन्म हुआ।"

इसके अनन्तर साधारण के श्वसुर वंश का परिचय निम्नानुसार दिया गया है—"दिवणनपुर में हरीपाल नामक क्षत्रिय रहता था। जिसका कि पुत्र सादड़ था। सादड़ के नागी नामक पुत्री थी, जिसका कि विवाह साधारण के साथ हुआ था।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०६-७ पृष्ठ ३१ पर निर्देशित व रामकर्ण आसोपा द्वारा ए०इं० खण्ड XII पृष्ठ २३ पर फलक सहित सम्पादित।

ङ. प्रशस्ति का प्रथम भाग [छन्द ३५ तक] दीक्षित कामचन्द्र द्वारा सृजित व अवशिष्ट भाग महिया के पौत्र व दालू के पुत्र गौड़ कायस्थ डांडा द्वारा सृजित। सलखण द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

१८८. सती स्मारक अभिलेख

क. घड़ाव (कड़वड़)

ख. आसोज वदि ७ वि० सम्वत् १३७३

ग. पडिहार जगसीह की मृत्यु व पडिहार (प्रतिहार) राजसींह द्वारा स्मारक बनवाने का उल्लेख।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित (व्यक्तिगत संग्रह)।

ङ. ....

च. देशज

❀

१८९. सती स्मारक अभिलेख

क. घड़ाव (कड़वड़)

ख. आश्विन वदि ७ बुद्धवार वि० सं० १३७३

ग. गोघा राणा के पुत्र महणसं (सिंह) की मृत्यु का उल्लेख हुआ है। लेख के ऊपर उत्कीर्ण प्रतिमा में एक घुड़सवार के साथ दो स्त्रियां भी प्रदर्शित है। जिससे अनुमान लगता है कि दो सतियाँ भी हुई थी।

घ. श्री दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१९०. स्मारक अभिलेख

क. घड़ाव (कड़वड़)

ख. चैत्र सुदि १४ बुधवार वि० सं० १३७५

ग. गोघा का नामोल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६१. स्मारक अभिलेख

क. डीडवाना

ख. कार्तिक वदि १५ शुक्रवार वि० सम्वत् १३७६

ग. बीहाणी हरीराम का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

१६२. सोनगिरा चौहान वणवीरदेव का अभिलेख

क. कोटसोलंकिया

ख. चैत्र सुदि १३ शुक्रवार वि० सं० १३६४ [३ अप्रेल सन् १३३८ ई०]

ग. अभिलेख में वणवीर देव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ६३ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६३. राणा करमसी का अभिलेख

क. मेड़ता

ख. कार्तिक सुदि ११ रविवार वि० सम्वत् १४०५ [२ नवम्बर सन् १३४८ ई०]

ग. अभिलेख में राणा गुहिलौत मेदड़ का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०६-१० पृष्ठ ६३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१६४. राठोड़ सोहड़ धांधलोत का अभिलेख

क. कोलू

ख. भाद्रपद सुदि ११ रविवार वि० सम्वत् १४१५ [१० सितम्बर सन् १३५७ ई०]

ग. अभिलेख में खींवड़ के पौत्र व सोभा के पुत्र धांधल राठोड़ सोहड़ द्वारा आसथान्य (आसथान) के पौत्र व धांधल के पुत्र पावू के देवस्थान का निर्माण करने का उल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०७ पर लिप्यन्तरित।
ङ. ....
च. देशज

❀

१९५. स्मारक अभिलेख

क. देवातड़ा
ख. फाल्गुन वदि १४ सं० १४३३
ग. ग्यागदे की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।
घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१९६. राजा रणवीरदेव का अभिलेख

क. नाडलाई
ख. कार्तिक वदि १४ शुक्रवार वि० सं० १४४३
ग. अभिलेख में चौहान वंशीय महाराजाधिराज वणवीर के पुत्र रणवीर का नामोल्लेख हुआ है।
घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४२ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ६३ पर सम्पादित। पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २१८ पर लिप्यन्तरित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

१९७. चौहान प्रतापसिंह का अभिलेख

क. सांचोर
ख. ज्येष्ठ वदि भृगु वि० सं० १४४४
ग. अभिलेख में पाता (प्रतापसिंह) की महारानी बाई कमला देवी के द्वारा वायेश्वर के टूटते हुए मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाने व मन्दिर के नित्य पूजा-अर्चना हेतु दिए जाने वाले दान का उल्लेख किया गया है। कमला देवी का पिता सुहड़सल (सुभट) ऊमट वंश का अलंकार था। वह वीरसीह का प्रपोत्र, माकड़ का पौत्र

व वैरिशाल्य का पुत्र था। वीरसींह को कर्पुरधारा का बताया गया है। प्रताप सिंह के वंश परिचय में कहा गया है कि "नड्डूल (नाडोल) के चौहान वंशीय लक्ष्मण की परम्परा में सोभित था, इसका पुत्र साल्ह था, जिसने कि तुरुष्कों से श्रीमाल (भीनमाल) को मुक्त कराया। इसका पुत्र विक्रमसिंह था। विक्रमसिंह का पुत्र संग्रामसिंह था, (जिसका बड़ा भाई भीम था) व संग्रामसिंह का पुत्र प्रतापसिंह था।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ३५ पर निर्देशित व ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ६५ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१९८. राव चूंडा का ताम्रपत्र

क. .... (सरदार संग्रहालय जोधपुर)

ख. माघ वदि सूर्य ग्रहण (अमावस्या) वि० सम्वत् १४५२

ग. राव चूंडा द्वारा सूर्य ग्रहण के अवसर पर जैतपुर नामक ग्राम में २०० वीघा भूमि ब्राह्मण जगरूप को प्रदान किए जाने का उल्लेख अभिलेख में हुआ है।

घ. सुमेर रि० १९३३ पृष्ठ ५ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

(नोट—डा० ओझा उक्त ताम्रपत्र को बनावटी मानते हैं। देखिए जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १ पृष्ठ २१२-१३)

❀

१९९. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. पाली

ख. सम्वत् १४५७

ग. प्रतिमा की प्रतिष्ठा का उल्लेख है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२००. राणा लाखा का अभिलेख

क. कोटसोलंकिया

ख. **आषाढ़ सुदि ३ सोमवार वि० सम्वत् १४७५ (तैस्सीतोरी ने १४४५ में पढ़ा है)**

ग. अभिलेख में राणा लाखा (मेवाड़) व स्थानीय ठाकुर मांडण का नामोल्लेख हुआ है। इसके अतिरिक्त उपकेश वंश के लिगा गोत्रीय साह कडुआ की पत्नि कमलदे व अन्य लोगों के सहयोग से पार्श्वनाथ चैत्य के मण्डप के जीर्णोद्धार किए जाने का उल्लेख है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं०, खण्ड XII पृष्ठ ११५ पर व जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ लेखाङ्क ३७० पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२०१. मेवाड़ के महाराणा लाखा का अभिलेख

क. कोटसोलंकिया

ख. **आषाढ़ सुदि ३ सोमवार वि० सम्वत् १४७५**

ग. अभिलेख में ओसवाल परिवार द्वारा मन्दिर के मण्डप का जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख हुआ है, साथ ही राणा लाखा के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. रामवल्लभ सोमाणी द्वारा मरुभारती में प्रकाशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२०२. राव चूंडा का ताम्रपत्र

क. वड़ली

ख. कार्तिक सुदि १५ रविवार वि० सं० १४७८ [९ नवम्बर सन् १४२१ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि राव चूंडा ने पुष्कर पर उक्त तिथि को पुरोहित सादा को वडली नामक ग्राम जिसका क्षेत्रफल १२ हजार बीघा है, पुण्यार्थ प्रदान किया।

घ. सुमेर रि० सन् १९३२ पृष्ठ ८ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

(नोट—इस ताम्रपत्र को डा० ओझा ने बनावटी माना है। देखिए जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १ पृष्ठ २१२-१३)

❀

२०३. पाबू की प्रतिमा का लेख

क. कोलू

ख. वैशाख वदि ५ बुधवार वि० सम्वत् १४८३

ग. अभिलेख में महाराजाधिराज लव (?) षण के शासन काल में धांधल पाहा (?) के द्वारा पाबू की प्रतिमा के स्थापित करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२०४. वैरिशाल का अभिलेख

क. ओसियां

ख. भाद्रपद वदि १० सोमवार वि० सं० १४९०

ग. अभिलेख में राठोड़ वंशीय राव सत्ता के पुत्र वयस्सल (वैरिशाल) की मृत्यु व उसकी पत्नियों-लाछ्लदे सांमुली, कूपरदे सोलंकिणी, कोडरदे पडिहार, सिरियादे खींचणी, गाईरदे वादलदी व लाछादे के सती होने का उल्लेख हुआ है।

ग. सुमेर रि० १९४३ पृष्ठ ५ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२०५. महाराणा कुम्भकर्ण का जैन मन्दिर अभिलेख

क. राणकपुर

ख. वि० सं० १४९६

ग. प्रस्तुत अभिलेख में मेवाड़ के महाराणाओं की निम्न वंशावली दी गई है— १. बाघा २. गुहिल ३. भोज ४. शील ५. कालभोज ६. भर्तृभट्ट ७. सिंह ८. महायक ९ खुम्माण १०. अल्लट ११. नरवाहन १२. शक्तिकुमार १३ शुचिवर्मन १४. कीर्तिवर्मन १५. योगराज १६. वैरट १७. वंशपाल १८. वैरिसिंह १९. वीरसिंह २०. अरिसिंह २१. चोडसिंह २२. विक्रमसिंह २३. रणसिंह २४. क्षेमसिंह २५. सामन्तसिंह २६. कुमारसिंह २७. मथनसिंह २८ पद्मसिंह २९. जैत्रसिंह ३०. तेजस्वीसिंह ३१. समरसिंह ३२. भुवनसिंह जिसने कि चौहान राजा कितूक को पराजित किया था व सुरत्राण अल्लावद्दीन को हराया था। ३३. जयसिंह ३४. लक्ष्मसिंह जिसने कि मालव नरेश

(गोगादेव) को पराजित किया था। ३५ अजयसिंह, इसका भाई ३६. अरिसिंह ३७. हम्मीर ३८ खेतसिंह ३९ लक्ष ४० मोकल ४१ कुम्भकर्ण। कुम्भकर्ण के विषय में कहा गया है कि इसने सारंगपुर, नागपुर, गागरण, नराणक, अजयमेरु, मण्डोर, मण्डलपुर, बुंदी, खाटू, चाटसू, जाना व अन्य दुर्गों को जीता था व ढिल्ली और गुर्जरात्र के सुल्तानों को पराजित कर 'हिन्दु-सुरत्राण' की उपाधि से विभूषित हुआ।

घ. भा०इं० पृष्ठ ११४ व प्राचीन लेख माला भाग २ पृष्ठ २८ पर प्रकाशित व भण्डारकर द्वारा आ०स०इं०, एन०रि० १९०७-८ पृष्ठ २१४ पर सम्पादित, रामवल्लभ सोमाणी द्वारा मरुभारती पृष्ठ ९ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२०६. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. नाणा

ख. **माघ वदि १० शुक्रवार वि० सं० १५०६**

ग. ज्ञावकिया गच्छ के शांति सूरी द्वारा एक जैन प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाए जाने का उल्लेख अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४९ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२०७. पाबू का कीर्तिस्तम्भ लेख

क. कोलू

ख. **भाद्रपद वदि ११ बुधवार वि० सं० १५१५**

ग. महाराज जोधा के पुत्र रायसातल के शासनकाल में धांधल खीमड़ के पौत्र व सोभा के पुत्र सोहड़ द्वारा महाराय राठड़ (राठौड़) धांधल के पुत्र पाबू का मूर्ति-कीर्ति स्तम्भ बनवाए जाने का व महाराज चन्द्र, गिदा व हाजा द्वारा पाबू के मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०८ पर लिप्यन्तरित तथा डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२०८. जैन मन्दिर अभिलेख

क. नगर

ख. पौष वदि ११ गुरूवार सम्वत् १५५६

ग. अभिलेख में किसी राद्रऊड (राठोड़) के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४७ पर लिप्यन्तरित व मांगीलाल व्यास द्वारा "अन्वेषण" भाग १ अंक १ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२०९. राठोड़ नरसिंहदेव (नरा) का अभिलेख

क. फलोदी

ख. वैशाख वदि २ सोमवार वि० सं० १५३२

ग. अभिलेख में राजा सूरजमल (सूजा जी) के पुत्र नरसिघदे (नरा) के राज्य काल में दुर्ग की पौल (मुख्य द्वार) के निर्माण एवं महण के पुत्र भोजा द्वारा दुर्ग के जीर्णोद्धार का उल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ ९४ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत व देशज का मिश्रण

२१०. विठ्ठल-प्रतिमा पादासन अभिलेख

क. वंशीवाले का मन्दिर, नागोर

ख. मार्गशीर्ष वदि ५ बुधवार वि० सम्वत् १५३३ शाके १३९९

ग. उक्त तिथि को नागोर में श्री विठ्ठलजी की प्रतिमा के निर्माण का उल्लेख प्रस्तुत में हुआ है।

घ. प्रस्तुत अभिलेख की प्रतिलिपि श्री शिवलाल माह्रषि एम.ए., बी.एड. से प्राप्त हुई।

ङ. ....

च. देशज

❀

२११. देवालय अभिलेख

क. फलोदी

ख. चैत्र सुदि १५ वि० सम्वत् १५३५

ग. अभिलेख में किसी मन्दिर के जीर्णोद्धार का उल्लेख हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०९-१० पृष्ठ ६१ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

२१२. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. पाली

ख. वैशाख सुदि ३ वि० सं० १५४८

ग. प्रतिमा स्थापित करवाए जाने का उल्लेख हुआ है ।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२१३. छत्री अभिलेख

क. आसोप

ख. मार्गशीर्ष सुदि २ सम्वत् १५५२

ग. कमधजवंशी राजाधिराज महाराज श्री जोधा के पुत्र सूर्यमल के राज्यकाल में आसोप वृधिक वंशीय सा ।। सादेल व उसकी पत्नि ढेकू की मृत्यु का उल्लेख हुआ है तथा उसके पुत्रों वावा, खेता, कूंपा, डूंगा व लाखा द्वारा स्मारक बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है ।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२१४. राणा रायमल्ल का अभिलेख

क. नाडलाई

ख. वैशाख सुदि ६ शुक्रवार वि० सं० १५५७ (नाहर व जिनविजय ने १५९७ पढ़ा है, जो दोष पूर्ण है) [२३ अप्रेल सन् १५०१ ई०]

ग. अभिलेख में महाराणा रायमल (मेवाड़ नरेश) की आज्ञा से एक जैन प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०९-१० पृष्ठ ४३ पर निर्देशित। जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ लेखाङ्क ३३६ व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०स० भाग १ पृष्ठ २१५ पर लिप्यन्तरित। रामवल्लभ सोमानी द्वारा मरुभारती में प्रकाशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२१५. सती स्मारक अभिलेख

क. वागोडिया

ख. फाल्गुन वदि शुक्रवार सं० १५६२

ग. अभिलेख में किसी सांखला की मृत्यु व दो पत्नियों खीचणी व मोहिली के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. देशज मिश्रित संस्कृत

❀

२१६. राव सूरजमल का अभिलेख

क. कोलू

ख. वि० सं० १५६३

ग. इस अभिलेख में राव सूरिजमल (जोधपुर के राव सूजा जी) का नामोल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०९ पर लिप्यन्तरित।

घ. ....

च. संस्कृत व देशज का मिश्रण

❀

२१७. जैन मन्दिर अभिलेख

क. नगर

ख. वैशाख सुदि ७ गुरूवार वि० सं० १५६८

ग. नागगच्छीय जैन मन्दिर में उपलब्ध इस अभिलेख में रावल कुषकरण का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५४ व मांगीलाल व्यास द्वारा अन्वेषण भाग १ अंक १ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२१८. राष्ट्रकूट महाराजा हम्मीर का अभिलेख

क. फलोदी

ख. मार्गशीर्ष सुदि १० गुरूवार वि० सं० १५७३

ग. फलोदी के दुर्ग के मुख्य द्वार के पास स्थित स्तम्भ पर उत्कीर्ण इस अभिलेख में कहा गया गया है कि राष्ट्रकूट वंशीय नरेश महाराजा श्री नरसिंघ (नरा) के पुत्र हम्मीर द्वारा निर्मित द्वार स्तम्भ का जीर्णोद्धार पिरोहित (पुरोहित) दिवाकर, चाहवाण सेलहथ, ऊदा, भाटी नीवा, मंत्रीश्वर गंगू, मन्त्रीश्वर देवा की उपस्थिति में सूत्रधार लाखा के पुत्र घन्ताक द्वारा किया गया। अन्त में वजीर गोवल का नाम भी दिया हुआ है।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित तथा डा० टैसीटोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०९ पर प्रकाशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२१९. हरि मन्दिर अभिलेख

क. आसोप

ख. श्रावण सुदि ५ शुक्रवार सम्वत् १५८९

ग. राजा श्री राठोड़ साहमल की पत्नि गंगादे द्वारा मन्दिर बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. सूत्रधार श्री रंग

च. संस्कृत

❀

२२०. राव सूजा का स्तम्भ अभिलेख

क. फलोदी

ख. भाद्रपद सुदि ६ रविवार वि० सं० १५८६

ग. अभिलेख में राव सूरिजमल (राव सूजा) के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२२१. सती स्मारक अभिलेख

क. डीडवाना

ख. चैत्र सुदि ६ वि० सं० १५६३

ग. गदाधर के पुत्र बदरी की मृत्यु व उसकी पत्नि के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२२२. महिषासुर मर्दिनी प्रतिमा अभिलेख

क. सिवाना

ख. वैशाख (?) सुदि १० सं० १५६४ (?)

ग. महाराज श्री मालदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२२३. मालदेव का सिवाना अभिलेख

क. सिवाना

ख श्रावण वदि ११ सम्वत् १५६४

ग. अभिलेख में राव मालदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित।

ङ. सूत्रधार करमचन्द द्वारा उत्कीर्ण।

च. देशज

❀

२२४. मालदेव का सिवाना अभिलेख

क. सिवाना

ख. सम्वत् १५९४

ग. महाराजधिराज मालदेव का नामोल्लेख हुआ है।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२२५. कूप निर्माण अभिलेख

क. वड़लू

ख. फाल्गुन सुदि ५ शनिवार वि० सम्वत् १५९४

ग. अभिलेख में चूंडा (मण्डोर का प्रथम राठोड़ शासक) के वंशज कान्हा के पौत्र व भारमल के पुत्र हरदास की पत्नि इन्द्रा, जो ताकर्णी वंश की थी, द्वारा एक कूप के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत मिश्रित देशज

❀

२२६. महाराज मालदेव का अभिलेख

क. सिवाना

ख. आषाढ़ वदि ८ बुधवार (वृहस्पतिवार) वि० सं० १५९४

ग. महाराजा मालदेव के राज्यकाल में सिवानागढ़ को जीतने व गढ़ की चावी मांगलिये देवे भादावत को देने का उल्लेख हुआ है।

घ. रेऊ मारवाड़ का इतिहास भाग १ पृष्ठ १२२ तथा डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित।

ङ. अचल गदाधर द्वारा लिखित व सूत्रधार केसव द्वारा उत्कीर्ण।

च. देशज

❀

२२७. वापी अभिलेख

क. वड़लू

ख. सम्वत् १५६५

ग. सुंगी गोपाल द्वारा (चांद) वावड़ी के ऊपर उठाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. सूत्रधार केसा

च. देशज

❀

२२८. राव जैता का रजलानी अभिलेख

क. रजलानी (जोधपुर)

ख. कार्तिक वदि १५ रविवार वि० सं० १५९७ शाके१४४० [1]

ग. प्रस्तुत अभिलेख में राव मालदेव के शासन काल में राव जैता द्वारा बावड़ी के निर्माण का उल्लेख हुआ है। जैता के पिता का नाम पंचायण, पितामह का नाम अखैराज तथा प्रपितामह का नाम राव रणमल्ल दिया गया है। जैता की पत्नियों के नाम निम्न दिये गये हैं--मदन टाकणी, वीरा हुलणी, गवर सोलंकिणी लीला चहुवाणी, रमा भटयानी। राव जैता के पुत्रों के नाम निम्न प्रकार से दिये गये हैं—मनसिंह, पृथ्वीराज, ऊदा, रायसिंह, भंवरसिंह, देवीदास। जैता के भाइयों के नाम निम्न प्रकार दिये हैं—अचला, मदा, कन्हा, अर्जुन, झांझण, भोजा, राम, सांईदास। जैता के काकों के नाम निम्न प्रकार से हैं—सींधण, सूरा, रण, रावल, नगराज, देवा, रायमल, माला, नरवद तथा महराज। महराज के पुत्र का नाम कूंपा दिया गया है। फिर यह वताया गया है कि वावड़ी के निर्माण का कार्य संवत् १५९४ मार्गशीर्ष वदि ५ रविवार को आरंभ हुआ था। फिर कहा है कि इस निर्माण कार्य में १,२५,१११ फदिया खर्च हुए। तदनन्तर वताया गया है कि इस निर्माण कार्य में ५२१ मन लोहा, यह लोहा आडावल पर्वत से ३२१ गाड़ियों में भरकर लाया गया था, १२१ मन पटसन, २५ मन घी, २२१ मन पोस्त, ७२१ मन नमक, ११२१ मन घी, २५५५ मन गेहूं, ११,१२१ मन दूसरा अनाज तथा ५ मन अफीम मजदूरों में वितरित करने में खर्च हुई। इस निर्माण कार्य में १५१ कारीगर, १७१ पुरुप मजदूर तथा २२१ स्त्री मजदूर लगे थे। लेख के एक भाग में विभिन्न देवी देवताओं के पूजा मन्त्र लिखे हैं।

---

[1] लेख में दिया गया शक संवत् शक १४४० अशुद्ध है। वास्तव में यहाँ १४६२ होना चाहिये।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित।
ङ. ....
च. देशज तथा संस्कृत

❀

२२९. भोमिया के चबूतरे का लेख

क. चांदेलाव
ख. आषाढ़ वदि ४ वि० सं० १६०६
ग. राव मालदेव के शासनकाल में भाटी साकर (शंकर) की मृत्यु व उसकी पत्नि वाल्हा वीसल राठोड़ के सती होने का उल्लेख इस लेख में हुआ है।
घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख पर लिप्यन्तरित तथा सुमेर रि० १९४२ पृष्ठ ६ पर लिप्यन्तरित।
ङ. ....
च. देशज

❀

२३०. जैन मन्दिर अभिलेख

क. राणकपुर
ख. वैशाख सुदि १३ वि० सम्वत् १६११
ग. अभिलेख में पातसाहि अकब्बर (बादशाह अकबर) व तपागच्छीय हीरविजय सूरि का नामोल्लेख हुआ है।
घ. भण्डारकर द्वारा आ०स०इं०, एन०रि० १९०७-८ भाग २ पृष्ठ २१८ पर लिप्यन्तरित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

२३१. सिवाना दुर्ग अभिलेख

क. सिवाना
ख. आषाढ़ सुदि ......सं० १६११
ग. लेख सुपाठ्य नहीं है।
घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित।
ङ. सूत्रधार कना व रतना
च. देशज

❀

२३२. राणीसर का अभिलेख

क. जोधपुर

ख. वि० सं० १६१३ [सन् १५५६ ई०]

ग. महाराजाधिराज मालदेव द्वारा पीथो (?) से युद्ध कर पोल को प्राप्त करने का उल्लेख अभिलेख में हुआ ।

घ. सुमेर रि० १९४२ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. पं० मला द्वारा लिखित ।

च. देशज

❀

२३३. सती स्मारक अभिलेख

क. रामसर नाडी, मेलावास

ख. फाल्गुन सुदि १२ वि० सम्वत् १६....

ग. खीची श्री राजो भदावत की मृत्यु व उसकी पत्नि देमा, राठोड़ मोजो (गो) गावत की पुत्री के सती होने का उल्लेख हुआ है ।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२३४. राव रत्नसिंह (ऊदावत) का अभिलेख

क. जैतारण

ख. चैत्र वदि १० सम्वत् १६१४

ग. अकबर की सेना से युद्ध करते हुए राव रत्नसिंह के काम आने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख हुआ है ।

घ. पं० रामकरण आसोपा द्वारा इतिहास निम्बाज पृष्ठ ५१ पर लिप्यन्तरित । डा० नारायणसिंह भाटी द्वारा परम्परा भाग १४ पृष्ठ ११ तथा डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित ।

च. देशज

❀

२३५. राउल मेघराज का अभिलेख

क. नगर

ख. प्रथम मार्गशीर्ष (वदि) २ वि० सं० १६१४

ग. अभिलेख में राउल मेघराज (मालानी का राठोड़ शासक) व खरतरगच्छीय जिनचन्द्र सूरि का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५५ पर व मांगीलाल व्यास द्वारा "अन्वेषणा" भाग १ अंक १ पृष्ठ ५४ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२३६. स्मारक अभिलेख

क. डीगाड़ी

ख. वैशाख सुदि............सं० १६१७

ग. पड़िहार (प्रतिहार) गोत्रीय साहा (?) की मृत्यु व उसकी पत्नि के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२३७. स्मारक स्तम्भ अभिलेख

क. डीगाड़ी

ख. सम्वत् १६१८

ग. किसी प्रतिहार की मृत्यु का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२३८. हरिदासियों की छत्री का लेख

क. डीडवाना

ख. मार्गशीर्ष वदि ६ रविवार वि० सं० १६२१

ग. वीहाणी वंश के साह श्री हरदास व उसके पुत्र हरीराम का नमोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२३९. हरिदासियों के कुएं का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. चैत्र सुदि १वि० सं० १६२४ शाके १४८९

ग. अभिलेख में निम्न वंशावली है—............इसका पुत्र प्रयागदास, उसका पुत्र हरीदास, उसका पुत्र............

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२४०. राव चन्द्रसेन का स्मारक अभिलेख

क. सारण

ख. माघ सुदि ७ वि० सम्वत् १६३७ शाके १५०२

ग. राव चन्द्रसेन की मृत्यु व उसकी पांच रानियों के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ क में लिप्यन्तरित तथा सुमेर रि० १९४२ पृष्ठ ६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च देशज

❀

२४१. महाराणा प्रताप का ताम्रपत्र

क. मृगेश्वर (जिला पाली)

ख. फाल्गुन शुक्ला ५ सम्वत् १६३६

ग. ताम्रपत्र में कहा गया है कि महाराणा प्रतापसिंह के आदेश से भामाशाह द्वारा कान्ह नामक चारण को मीरघेसर (मृगेश्वर) नामक ग्राम सासण में प्रदान किया गया।

घ. मुंशी देवीप्रसाद द्वारा सारस्वती भाग १८ पृष्ठ ६५-६८ पर सम्पादित तथा प्रताप स्मृति ग्रन्थ पृष्ठ २६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२४२. स्मारक अभिलेख

क. रावणीया

ख. श्रावण वदि ५ शनिवार सम्वत् १६४०

ग. मेहता हापा मुंडेल का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. राजस्थानी

❀

२४३. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. गांगाणी

ख. फाल्गुन शुक्ल ५ वि० सम्वत् १६४४

ग. लाताचन्द तोपी द्वारा प्रतिमा निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२४४. महाराज मालदेव का स्मारक अभिलेख

क. मण्डोर उद्यान (जोधपुर)

ख. फाल्गुन वदि १ वि० सम्वत् १६४८

ग. प्रस्तुत स्मारक राव उदयसिंह (मोटा राजा) के समय बनाया गया ।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा जो०रा०इ० परिशिष्ट १ ख में लिप्यन्तरित ।

ङ. सूत्रधार नरसिंह के पुत्र नेता, हेमा, फला गुणपत तथा केशव ।

च. देशज

❀

२४५. महाराज उदयसिंह का ताम्रपत्र

क. विलाड़ा

ख. भाद्रपद शुक्ला १२ सं० १६४६

ग. महाराजाधिराज महाराजा उदयसिंह द्वारा जोगी नीवनाथ को विलाड़ा ग्राम में २० बीघा भूमि दान में दिए जाने का उल्लेख इस ताम्रपत्र में हुआ है। कुंवर सूरीजसिंह (सूर्यसिंह) का भी नामोल्लेख हुआ है ।

घ. चौधरी शिवसिंह चोयल द्वारा राजस्थान भारती वर्ष.... अंक.... पृष्ठ ३५ पर प्रतिलिपि का प्रकाशन ।

ङ. ....

च. देशज

❀

२४६. महाराज रायसिंह का अभिलेख

क. फलोदी

ख. आषाढ़ सुदि ६ रविवार वि० सम्वत् १६५०

ग. अभिलेख में कहा गया है कि महाराजधिराज महाराज श्री-श्री-श्री रायसिंघ (बीकानेर नरेश) के विजय-राज्य में फलवर्धिका (फलोधी) नगर के बुर्ज का निर्माण करवाया गया। यह कार्य खवास गोपालदास, घाड (?) पीथा व सिंघवी लिखमीदास की देखरेख में सम्पन्न हुआ ।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो बं० खण्ड XII पृष्ठ ६६ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. सीहा द्वारा लिखित तथा सूत्रधार साहिबदी (शहाबुद्दीन ?) व हरपा (हरखा) द्वारा उत्कीर्ण ।

च. संस्कृत व देशज का मिश्रण

❀

२४७. मोटाराजा उदयसिंह का ताम्रपत्र

क. बांजड़ा (बिलाड़ा तहसील)

ख. आषाढ़ सुदि १२ वि० सम्वत् १६५१

ग. प्रस्तुत ताम्रपत्र में महाराजा उदयसिंह द्वारा बांजड़ा ग्राम दान में दिये जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. सुमेर रि० सन् १९४२ पृष्ठ ६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. पंचोली सारणा द्वारा लिखित।

च. देशज

❀

२४८. महाराणा प्रताप का ताम्रपत्र

क. बिलाड़ा

ख. आसोज सुदि १५ वि० सम्वत् १६५१

ग. प्रस्तुत तामम्रपत्र में महाराणा प्रताप द्वारा बिलाड़ा के दीवान रोहीतास को डाइलाणा नामक ग्राम में चार खेत तथा एक रहट भेंट स्वरूप दिये जाने का उल्लेख हुआ है। इसमें शाह भामा की शाक्षी भी उल्लिखित है।

घ. शिवसिंह चोयल द्वारा राजस्थान भारती में पृष्ठ ३६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२४९. राव सूजा का अभिलेख

क. आसोप

ख. मार्गशीर्ष सुदि २ गुरुवार वि० सम्वत् १५५२

ग. राव जोधा के पुत्र राव सूजा के शासन काल में एक वणिक परिवार द्वारा मन्दिर के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२५०. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. मेड़ता

ख. वैशाख सुदि ४ बुधवार वि० सं० १६५३

ग. अभिलेख में जैन प्रतिमा के स्थापित किए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०९-१० पृष्ठ ६३ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२५१. महाराणा अमरसिंह का अभिलेख

क. सादड़ी

ख. वैशाख वदि २ गुरुवार वि०सं० १६५४ शाके १५२० [१३ अप्रेल सन् १५९८ ई०]

ग. अभिलेख में (मेवाड़ के) महाराजा अमरसिंह के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. भा०ई० पृष्ठ १४४ पर प्रकाशित व भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ५६ पर निर्देशित। रामवल्लभ सोमानी द्वारा मरुभारती में प्रकाशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२५२. जैन अभिलेख

क. ओसियां

ख. वि० सम्वत् १६५५ [सन् १५९८ ई०]

ग. रत्तप्रभ सूरी द्वारा वीर सम्वत् ७० में चामुण्डा को सचियाय करने व ओसवालों की उत्पति का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२५३. सती स्मारक अभिलेख

क. कोसाणा (जिला जोधपुर)

ख. ज्येष्ठ शुक्ला ५ रविवार सं० १६५७

ग. किसी मदनसिंह (?) की मृत्यु व उसकी पत्नि कमलावती के सती होने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२५४. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. मेड़ता

ख. माघ सुदि ५ शुक्रवार वि० सम्वत् १६५६

ग. अभिलेख में महाराज सूर्यसिंह (जोधपुर के राठोड़ नरेश सूरसिंह) के राज्यकाल में किसी जैन प्रतिमा की स्थापना का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०६-१० पृष्ठ १० पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२५५. राणा अमरसिंह का जैन अभिलेख

क. नाणा

ख. भाद्रपद सुदि ७ वि० सम्वत् १६५६

ग. अभिलेख में राणा अमरसिंह (मेवाड़) का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६१०७-८ पृष्ठ ४६ पर निर्देशित व पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २३० पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२५६. महाराजा श्री सूर्यसिंह का ताम्रपत्र

क. मुंडीयारडा

ख. फाल्गुन वदि २ वि० सम्वत् १६६२

ग. महाराजा श्री सूर्यसिंह (सूरसिंह) द्वारा मुंडीयारड़ा ग्राम में नीवनाथ के वंशजों को भूमि दान में दिये जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. शिवसिंह चोयल द्वारा राजस्थान भारती में लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२५७. सती स्मारक अभिलेख

क. भावी

ख. मार्गशीर्ष वदि ११ सम्वत् १६६३

ग. किसी के सती होने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२५८. सवाई राजा सूरजसिंह का ताम्रपत्र

क. लोलासनी (जिला जोधपुर)

ख. भाद्रपद सुदि २ वि० सम्वत् १६६५

ग. ताम्रपत्र में महाराजाधिराज सूरजसिंह (सूरसिंह) द्वारा चारण मोकल के पुत्र रतनू दाना को सिवाना के पट्टे व धुमाड़े के तफे का ग्राम लालावास सासण के रूप में दिये जाने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. सुमेर रि० १९४२ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२५९. जैन मन्दिर स्तम्भ लेख

क. केकिन्द

ख. वि० सम्वत् १६६५

ग. अभिलेख में जोधपुर के राठोड़ शासकों की वंशावली निम्न प्रकार से दी गई है—
१. मल्लदेव (मालदेव) २. उदयसिंह, जो वृहद्धराज (मोटा राजा) कहलाता था व जिसे अकबर ने 'शाही' का खिताब दिया था ३. सूर्यसिंह (सूर्गसिंह) ४. गजसिंह। वंशावली के उपरान्त नापा व उसकी धर्मपत्नि के धर्मार्थ कार्यों का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९१०-११ पृष्ठ ३६ पर निर्देशित व पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २२२ पर लिप्यन्तरित।

ङ. विजयदेव के शिष्य उदयरूचि द्वारा सृजित, सहजसागर व जससागर द्वारा लिखित तथा सूत्रधार टोडर द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

२६०. बादशाह जहांगीर का अभिलेख

क. नाडोल

ख. ज्येष्ठ सुदि १५ बुधवार वि० सं० १६६६

ग. अभिलेख में कहा गया है कि पातसाह सलेम नूरदी महमद जांहगीर (सलीम नूरूद्दीन मुहम्मद जहांगीर) के शासन काल में जालोर के शासक महाखांन गजनीखांन जी ने १०० दरबारियों के सहयोग से नाडोल के नगरकोट का निर्माण करवाया व उसका नाम नूरपोर रखा।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२६१. शान्तिनाथ मन्दिर अभिलेख

क. नगर

ख. भाद्रपद सुदि २ शुक्रवार वि० सं० १६६६

ग. अभिलेख में मालानी के राठोड़ शासक राउल तेजसी का नामोल्लेख हुआ है।

घ. नाहर द्वारा जै०ले०स० भाग २ पृष्ठ १६७ पर लिप्यन्तरित तथा डा० मांगीलाल व्यास 'मयंक' द्वारा अन्वेषणा भाग १ अंक १ पृष्ठ ५४ पर निर्देशित।

ङ. दामा के पुत्र मन्ना व धन्ना द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

❀

२६२. जैन मन्दिर अभिलेख

क. नगर

ख. द्वितीय आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार वि० सं० १६६७

ग. प्रस्तुत अभिलेख में भी रावल तेजसी के शासनकाल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६११-१२ पृष्ठ ५५ पर व डा० मांगीलाल व्यास द्वारा अन्वेषणा भाग १ अंक १ पृष्ठ ५४ निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२६३. महाराजा सूरसिंह का अभिलेख

क. मेड़ता

ख. माघ सुदि ५ शुक्रवार वि० सं० १६६६

ग. अभिलेख में महाराजाधिराज महाराज सूर्यसिंह (सूरसिंह) के राज्यकाल का उल्लेख हुआ है।

घ. नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ १८७ व जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ पृष्ठ ४३५ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

२६४. राजा सूरसिंह का अभिलेख

क. माणकलाव

ख. आपाढ़ सुदि ५ रविवार वि० सं० १६७१

ग. राजा सूर्सिंह के शासनकाल में भाटी ईसरदास द्वारा मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाये जाने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. सुमेर रि० १६४२ पृष्ठ ६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. सूत्रधार जगनाथ

च. देशज

❀

२६५. बंशीवाला-मन्दिर अभिलेख

क. नागोर

ख. पौष शुक्ला १३ सोमवार वि० सम्वत् १६७१

ग. बादशाह नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर के शासन काल में नागोर के शासक राणा श्री सगर के समय गदाधर के पुत्र नारायणदास लोहया के प्रयासों से बंशीवाले के मन्दिर' के जीर्णोद्धार का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. सूत्रधार अजमेरी पीरमुहम्मद द्वारा उत्कीर्ण तथा मिश्र जोधा द्वारा लिखित।

च. संस्कृत

❀

२६६. राजा सूरसिंह का ताम्रपत्र

क. तेला (नागोर)

ख. मार्गशीर्ष सुदि ७ वि० सं० १६७२ [सन् १६१५ ई०]

ग. महाराजा सूरजसिंह (सूरसिंह) द्वारा वारहठ लखा, नरहर व गिरधर को रहनडी, सिंघलानडी व उचीयाहेडो दिया जाने का उल्लेख इस ताम्रपत्र में हुआ है।

घ. सुमेर रि० १९४३ पृष्ठ ६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. साह परब द्वारा लिखित।

च. देशज

❀

२६७. सती स्मारक अभिलेख

क. रामसर नाडी, मेलावास

ख. फाल्गुन वदि ε वि० सं० १६७३

ग. राजा सूरजी (सूरसिंह) के समय खीची वंशीय दूदी नामक स्त्री के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२६८. बादशाह जहांगीर व शाहजादा शाहजहां का अभिलेख

क. मेड़ता

ख ज्येष्ठ वदि ५ गुरूवार वि० सम्वत् १६७७

ग. बादशाह जहांगीर एवं शाहजादा शाहजहां के समय मेड़ता नगर में ओसवाल जाति के परिवारों (परिवार के सदस्यों के नाम भी दिये गये हैं।) द्वारा जैन मन्दिर में शांतिनाथ की प्रतिमा स्थापित करवाए जाने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है। अकबर द्वारा युग प्रधान की उपाधि प्राप्त श्री जिनचन्द्र सूरि तथा जहांगीर द्वारा युग प्रधान की उपाधि प्राप्त श्री जिनसिंह सूरि का भी नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०,वे०स०, १६०६-१० पृष्ठ ६२ पर निर्देशित तथा पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं०, भाग १ पृष्ठ १६१ पर व जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ (लेखाङ्क २६४) पर निर्देशित।

ङ. सूत्रधार सूजा द्वारा उत्कीर्ण।

च. संस्कृत

२६९. जैन मन्दिर अभिलेख

क. कापड़ा

ख. वैशाख सुदि १५ सोमवार सं० १६७८

ग. अभिलेख में महाराज गजसिंह का नामोल्लेख हुआ है।

घ. पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०स० भाग १ पृष्ठ २७३ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

२७०. रावल जगमाल का अभिलेख

क. वीरमपुर (नगर)

ख. द्वितीय आषाढ़ सुदि २ रविवार वि० सं० १६७८ शाके १५४४

ग. पल्लिकागच्छ के स्थानीय जैन मन्दिर के इस अभिलेख में रावल जगमाल के शासनकाल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०,वे०स० १६११-१२ पृष्ठ ५५ पर निर्देशित व डा० मांगीलाल व्यास द्वारा अन्वेषण भाग १ अंक १पृष्ठ ५५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

२७१. सती स्मारक अभिलेख

क. रामसर नाडी, मेलावास (जिला जोधपुर)

ख. चैत्र वदि ४ वि० सं० १६८०

ग. खीचीरामसिंह राजावत की मृत्यु व उसकी पत्नि पेमा, जो चावड़ा राणा सलखावत की पुत्री थी, के सती होने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२७२. रावल जगमाल का जैन अभिलेख

क. नगर

ख. चैत्र वदि ३ सोमवार वि० सम्वत् १६८१

ग. स्थानीय पल्लिकागच्छ के इस अभिलेख में मालानी के राठोड़ रावल जगमाल के राज्यकाल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०,वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५५ व डा० मांगीलाल व्यास द्वारा अन्वेषणा भाग १ अंक १ पृष्ठ ५५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

१७३. महाराज गजसिंह का अभिलेख

क. जालोर

ख. चैत्र वदि ५ गुरुवार वि० सं० १६८१

ग. अभिलेख में महाराज गजसिंह के शासन काल में मूता नैणसी के पिता जयमल द्वारा एक जैन प्रतिमा के स्थापित किये जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५६ पर निर्देशित तथा पूर्णचन्द्र नाहर द्वार जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४१ व जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ लेखाङ्क ३५४ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२७४. सती स्मारक अभिलेख

क. डीडवाना

ख. भाद्रपद सुदि १३ वि० सं० १६८२

ग. गोवर्धन विहारणी की मृत्यु व उसकी पत्नि रेखा के सती होने का उल्लेख इस लेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२७५. स्मारक अभिलेख

क. कोसाणा

ख. आश्विन वदि ७ सं० १६८२

ग. महाराजा राज श्री अभाराज का नामोल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२७६. सती स्मारक अभिलेख

क. कोसाणा

ख. चैत्र सुदि १४ सोमवार सं० १६८३

ग. किसी आसग (?) नामक स्त्री के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा संग्रहित)।

ङ. ....

च. देशज

❀

२७७. महाराजाधिराज महाराजा गजसिंह का अभिलेख

क. जालोर

ख. आपाढ़ वदि ४ गुरुवार वि० सं० १६८३

ग. महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह के काल में जयमल द्वारा एक प्रतिमा स्थापित किए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १६०८-६ पृष्ठ ५७ पर निर्देशित व पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २४२ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

२७८. महाराजधिराज गजसिंह का जैन मन्दिर अभिलेख

क. नाडोल (जिला पाली)

ख. प्रथम आषाढ़ वदि ५ शुक्रवार वि० सं० १६८६ [सन् १६३० ई०]

ग. महाराजधिराज गजसिंह द्वारा समस्त राज्य के व्यापार का अधिकार प्राप्त मं० (मन्त्री) जैसा के पुत्र मं० (मन्त्री) जयमलल ने यहाँ चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का निर्माण व प्रतिष्ठा करवाई। प्रतिष्ठा विजयसिंह सूरि द्वारा की गई थी। अभिलेख में यह भी कहा गया है कि इस समय नाडोल राणा श्री जगतसिंह के राज्यन्तर्गत था।

घ. सुमेर रि० १६४३ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२७६. राजाधिराज गजसिंह का अभिलेख

क. नाडोल (जिला पाली)

ख. प्रथमाषाढ़ वदि ५ शुक्रवार सं० १६८६ [सन् १६३० ई०]

ग. महाराज गजसिंह के शासनकाल में जोधपुर निवासी मन्त्री जैसा के पुत्र मन्त्री जयमल्ल द्वारा शान्तिनाथ की प्रतिमा के स्थापित करवाए जाने का उल्लेख इस अभिलेख हुआ है।

घ. सुमेर रि० १६४३ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२८०. जैन अभिलेख

क. जालोर

ख. माघ सुदि १० सोमवार वि० सं० १६८६

ग. जैन मन्दिर से सम्बन्धित ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५६ पर निर्देशित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२८१. सच्चियाय माता मन्दिर अभिलेख

क. ओसियां

ख. चैत्र सुदि १३ वि० सं० १६८४

ग. अभिलेख में किसी भोजक (मग या सेवग) जगतो की मन्दिर की यात्रा का उल्लेख हुआ है ।

घ. श्री दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

२८२. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. पाली

ख. सम्वत् १६८६

ग. चरण-पट्ट की स्थापना का उल्लेख हुआ है ।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२८३. महावल जगमाल का अभिलेख

क. नगर (वीरमपुर)

ख. चैत्र वदि ७ मंगलवार वि० सं० १६८६

ग. प्रस्तुत अभिलेख में राठोड़ शासकों की निम्न वंशावली प्राप्त होती है—
१. कनोजिया राठोड़ सीहा (व उसका पुत्र) सोनग, जिन्होंने तलवार के बल पर गहलोतों से खेड़ छीना। २. (सीहा का दूसरा पुत्र) आसथान ३. धूहड़, जिसे देवी नागणेची ने अविचल राज्य दिया। (भण्डारकर ने इसका अर्थ किया है—'धूहड़ की रानी नागणेची थी, जो अविचल राज की पुत्री थी।" यह अर्थ पूर्णतया अशुद्ध है।] ४. रायपाल ५. कान्हराज ६. रा० (राव) जाल्हणसी ७. राव छाडा ८. राव तीडा ९. राव सलखा १०. राउ (राव) माला (मल्लिनाथ, मालदेव) ११. राव जगमाल १२. राउल (रावल–राजकुल) मण्डलिक १३. राज श्री भोजराज १४. वीदा १५. नीसल १६ वरसीग १७. हापा १८. मेघराज १९ माणदुरजोधण राज श्री दुजणसल जी, जिसकी रानी सोढी संतोषदे थी। २० तेजसी, जिसकी द्वितीय पत्नि का नाम सीसोदणी दाडिमदे था, जिसके कि गर्भ से २१. महारावल जगमाल (द्वितीय) का जन्म हुआ। जगमाल (द्वितीय) की रानियों के निम्न नाम दिए है—क. भटियानी जीवंतदे ख. चहुवानी जमनादे ग. सोढ़ी चतरंगदे घ. देवड़ी अमोलकदे ङ. भटियानी सुजाणदे। इन में से देवड़ी (अमोलकदे) को पट रानी कहा है, जिसकेकि गर्भ से कुंवर भारमल का जन्म हुआ। फिर कहा है कि महारावल ने रणछोड़जी के मन्दिर का निर्माण करवाया। इसके अनन्तर बताया है कि राव आसथान से राठोड़ों की निम्न १३ शाखाएें चली––१. धूहड़ २. धांधल ३. ऊहड़ ४. वानर ५. बांजा ६. गोइंदरा ७. गूडाल ८. चाचिग ९. आसाहोल १०. जोपसा ११. नापसा १२. खीपसा १३. अणंतरा।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११–१२ पृष्ठ ५५ पर निर्देशित। डा० मांगीलाल व्यास द्वारा अन्वेषणा भाग १ अंक १ पृष्ठ ५६ पर सम्पादित।

ङ. सूत्रधार कल्याण, सोमा, तारा, गोआल, हेमा।

च. देशज

❀

२८४. जैन प्रतिमा लेख

क. पाली

ख. वैशाख सुदि ८ वि० सं० १६८६

ग. राजाधिराज महाराज श्री..........के शासनकाल में किसी उहड़ गोत्रीय व्यक्ति द्वारा मेड़ता में प्रतिमा बनवा कर लाए जाने का उल्लेख इस लेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२८५. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. पाली

ख. वैशाख सुदि ८ शनिवार वि० सं० १६८६

ग. पाली के शासक जगन्नाथ के काल में पाली नगर के निवासी श्रीमाल जातीय शा० डूंगर उनकी पत्नि नाथल्दे पुत्र रूपा आदि द्वारा प्रतिमा बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

२८६. महाराणा जगतसिंह का प्रतिमा अभिलेख

क. नाडलाई

ख. वैशाख शुक्ल ८ शनिवार वि० सम्वत् १६८६

ग. अभिलेख में महाराणा जगतसिंह के शासन काल में प्रतिमा स्थापित किए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४१ पर निर्देशित व पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २१७ पर लिप्यन्तरित। रामवल्लभ सोमानी द्वारा मरुभारती में प्रकाशित।

ङ. ....

च. संस्कृत

२८७. महाराजा गजसिंह के अभिलेख

क. पाली

ख. वैशाख सुदि ८ शनिवार वि० सम्वत् १६८६ (दोनों की यही तिथि है।)

ग. अभिलेख में उल्लेख हुआ है कि महाराजा गजसिंह के शासन काल में पाली का अधिकारी सोनगरा चौहान जसवन्त का पुत्र जगन्नाथ था व गोडवाड़ पर इस समय महाराणा जगतसिंह (मेवाड़) का शासन था। (दोनों अभिलेखों में यही तथ्य उल्लिखित है।)

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ४६ पर निर्देशित। पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २०२ तथा मुनि जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ लेखाङ्क ३९८ व ३९९ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत-देशज

❀

२८८. महाराजा गजसिंह का अभिलेख

क. मेड़ता

ख. वैशाख सुदि ८ वि० सम्वत् १६८६

ग. अभिलेख में महाराजा गजसिंह के शासन काल का उल्लेख हुआ है।

घ. पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ १८९ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२८९. महाराणा जगतसिंह के अभिलेख

क. नाडोल

ख. प्रथम आषाढ़ वदि ५ शुक्रवार वि० सं० १६८६

ग. अभिलेखों में महाराजा गजसिंह (जोधपुर) के प्रधान मन्त्री जयमल्ल (मूता नैणसी का पिता) द्वारा महाराणा जगतसिंह के समय में किए जाने वाले दान का उल्लेख है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ४६ पर निर्देशित। पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २०७ पर व जिनविजय द्वार प्रा०जै०ले०सं० लेखाङ्क ३६६ व ३६७ पर लिप्यन्तरित तथा सुमेर रि० १९४३ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

(नोट—दोनों ही अभिलेखों का समान विषय व तिथि है।)

❀

२९०. स्मारक अभिलेख

क. रावणीया

ख. चैत्र वदि ५ सं० १६८७

ग. रूपा मुडेल का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

२९१. महाराजा गजसिंह का अभिलेख

क. फलोदी

ख. मार्गशीर्ष सुदि १३ बुधवार वि० सम्वत् १६८९

ग. अभिलेख में कहा गया है कि महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह के राज्यकाल में, जब कि श्री जयमाल जी मुहणोत्र मन्त्रीश्वर थे, शांतिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ। अभिलेख में महाराजकुमार अमरसिंह का भी नामोल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ ९७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. सीहा के शिष्य वस्ता द्वारा लिखित।

च. संस्कृत व देशज का मिश्रण

❀

२९२. महाराजा गजसिंह का अभिलेख

क. फलोदी

ख. पौष वदि ५ बुधवार वि० सम्वत् १६८९

ग. अभिलेख में कहा है कि राठोड़कुल-उद्योतकारक महाराजा श्री गजसिंह के राजत्वकाल में जब कि अमरसिंह युवराज था, तपागच्छीय भट्टा (र) क श्री विजयदेवसू (री) व आचार्य श्री विजयसिंघ सूरि के आज्ञाकारी पण्डित श्री जीत विजय गणि के शिष्य श्री विनयविजय गणि ने फलवाविर (?) (फलवर्धिका= फलोधी) नगर में चौमासा किया। उनके उपदेश से प्रभावित होकर श्रावकों (अभिलेख में उनके नाम दिए है) ने शांतिनाथ के मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ ८९ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज मिश्रित संस्कृत

❀

२९३. रावल वीरमदेव का अभिलेख

क. जसोल

ख. भाद्रपद वदि २ रविवार वि० सम्वत् १६८६

ग. अभिलेख में राउल (रावल=राजकुल) वीरमदे जी (सम्भवत खेड़ के राठोड़ शासकों का सम्वन्धी) के राज्यकाल का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९११-१२ पृष्ठ ५४ पर निर्देशित व डा० मांगीलाल व्यास द्वारा "अन्वेषणा" भाग १ अंक १ पृष्ठ ५५ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२९४. स्मारक अभिलेख

क. खेजड़ला

ख. ज्येष्ठ शुक्ला ११ वि० सं० १६९१ शाके १५५६

ग. गोपालदास का पुत्र दयालदास भाटी दूधवड़ि गाँव में हुए युद्ध में उक्त तिथि को काम आया जिसकी तीन पत्निया जोधी, बालोती व चाहवणी सती हुई। छत्री की प्रतिष्ठा आषाढ़ वदि ९ वि० सं० १६९५ को हुई।

घ. ....

ङ. ....

च. मारवाड़ी

❀

२९५. सती स्मारक अभिलेख

क. कापरड़ा

ख. द्वितीय श्रावण वदि अमावस्या वृहस्पतिवार वि० सम्वत् १६९५

ग. सेतुर नारायण (?) की मृत्यु व उसकी पत्नि घम जात (?) के सती होने का उल्लेख हुआ।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३०२. स्तम्भ अभिलेख

क. डीडवाना

ख. वैशाख सुदि १४ वि० सम्वत् १७०४ [सन् १६४७ ई०]

ग. परसराम द्वारा राघोदास के थांमे (स्तम्भ) के निर्माण का उल्लेख इस अभिलेख हुआ है। स्तम्भ निर्माण का व्यय ४००१) रु० बताया गया है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३०३. महाराजाधिराज महाराजा रायसिंह का ताम्रपत्र

क. इंदोखली

ख. प्रथम आषाढ़ वदि १३ वि० सं० १७०५ [२९ मई सन् १६४९ ई०]

ग. महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह (नागोर के महाराजा श्री अमरसिंह का पुत्र) द्वारा बारहट रतनसी नाथा को सरकार नागोर के परगने रूप (वर्तमान नागोर जिला) का गाँव इंदोखली दिए जाने का उल्लेख इस ताम्रपत्र में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३०४. स्मारक अभिलेख

क. रावणीया

ख. ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रवार वि० सं० १७०६

ग. देवा मुंडेल का किसी युद्ध में मारे जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३०५. स्मारक अभिलेख

क. भावी

ख. चैत्र सुदि········वि० सं० १७११

ग. किसी की मृत्यु का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है। लेख के घिस जाने से पूर्ण विवरण प्राप्त नहीं होता। यह भी कहा गया है कि छतरी (स्मारक) बनवाने में २००) रु० खर्च हुए।

घ. ····

ङ. ····

च. देशज

❀

३०६. देवली अभिलेख

क. रामसर नाडी, मेलावास

ख. वैशाख सुदि ३ वि० सम्वत् १७१२

ग. खीची कल्याणदास की मृत्यु पर उसका स्मारक (देवली) बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ····

च. देशज

❀

३०७. महाराजा जसवन्तसिंह का अभिलेख

क. फलोदी

ख. वैशाख सुदि ५ मंगलवार वि० सम्वत् १७१५ [२७ अप्रेल सन् १६५८ ई०]

ग. अभिलेख में कहा है कि महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवन्तसिंह के शासन काल में फलवधिपुर (फलौधी) में मन्त्रीश्वर मुहणोत्र शामकरण जैमलोत ने कोट के बुर्ज का निर्माण करवाया।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ ६६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. जीवण हरखांणी द्वारा लिखित व मोहड मेघराज द्वारा उत्कीर्ण।

च. देशज

❀

२९६. राव अमरसिंह का ताम्रपत्र

क. पिरोजपुर (नागोर)

ख. माघ सुदि ८ वि० सं० १६९५ [सन् १६३९ ई०]

ग. महाराजाधिराज महाराज श्री अमरसिंह द्वारा चांदा रतनसी देदावत व नाथा रतनसीयोत को पैरोजपुर गाँव प्रदान करने का उल्लेख हुआ है। ताम्रपत्र में कुंवर राईसिंह (रायसिंह) का भी नामोल्लेख हुआ है।

घ. सुमेर रि० सन् १९४३ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

२९७. महाराज जसवन्तसिंह का अभिलेख

क. फलोदी

ख. आषाढ़ सुदि २ शनिवार वि० सं० १६९६

ग. अभिलेख में महाराजाधिराज महाराज श्री जसवन्तसिंह जी के शासन काल में, फलवधका (फलवर्धिका) नगर में, मुहणोत्र श्री नयणसीह जेमलोत (सुप्रसिद्ध इतिहास-ग्रन्थ 'मूता नैणसी री ख्यात' तथा 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' का प्रणेता) द्वारा कल्याणराय जी के देहरे के सामने रंगमण्डप बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो० बं० खण्ड XII पृष्ठ ९९ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

२९८. सती स्मारक अभिलेख

क. खेजड़ला

ख. कार्तिक सुदि ३ वि० सम्वत् १६९७ शाके १५६३

ग. आसोजी के पुत्र राज श्री गोपालदासजी की मृत्यु व उनकी पत्नि मंलसाजी के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है। छतरी की प्रतिष्ठा चैत्र वदि ६ मंगलवार वि० सं० १७०० को हुई।

घ. ....

ङ. ....

च. मारवाड़ी

❀

२९९. सती स्मारक अभिलेख

क. आसोप

ख. पौष कृष्णा ६ मंगलवार सम्वत् १६९७

ग. राठोड़ श्री मांडल के पौत्र एवं खीमा के पुत्र राजसिंह की मृत्यु व उनकी रानी भटियानी अमृतदे के सती होने का उल्लेख हुआ है। इनके साथ सती होने वाली उपपत्नियों के निम्न नाम दिए गए हैं–१. कवलाजी २. कुंजदासी ३. गुणरेखा।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत-देशज

❀

३००. सती स्मारक अभिलेख

क. रामसर नाडी, मेलावास

ख. आषाढ़ वदि १० वि० सम्वत् १६९९

ग. खीची विठ्ठलदास कल्याणदासोत की मृत्यु व उसकी पत्नि सदा जो पडिहार (प्रतिहार) भीम की पुत्री थी, के सती होने उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित (व्यक्तिगत संग्रह)।

ङ. ....

च. देशज

❀

३०१. स्मारक अभिलेख

क. कोसाणा

ख. श्रावण सुदि ६ वि०सं० १७००

ग. चन्दावत ठाकुर श्री नरदासजी की मृत्यु एवं उनकी पत्नि नवलादे व आणररोध के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

३०८. सती स्मारक अभिलेख

क. आसोप

ख. फाल्गुन सुदि १५ वि० सम्वत् १७१५ शाके १५८०

ग. राठोड़ श्री कूंपा के पुत्र मांडण, इसका पुत्र खीमा, इसका पुत्र राजसिंह, इसका पुत्र नाहर खान काम आया व इसकी पत्नि केसर सती हुई ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३०९. सती स्मारक अभिलेख

क. कापरड़ा

ख. ज्येष्ठ सुदि ५ वि० सं० १७१९

ग. खारवल नेता सिसोदिया की मृत्यु व उसकी पत्नि धनजी के सती होने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है ।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३१०. नीलकंठ महादेव के मन्दिर का अभिलेख

क. बावड़ी

ख. आषाढ़ सुदि ४ सोमवार वि० सं० १७१९ शाके १५८४ [९ जून सन् १६६२ ई०]

ग. महाराजाधिराज जसवन्तसिंह व कुंवर पृथ्वीराज के समय ब्राह्मण रिणछोड़दास व उसकी पत्नि लाछ द्वारा महादेव नीलकंठेश्वर का मन्दिर बनवाए जाने का उल्लेख है । रिणछोड़दास के पूर्वजों की वंशावली भी दी गई है ।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज व संस्कृत का मिश्रण

❀

३११. चारभुजा मन्दिर अभिलेख

क. वावड़ी

ख. वैशाख कृष्णा [द्वा] दश तिथौ सं० १७२० शाके १५८५

ग. किसी गोवर्धन नामक व्यक्ति द्वारा चारभुजा के मन्दिर का निर्माण करवाए जाने का उल्लेख प्रस्तुत लेख में हुआ है। निर्माता की पत्नि पुत्र पौत्रादि का भी नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत देशज मिश्रित

❀

३१२. महाराज अभयराज का जैन प्रतिमा अभिलेख

क. नाडलाई

ख. ज्येष्ठ सुदि ३ रविवार वि० सं० १७२१

ग. अभिलेख में महाराज अभयराज का नामोल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०,वे०स०, १९०८-९ पृष्ठ ४२ पर निर्देशित पूर्णचन्द्र नाहर द्वारा जै०ले०सं०, भाग १ पृष्ठ २१६ पर व जिनविजय द्वारा प्रा०जै०ले०सं० भाग २ लेखाङ्क ३४० पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३१३. सती स्मारक लेख

क. आसोप

ख. वैशाख सुदि ७ वि० सं० १७२३ शाके १५८८

ग. नाहरषान के पुत्र जैतसिंह के काम आने व इसकी पत्नि चवांण जगरूपदे के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३१४. भण्डारियों के कुए का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. माघ सुदि ५ वि० सम्वत् १७२४

ग. अभिलेख में माणक भण्डारी कायस्थ दुरगदास द्वारा कुए की प्रतिष्ठा करवाए जाने का उल्लेख है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३१५. जैन मन्दिर अभिलेख

क. पाली

ख. माघ सुदि ८ सं० १७२५

ग. किसी चम्पाजी नामक व्यक्ति द्वारा मन्दिर के जीर्णोद्धार किए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३१६. शिव मन्दिर अभिलेख

क. बावड़ी

ख ज्येष्ठ सुदि ६ वि० सम्वत् १७२७

ग. महाराजाधिराज श्री जसवन्तसिंह व उनके पुत्र पृथ्वीसिंह के समय में गार्ग्य गोत्रीय नन्दवाण ब्राह्मणों के पट्टे के ग्राम में दियराम द्वारा शिवमन्दिर की प्रतिष्ठा करवाए जाने का उल्लेख हुआ है। दियराम के पूर्वजों के नाम निम्नानुसार दिए गए हैं—१. सोमाजी २. रताजी ३. रिणछोड़दासजी ४. पेतसी ५. दियराम। रिणछोड़दास जी की मृत्यु ज्येष्ठ सुदि ६ मंगलवार को हुई व उन पर छत्री का निर्माण व प्रतिष्ठा ज्येष्ठ सुदि ६ वि० संवत् १७२७ को हुई।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३१७. डूंगरसिंह गहलोत का अभिलेख

क. नागोर

ख. पौष वदि १३ वि० सं० १७२७

ग. अभिलेख एक हवेली में लगा हुआ है तथा लेख में कहा गया है कि यह हवेली डूंगरसिंह गहलोत की है। अभिलेख में नागोर के राजा रायसिंह व बादशाह औरंगजेब का भी नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३१८. राजा इन्द्रसिंह का अभिलेख

क. जोधपुर

ख. माघ सुदि १५ वि० सं० १७३७

ग. राजा इन्द्रसिंह के राज्य काल में सिकदार डूंगरसी गलत (गहलोत) द्वारा एक कुंड बनवाए जाने का नामोल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा अन्वेषणा भाग १ अंक २ में सम्पादित तथा सुमेर रि० १९४४ पृष्ठ ५ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३१९. सती स्मारक अभिलेख

क. कोसाणा

ख. आषाढ़ सुदि १५ वि० सं० १७३९

ग. पीरथराज सुजाणसिषोत की मृत्यु व उसकी पत्नि सखबल के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देजश

❀

३२०. वापी अभिलेख

क. लवेरा खुर्द

ख. वैशाख सुदि ३ सोमवार वि० सम्वत् १७४३

ग. कनोजिया राठोड़ रडमलजी, पुत्र चम्पाजी, पुत्र जैसाजी पुत्र भैरवदासजी, पुत्र मंडरण जी, पुत्र गोपालदास, पुत्र वीठलदास, पुत्र अजवसिंह की पत्नि भटियानी किसन जी ने वावड़ी का निर्माण करवाया। भटियानी किसन जी के पूर्वजों की निम्न नामावली दी है—१. भाटी रावल कलिकरण २. जैसा ३. अणद ४. नीबा ५. मना ६. सुरतण ७. रघुनाथ, जिसकी कि पुत्री किसन जी थी। वावड़ी के निर्माण का कार्य संवत् १७४६ के कार्तिक मास में पूरा हुआ जबकि बादशाह औरंगजेब था व जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह थे। अभिलेख में दलथम्भन का भी नाम दिया गया है।

घ. डा० बृजमोहन जावलिया द्वारा मरूभारती में सम्पादित।

ङ. गजधर माली अरग (?)

च. देशज

❀

३२१. सती स्मारक अभिलेख

क. डीडवाना

ख. श्रावण सुदि १२ वि०सं० १७४७

ग. अभिलेख में हरीकरण की पत्नि के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३२२. महाराजा अजीतसिंह का ताम्रपत्र

क. सारण

ख. ज्येष्ठ शुक्ला ७ गुरूवार वि० सं० १७५२ [४ जून सन् १६९६ ई०]

ग. गोरंभजी के मठ के निमित्त आयस दयालवन व शीतलवन को सारण ग्राम प्रदान किए जाने का उल्लेख ताम्रपत्र में हुआ है।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा शोधपत्रिका भाग १८ अंक ३ पृष्ठ ३२ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३२३. महाराजा अजीतसिंह का अभिलेख

क. सारण

ख. आषाढ़ वदि १ वि० सं० १७५६ [४ जून सन् १७०३ ई०]

ग. अभिलेख में कहा है कि आयस सांवतवन व खेचरवन को महाराज सूरसिंह ने हीरावस ग्राम दान में दिया था, लेकिन विक्रम संवत् १७४७ [१६९० ई०] में लसकरी खां नामक तुर्क के आक्रमण के समय वह ताम्रपत्र खो गया अतः इस समय महाराजा अजीतसिंह ने यह ग्राम पुनः उन्हें प्रदान कर दिया।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा शोधपत्रिका भाग १८ अंक ३ पृष्ठ ३४ पर संपादित

ङ. ....

च. देशज

३२४. देवली अभिलेख

क. गांगाणी

ख. चैत्र सुदि ५ सोमवार वि० सं० १७६४

ग. भण्डारी तेजराज पर देवली बनवाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. मारवाड़ी

३२५. सती स्मारक अभिलेख

क. कोसाणा

ख. आषाढ़ वदि १ वि० सं० १७६४

ग. अपतसिंह की मृत्यु व उसकी पत्नि नाथावत मदनकंवर के सती होने का उल्लेख हुआ है।

ग. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

३२६. सती स्मारक अभिलेख

क. कोसाणा

ख. श्रावण वदि ८ सम्वत् १७६५

ग. अखेराज परथीराजसिंघोत की मत्यु व उसकी पत्नि भटियाणी के सती होने का उल्लेख हुआ है ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३२७. सती स्मारक अभिलेख

क. आसोप

ख. कार्तिक सुदि ६ वि० सम्वत् १७६५ शाके १६३०

ग. राठोड़ राज श्री मांडण के प्रपौत्र, दलपत के पौत्र व सबलसिंह के पुत्र श्री भीमसिंह के काम आने व उसकी पत्नि कीलांणदे चऊवाण के सती होने का उल्लेख हुआ है ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३२८. महाराजा अजीतसिंह का कीर्ति-स्तम्भ लेख

क. जोधपुर

ख. पौष शुक्ल ७ वि० सम्वत् १७६५ शाके १६३० [सन् १७०८ ई०]

ग. अभिलेख में जोधपुर के राठोड़ शासकों की रावजोधा (जोधपुर नगर का संस्थापक) से अजीतसिंह तक की वंशावली दी गई है । महाराजा अजीतसिंह की रानी का नाम सुखदेजी देवड़ी दिया गया है जो सिरोही के शासक अखेराज की पुत्री थी ।

घ. मांगीलाल व्यास द्वारा शोधपत्रिका भाग १८ अंक ३ पृष्ठ २८ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३२९. महाराजा अजीतसिंह का कैवायमाता मन्दिर अभिलेख

क. किणसरिया

ख. आषाढ़ सुदि शुक्रवार सं० १७६८ शाके १६३३ [सन् १७१३ ई०]

ग. अमात्य खेतसी भंडारी, उसके पुत्र विजेराज व महाराजा अजीतसिंह द्वारा केवल्य देवालय के सम्मुख श्री भवानी के मन्दिर का निर्माण करने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. मांगीलाल व्यास द्वारा शोधपत्रिका भाग १८ अंक ३ पृष्ठ ३१ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

३३०. सती स्मारक अभिलेख

क. कोसाणा

ख. वैशाख सुदि ११ सं० १६७०

ग. राज महदसिंह अखेराजोत की मृत्यु व उसकी पत्नियों सोकंवर व भटियाणी कलीकंवर के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३३१. महाराजा अजीतसिंह का अभिलेख

क. सेखावास

ख. माघ वदि १४ वि० सम्वत् १७७० [१४ जनवरी सन् १७१३ ई०]

ग. महाराजा अजीतसिंह द्वारा गोरंमनाथ को सोजत परगने का ग्राम सेखावास (वर्तमान पाली जिला) चढाने का उल्लेख इस ताम्रपत्र में हुआ है । ग्राम की रेख ५०००) रु० बताई गई है ।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा शोधपत्रिका वर्ष १८ अंक ३ पृष्ठ ३५ पर सम्पादित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३३२. शिव मन्दिर अभिलेख

क. सिगोड़ियों की बारी, जोधपुर

ख. ज्येष्ठ वदि १ वि० सम्वत् १७७५

ग. किसी चतुर्भुज द्वारा अपनी माता के स्वर्गवास पर उक्त मन्दिर के मन्दिर का निर्माण करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३३३. महाराजा श्री अभयसिंह का ताम्रपत्र

क. कुंपडावास

ख. द्वितीय आषाढ़ सुदि ५ वि० सं० १७८१ [३ जुलाई सन् १७२५ ई०]

ग. महाराजा अभयसिंह द्वारा दधवाडिया मुकन केसोदास गोकलदासोत को एक गांव कुंपडावास दिए जाने का उल्लेख ताम्रपत्र में हुआ है।

घ. डा० मांगीलाल व्यास द्वारा शोधपत्रिका भाग १६ अंक २ पृष्ठ ३६ पर संपादित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३३४. छतरी अभिलेख

क. मालावास

ख. फाल्गुन सुदि ६ बुधवार वि० सं० १७८५ शाके १६५०

ग. ठाकुर श्री सुरतराम के पुत्र राऊ श्री गोरधन की मृत्यु का उल्लेख है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३३५. देवली अभिलेख

क. खेजड़ला

ख. आश्विन शुक्ला १० शनिवार वि० सं० १७८७

ग. ठाकुर श्री हठेसिंह जो अहमदावाद में काम आए उन पर देवली बनाने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. मुतड़ गिरधरदास रामचंद्रोत द्वारा लिखित।

च. देशज

❀

३३६. महाराजा अभयसिंह का जैन अभिलेख

क. बिलाड़ा

ख. मार्गशीर्ष सुदि २ सोमवार वि० सम्वत् १८०३ शाके १६६८

ग. अभिलेख में महाराज राज राजेश्वर श्री अभयसिंह के राज्य काल का उल्लेख हुआ है साथ ही महाराज कुमार रामसिंह का भी नामोल्लेख हुआ है।

घ. पूर्णचन्द नाहर द्वारा जै०ले०सं० भाग १ पृष्ठ २५० पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३३७. महाराजा रामसिंह का अभिलेख

क. मारोठ

ख. कार्तिक सुदि ११ सोमवार वि० सं० १८०७ [२० अक्टूबर सन् १७५० ई०]

ग. महाराजाधिराज महाराजा श्री रामसिंह के शासनकाल में महारोठ (मारोठ) नगर में श्री खेमकीर्त्ति द्वारा अपने गुरु सकलकीर्त्ति के गुरु श्री नरेन्द्रकीर्ति की छतरी वनवाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. सुमेर रि० सन् १९४५ पृष्ठ ६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३३८. महाराजा रामसिंह कालीन अभिलेख

क. नागोरी गेट, मेड़ता

ख. मार्गशीर्ष सुदि ६ सोमवार वि० सं० १८०७ [२६ नवम्बर सन् १७५० ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि महाराजा रामसिंह व बखतसिंह के मध्य जब युद्ध हुआ उस समय लांबा ग्राम के सांवलदासोत शेखावत गुमानसिंह रामसिंहोत काम आया ।

घ. सुमेर रि० १६४५ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३३९. महाराजा रामसिंह कालीन अभिलेख

क. नागोरी गेट, मेड़ता

ख. मार्गशीर्ष सुदि ६ सोमवार वि०सं० १८०७ शाके १६७२ [२६ नवम्बर १७५० ई०]

ग. कहा गया है कि महाराजा जी (रामसिंह) व बखतसिंह के मध्य जब युद्ध हुआ उस समय ठाकुर शेरसिंह सरदारसिंघोत, मेड़तिया माधोदासोत जो रीयां का ठाकुर था, काम आया ।

घ. सुमेर रि० १६४५ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३४०. महाराजाधिराज विजयसिंह का अभिलेख

क. फलोधी

ख. माघ वदि १ वि० सं० १८०६

ग. अभिलेख में कहा गया है कि जोगीदास ने राजराजेश्वर महाराजा श्री विजयसिंह के विरुद्ध विद्रोह कर फलोधी के दुर्ग पर अधिकार कर लिया । इस महाराजा की फोज ने दुर्ग पर आक्रमण किया व सुरंग लगा कर दुर्ग जीत लिया । जोगीदास मारा गया । अभिलेख में महाराज कुमार श्री फतेसिंह का भी नामोल्लेख हुआ है ।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०० पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३४१. सोमनाथ मन्दिर अभिलेख

क. पाली

ख. सम्वत् १८२२ शाके १७५४

ग. किसी सोमपुरा ब्राह्मण द्वारा सोमनाथ के मन्दिर में नन्दी की प्रतिमा अर्पित किए जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३४२. सती स्मारक अभिलेख

क. पाल

ख. माघ वदि ११ सोमवार वि० सं० १८२२

ग. कनोजिया राठोड़ वाजपंत (?) के पुत्र केसर पनजी की मृत्यु व उसकी पत्नि के सती होने का उल्लेख अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३४३. स्मारक अभिलेख

क. डीगाड़ी

ख. चैत्रवदि ५ सोमवार वि० सं० १८२३

ग. पडीयार (प्रतिहार) गोत्रीय लालसिंह की मृत्यु का उल्लेख इस लेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३४४. सती स्मारक अभिलेख

क. डीडवाना

ख. माघ सुदि १ सोमवार वि० सम्वत् १८३५ शाके १७००

ग. खीची ठाकुर गोरधन की मृत्यु व उसकी दो पत्नियों के सती होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३४५. स्मारक अभिलेख

क. खेजड़ला

ख. माघ वदि ५ वि० सं० १८३७

ग. दहिया लालसिंह व भगवानसिंह आइदानोत कनचोवारी डेरे पर हुए युद्ध में काम आए।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३४६. स्मारक अभिलेख

क. डीडवाना

ख. वैशाख सुदि ३ वि० सं० १८४३

ग. महंत जानकीदास पर स्मारक बनवाए जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३४७. स्मारक अभिलेख

क. रीयां

ख. माघ सुदि १५ गुरूवार वि० सं० १८४४

ग. प्रस्तुत अभिलेख में छतरी के निर्माण का उल्लेख हुआ है। कहा गया है कि छतरी की नींव गोरधनदास ने रखवाई तथा उसका निर्माण रघुनाथ हरजीमल ने करवाया। इस पर सेठ जीवणदास मुहणोत ने उक्त तिथि को कलश चढवाया। नींव देने का कार्य फाल्गुन सुद १ वि. सं. १८४१ में हुआ था।

घ. शिवसिंह चोयल द्वारा राजस्थानी भारती पृष्ठ ३७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३४८. गुलाबसागर के कीर्तिस्तम्भ का लेख

क. जोधपुर

ख. श्रावण सुदि ५ गुरूवार वि०सं० १८४५ शालिवाहन शाके १७१० [२ सितम्बर सन् १७५३ ई०]

ग. महाराजाधिराज (विजयसिंह) की पासवान गुलाबबाई व उसके पुत्र शेरसिंह द्वारा गुलाबसागर के निर्माण का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. सुमेर रि० १६४६ पृष्ठ ६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३४६. सती स्मारक लेख

क. आसोप

ख. भाद्रपद सुदि २ शुक्रवार वि० सम्वत् १८४७ शाके १७१२

ग. राठोड़ राज श्री महेसदास के मेड़ते में काम आने व उनकी पत्नि रतना सोलंकिनी के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३५०. स्मारक अभिलेख

क. नाडसर

ख. भाद्रपद सुदि ६ मंगलवार वि० सम्वत् १८४७

ग. मेडते के युद्ध में मालमसिंह देवीसिंघोत के काम आने का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देजश

❀

३५१. महाराजा भींवसिंह का अभिलेख

क. फलोदी

ख. आषाढ़ सुदि ५ रविवार वि० सं० १८५२ शाके १७१७

ग. अभिलेख में कहा है कि श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री भीवसिंह के शासन काल में महेश्वरी पं० साहजी परमानन्द के पुत्रों—धनरूप, सरूपचंद व केवल राम ने सूर्य प्रतिमा का निर्माण करवाया।

घ. तैस्सीतोरी द्वारा ज०प्रो०ए०सो०बं० खण्ड XII पृष्ठ १०१ पर लिप्यन्तरित।

ङ. मथेन सिरचन्द द्वारा लिखित, उस्ताद खान द्वारा उत्कीर्ण।

च. देशज

३५२. सती स्मारक अभिलेख

क. आसोप

ख. फाल्गुन वदि ४ गुरुवार वि० सं० १८७९ शाके १७९५

ग. राठोड़ राज श्री केसरीसिंह जी की मृत्यु व उनके साथ उनकी खवास चौथा के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३५३. सती स्मारक अभिलेख

क. डीडवाना

ख. वैशाख वदि ११ वि० सं० १८८३ शाके १७४८

ग. जोसि (शी) शिवकृष्ण की पत्नि हरसा के सती होने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३५४. महाराजा मानसिंह का ताम्रपत्र

क. सारण

ख. फाल्गुन सुदि ५ वि० सम्वत् १८८३ [२ मार्च सन् १८२७ ई०]

ग. महाराजा मानसिंह द्वारा गोरंभनाथ के मठ के निमित्त सोजत परगने (वर्तमान पाली जिला) का गांव सेखावस दान स्वरूप दिए जाने का उल्लेख है।

घ. सुमेर रि० १९४५ पृष्ठ ६-७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३५५. क्रिया के झालरे का अभिलेख

क. विद्याशाला, जोधपुर

ख. माघ शुक्ला १३ सोमवार वि० सम्वत् १८८५

ग. उदयराम के पुत्र सुखदेव द्वारा झालरे का निर्माण करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३५६. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुंड, मण्डोर

ख. माघ सुदि १३ सोमवार वि० सम्वत् १८८५ शाके १७५१
[१६ फरवरी सन् १८२६ ई०]

ग. जोधपुर की महारानी कछवाही सूर्यकंवरी, जो जयपुर नरेश प्रतापसिंह की पुत्री थी, की मृत्यु माघ सुदि ५ रविवार वि०सं० १८८२ शाके १७४८ [२८ जनवरी १८२६ ई०] को हुई जिसकी स्मृति में उक्त तिथि को छतरी बनवाई गई।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३५७. सती स्मारक अभिलेख

क. पाली

ख. श्रावण सुदि ११ वि० सं० १८८६

ग. अभिलेख में कहा गया है कि महाराजा मानसिंह के शासन काल में लालाजी के पुत्र हरनाथ की मृत्यु हुई व उसकी पत्नि फतू बर्फा सती हुई। इनका ग्राम ऐंदला-रो-गुड़ों व जात मूलेवा बताई गई है।

घ. शिवसिंह चोयल द्वारा 'राजस्थान भारती' पृष्ठ ३८ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३५८. स्मारक अभिलेख

क. बाला

ख. कार्तिक सुदि १४ शनिवार वि० सं० १८८७

ग. किसी जगाजी बोहरा की मृत्यु व उसकी पत्नि के सती होनें का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. शिवसिंह चोयल द्वारा 'राजस्थान भारती' पृष्ठ ३६ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३५९. माताजी के मन्दिर का अभिलेख

क. खेजड़ला

ख. आषाढ़ सुदि ९ बुधवार वि० सम्वत् १८८९

ग. ठाकुर सगतीदान द्वारा भैंसार माता के मन्दिर में कमठा करवाने का उल्लेख है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३६०. जैन हस्ति यन्त्र अभिलेख

क. पाली

ख. माघ सुदि १० वि० सं० १८९३

ग. हजारीमल द्वारा हस्ति यन्त्र मन्दिर को अर्पित किए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३६१. सती स्मारक अभिलेख

क. सिगोड़ियो की बारी, जोधपुर

ख. आषाढ़ वदि २ वि० सं० १९००

ग. जोशीजी विजेराम की पत्नि सुवदे अपने पुत्र हरिराम की मृत्यु पर सती हुई। छत्री का निर्माण हरिराम की पत्नि ने वैशाख वदि.......गुरूवार को करवाया।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३६२. महाराज तखतसिंह का अभिलेख

क. भीनमाल

ख. फाल्गुन सुदि ३ वि० सम्वत् १९०० [२१ फरवरी सन् १८४४ ई०]

ग. भीनमाल के महाजनों का दण्ड क्षमा करने के सम्बन्ध में सूचना दी गई है।

घ. सुमेर रि० १९४२ पृष्ठ ७ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३६३. सती स्मारक लेख

क. डीडवाना

ख. भाद्रपद वदि १२ सोमवार वि० सम्वत् १९०१

ग. कायस्थ-माथुर माणकभण्डारी ठाकुर सुषराम का प्रपौत्र सुरतराम का पौत्र व सांवतराम के पुत्र मेघराज की मृत्यु पर उसकी पत्नि पारबती के सती होने का उल्लेख इस लेख में हुआ है ।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३६४. जैन मन्दिर अभिलेख

क. राणकपुर

ख. वैशाख सुदि ११ गुरूवार वि० सम्वत् १९०३

ग. कक्कसूरी का नामोल्लेख हुआ है ।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५८ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३६५. सती स्मारक अभिलेख

क. खारिया-मीठापुर

ख. कार्तिक शुक्ला १ शनिवार वि० सम्वत् १९०४

ग. अभिलेख में खियाजी कागे (सीरवी) की मृत्यु व उनकी पत्नि सेपटी के सती होने का उल्लेख हुआ है ।

घ. शिवसिंह चोयल द्वारा राजस्थान भारती पृष्ठ ३८ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३६६. कूपनिर्माण अभिलेख

क. डीडवाना

ख. आषाढ़ सुदि ७ शनिवार वि० सम्वत् १९०५

ग. डीवाना निवासी सगिराम व उदयराम द्वारा कुए के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

३६७. महाराजाधिराजा तखतसिंह का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. चैत्र सुदि ११ वि० सं० १९१०

ग. महाराजाधिराज महाराजा श्री तखतसिंह द्वारा यह आदेश दिया गया स्थानीय दयालजी महाराज के मेले के अवसर पर कोई शस्त्र युक्त सिपाही नहीं आवे।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

३६८. लक्ष्मीनाथ मन्दिर अभिलेख

क. पीपाड़

ख. चैत्र सुदि ५ सोमवार वि० सं० १९२१ शाके १७८६

ग. ठाकुर राज श्री गुलाबसिंह के राज्यकाल में शेषजी के प्राचीन मन्दिर के जीर्णोद्धार का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है। यह कार्य नगर के माहेश्वरियों द्वारा किया गया।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

३६९. महाराजा तखतसिंह का आज्ञालेख

क. बिलाड़ा

ख. माघ सुदि १ मंगलवार वि० सं० १९२६

ग. अभिलेख में महाराजा तखतसिंह द्वारा प्रदत्त आज्ञा का उल्लेख हुआ है कि वाण गंगा के पास क्षेत्र से कोई व्यक्ति मछली नहीं पकड़ेगा। पकड़ने वाला दण्ड का भागी होगा।

घ. शिवसिंह चोयल द्वारा राजस्थान भारती पृष्ठ ३७ पर लिप्यन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३७०. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मंडोर

ख. वैशाख सुदि १२ वि० सम्वत् १९३३

ग. महाराज श्री मोबतसिंह की पत्नि बागेली, श्री शिवनाथसिंह की पुत्री, श्री तुलसी प्रसाद कुंअरी बाई की मृत्यु कार्तिक वदि ८ वि० स० १९३१ को हुई जिसकी छत्री का निर्माण उक्त तिथि को हुआ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३७१. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मण्डोर

ख भाद्रपद वदि ८ वि० सम्वत् १९३३

ग. महाराजा तखतसिंह जी की म ारानी वड़ा चवाण जी के पुत्र महाराज कुमार श्री मोवतसिंह जी की पत्नि, नीमच के भवानीसिंह की पुत्री, देवड़ी उम्मेदकुंवर की मृत्यु भाद्रपद सुदि ४ संवत् १९३१ को हुई जिस पर छतरी का निर्माण कामदार गेलोत (गहलोत) गजराज द्वारा उक्त तिथि को हुआ।

घ. दुर्गालाल मायुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३७२. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मण्डोर

ख. आषाढ़ वदि········ सोमवार सं० १९३८

ग. अभिलेख में राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री श्री बड़ा श्री महाराज श्री मानसिंहजी की रानी श्री पांचवी श्री चौहानजी श्री आनन्दसिंह की पुत्री श्री जसकुंवर बाई की श्रावण वदि·······सोमवार को अर्ध रात्रि के समय मृत्यु का उल्लेख हुआ है। इनकी छत्री का निर्माण एवं प्रतिष्ठा उक्त तिथि को इन्द्रकंवर बाई ने करवाई। अन्त में कामदार भीलावत सीवचन्द का नामोल्लेख हुआ है।

घः दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ····

च. देशज

❀

३७३. स्मारक अभिलेख

क. खेजड़ला

ख. प्रथम श्रावण वदि १४ वि० सम्वत् १९३९

ग. ठाकुर रणजीतसिंह हिम्मतसिंहोत खांप भाटी उर्जनोत की मृत्यु का उल्लेख हुआ है : छतरी की प्रतिष्ठा वैशाख वदि ५ बुधवार वि०सं० १९६० को हुई।

घ. ····

ङ. ····

च. देशज

❀

३७४. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड मण्डोर

ख. चैत्र सुदि ५ वि० सं० १९३९ शाके १८०४

ग. महाराजाधिराज महाराजा श्री तख्तसिंह की महारानी पूरबी देवड़ी श्री चांद कंवर बाई, जो कोटे के राव जी श्री शिवसिंह की पुत्री थी, की मृत्यु का उल्लेख हुआ है। अन्त में यह भी कहा गया है कि महाराणिजी बड़ा देवड़ी जी श्री गुलावकंवर बाई ने उक्त महारानी के लिए छतरी बनवाई और फाल्गुन वदि ९ संवत्········को उसकी प्रतिष्ठा करवाई।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ····

च. देशज

❀

३७५. छतरी अभिलेख

क. सुजान सागर, खेजड़ला

ख. वैशाख वदि ५ बुधवार वि० सं० १९४१

ग. ठाकुर श्री हिम्मतसिंह शार्दूलसिंहोत खांप भाटी उर्जनोत की मृत्यु चैत्र सुदि ८ वि० सं० १९१९ में हुई व उनकी छत्री का निर्माण ठाकुर रणजीतसिंह के राज्यकाल में हुआ जिसकी प्रतिष्ठा उक्तांकित तिथि को हुई।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३७६. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मण्डोर

ख. चैत्र सुदि........वि० सम्वत् १९४४

ग. महाराजा तख्तसिंहजी की रानी बड़ा चवाणजी (चौहानजी) की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३७७. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड मण्डोर

ख. आषाढ़ सुदि ७ सम्वत् १९४८

ग. वड़ा राज श्री परिथीसिंह (पृथ्वीसिंह) की रानी देवड़ी, मुकनसिंह की पुत्री की मृत्यु भाद्रपद वदि १५ को हुई। उनकी छत्री का निर्माण व प्रतिष्ठा उनकी भतीजी चाँदकंवर व रतनकंवर ने उक्त तिथि को करवाई।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३७८. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मण्डोर

ख. वैशाख सं० १९५४

ग. महाराजा तख्तसिंह की रानी भटियानी, ठाकुर श्री करणजी की पुत्री की मृत्यु पोष वदि ११ संवत् १९४८ को हुई। उनकी छत्री का निर्माण उक्त तिथि को हुआ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३७९. जैन प्रतिमा अभिलेख

क. पाली

ख. फाल्गुन सुदि ३ सं० १९५५

ग. प्रतिमा निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. सस्कृत

❀

३८०. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मण्डोर

ख. फाल्गुन सुदि ३ शुक्रवार वि० सं० १९५७

ग. महाराजा मानसिंह की रानी भटियानी परतापकंवर, देराव के भाटी ठाकुर गोयंदसिंह की पुत्री की माघ सुदि १३ संवत् १९४३ को मृत्यु हुई। उस पर छत्री का निर्माण इन्दरकंवर बाई (छोटी रानी) ने करवाया व उसकी प्रतिष्ठा उक्त तिथि को हुई।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देजश

❀

३८१. दीवान प्रतापसिंह का अभिलेख

क. बिलाड़ा

ख. भाद्रपद शुक्ला २ वि० सं० १९५८

ग. अभिलेख में कहा गया है कि आईमाता के मन्दिर में संगमरमर की फर्श एवं चाइना टाइल्स की दीवारों के निर्माण का कार्य दीवान प्रतापसिंह के समय में मुलाबाबाजी के शिष्य यती गेनाबाबाजी ने करवाया । ठेकेदार मौलाबगस था ।

घ. शिवसिंह चोयल द्वारा राजस्थान भारती पृष्ठ ३८ पर लिप्यन्तरित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३८२. स्मारक अभिलेख

क. खेजड़ला

ख. ज्येष्ठ सुदि ५ वि० सम्वत् १९७०

ग. ठाकुर माधोसिंह रणजीतसिंह भाटी उर्जनोत् की मृत्यु का उल्लेख हुआ है । छत्री की प्रतिष्ठा वैशाख सुदि १३ शुक्रवार वि० सं० १९७६ को हुई ।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

३८३. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मण्डोर

ख. प्रथम वैशाख वदि ८ बुधवार वि० सं० १९७१

ग. महाराजा श्री तख्तसिंह जी की बड़ी दादीजी श्री तीजा देवड़ी जी, सिरोही इलाके के नीमच के देवड़ा उदयसिंह की पुत्री की मृत्यु आसोज वदि अमावस्या संवत् १९६८ को हुई । इन पर छत्री का निर्माण एवं उसकी प्रतिष्ठा देवड़ा नवलसिंह की पुत्री जड़ावकंवर बाई ने उक्त तिथि को करवाई । यह भी कहा गया है कि जड़ावकंवर तीजा की भतीजी थी ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित ।

ङ. ....

च. देशज

❀

३८४. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मंडोर

ख. भाद्रपद वदि ८ वि० सम्वत् १९७१

ग. महाराजा तखतसिंह की रानी चौहानजी (चतुर्थ), वकतावरसिंह की पुत्री पर छत्री बनवाने का उल्लेख हुआ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३८५. श्री उम्मेद आर्ट विद्यालय अभिलेख

क. जोधपुर

ख. सम्वत् १९७२

ग. अभिलेख में कहा गया है कि गजधर सन्तोष ने अपनी पत्नि श्रीमति सोनी देवी की स्मृति में यह भवन कला कौशल एवं विद्यावृद्धि हेतु जोधपुर महाराजा को समर्पित किया तदुपरान्त स्वजाति के बन्धुओं की प्रार्थना पर यह भवन सन्तोष ने जाति (सुथार) के हितार्थ विद्यालय स्थापित करने हेतु पुनः मांगा। इस प्रार्थना को सरप्रताप व जोधपुर नरेश (श्री उम्मेदसिंह) ने स्वीकार किया व जाति के लिये आर्ट स्कूल खोलने हेतु दिनांक ९-७-१९२० को यह भवन दे दिया।

घ. ....

ङ. ....

च. हिन्दी

❀

३८६. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मण्डोर

ख. वैशाख वदि ९ वि० सं० १९७५

ग. महाराजा श्री मोबतसिंह जी की रानी श्री नरूकी जी लूणकरण वाई, अलवर निवासी की मृत्यु पोष वदि ६ वि० सं० १९६६ को हुई। उनकी छत्री का निर्माण उक्त तिथि को हुआ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३८७. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड, मण्डोर

ख. आषाढ़ वदि ६ वि० सं० १९७५

ग. महाराजा तख्तसिंह की रानी वड़ा देवड़ी जी गुलाबकंवर बाई, सिरोही के महाराव सीवसिंह की मृत्यु कार्ति वदि १० संवत् १९५१ को हुई। इन की छत्री का निर्माण कामदार वाघेला तेजसिंह की ओर से उक्त थिति को हुआ।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

✿

३८८. जैन मन्दिर अभिलेख

क. गांगाणी

ख. माघ शुक्ला ६ वि० सं० १९८२

ग. सम्राट सम्प्रति द्वारा महावीर स्वामी के निर्वाण के २७३ वर्ष बाद अर्थात् विक्रम संवत् से १९७ वर्ष पूर्व जैन श्वेताम्बर मन्दिर के निर्माण का उल्लेख हुआ है। इसका पांचवी बार जीर्णोद्धार भारतवर्षीय जैन संघ द्वारा उक्त तिथि को हुआ। लेख के अन्त में मैनेजर मेहता घेवरचन्द छाजेड़ के हस्ताक्षर हैं।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

✿

३८९. रामसर बेरे का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. श्रावण वदि ६ सोमवार वि० सम्वत् १९८३

ग. कहा गया है कि इस बेरे (कुए) का निर्माण चैत्र सुदि ११ वि० सं० १९१० को महाराजा के आदेश से समस्त निरंजनी साधुओं ने मिलकर करवाया व उक्त तिथि को इसका जीर्णोद्धार करवाया गया।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

✿

३९०. स्मारक अभिलेख

क. पंचकुण्ड मण्डोर

ख. ज्येष्ठ सुदि १ सं० १९८४ [११ जून सन् १९०८ ई०]

ग. महाराजा तख्तसिंह की रानी राणावत उदेकंवर, धमोधर के राणावत चन्दनसिंह की पुत्री की कार्तिक सुदि १४ सम्वत् १९७५ को मृत्यु हुई। इन पर छत्री का निर्माण व प्रतिष्ठा इनकी पुत्री, माधोसिंह की बड़ी रानी ने उक्त तिथि को करवाई।

घ. दुर्गालाल माथुर द्वारा पठित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३९१. महाराजा मानसिंह का अभिलेख

क. जालोर

ख. ....

ग. शिशु हत्या के विरूद्ध एवं विवाह आदि अवसरों पर किए जाने वाले खर्च की राशि से सम्बन्धित महाराजा साहब व गर्वनर जनरल के प्रतिनिधि की उपस्थित में पारित प्रस्ताव की प्रतिलिपि अभिलेख में दी गई है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५८ पर निर्देशित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३९२. महाराजा मानसिंह का अभिलेख

क. जैतारण

ख. लेखाङ्क २९१ के अनुसार

ग. लेखाङ्क २९१ के अनुसार

घ. रेऊ द्वारा द ग्लोरियस राठोर्स में लिप्यंन्तरित।

ङ. ....

च. देशज

❀

३९३. दधिमतिमाता के मन्दिर का गुप्त सम्वत् का अभिलेख

क. मांगलोद (जिला नागोर)

ख. श्रावण वदि १० ३ (१३) गुप्त सम्वत् २०० ८० ९ (२८९)
[तदनुसार वि० सम्वत् लगभग ६०८]

ग प्रस्तुत अभिलेख में किसी ध्रुहूलण नामक शासक का नामोल्लेख हुआ है। उक्त शासक के शासनकाल में अविघ्ननाग की अध्यक्षता में दध्या ब्राह्मण (दाहिमा-ब्राह्मण) गोष्ठिका की ओर से दधिमति माता की प्रार्थना की गई है तथा मन्दिर के निमित्त दिये जाने वाले दान का उल्लेख किया गया है। इसके उपरांत दान दाताओं के नाम उनके पिता का नाम, गोत्र तथा दान स्वरूप दी जाने वाली राशी का उल्लेख हुआ है। दान स्वरूप प्रदत्त धन के प्रसंग में द्रम्म नामक मुद्रा का उल्लेख हुआ है।

घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०६-७ पृष्ठ ३० पर निर्देशित तथा पं० रामकर्ण आसोपा द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ३०३ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३९४. महाराज कटुकराज का सिंह संवत का अभिलेख

क. सेवाडी

ख भाद्रपद सुदि ११ सं० (सिंह सम्वत्) ३१ [तदनुसार वि० सं० १२०२]

ग. अभिलेख में (नड्डूल) के महाराजा कटुकदेव के शासन काल में युवराज जयतसीह को समीपाटी (सेवाड़ी) का अधिकारी बताया गया है। छठी पंक्ति में सिंधुराज का नामोल्लेख हुआ है। लेख में किसी दान विशेष का उल्लेख है।

घ. भण्डारकर द्वारा ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ३४ व दुर्गालाल माथुर द्वारा रा०प्र०अ० खण्ड १ भाग १ पृष्ठ ४४ पर सम्पादित।

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३९५. नाडोल चौहान सहजपाल का खण्डित लेख

क. मण्डोर

ख. ....

ग. चौहानों की निम्न वंशावली दी है—१. शाकंभरी का राजा वाक्पति २. लक्ष्मण नड्डुल (नाडोल) का शासक ३. सोभित ४. बलिराज ५. [बलिराज का चाचा] विग्रहपाल ६. महेन्द्र ७. अणहिल्लदेव ८. जेन्दराज । इसके बाद अवशिष्ट खण्डित भाग में आसराज व पृथ्वीपाल के नाम है। अन्त में रतनपाल व उसके पुत्र रायपाल के नाम है। रायपाल की रानी पद्मल्लदेवी के गर्भ से सहजपाल का जन्म हुआ।
घ. दयाराम साहनी द्वारा आ०स०एन०रि० १९०९-१० भाग २ पृष्ठ १०२ पर लिप्यन्तरित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

३९६. केल्हणदेव का ताम्रपत्र

क. वांणेरा
ख. कार्तिक सुदि ११ वि० सं०........
ग. अभिलेख में [नाडोल के चौहान शासक] महाराजाधिराज केल्हणदेव के समय में राजकुंवर सींह के पुत्र अभयसिंह द्वारा दिये जाने वाले दान का उल्लेख है।
घ. भण्डारकर द्वारा प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०८-९ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित व व गर्डे द्वारा ए०इं० खण्ड XIII पृष्ठ २११ पर फलक सहित सम्पादित।
ङ. ....
च. संस्कृत

❀

३९७. चालुक्य कुमारपाल का अभिलेख

क. रतनपुर
ख. ....
ग. चालुक्य कुमारपाल के सामन्त पुनपक्षदेव, महाराज रायपाल के उत्तराधिकारी, के समय में महाराज्ञी द्वारा प्रत्येक मास के दोनों पक्षों की कुछ विशिष्ट तिथियों पर पशु-हत्या नहीं करने का आदेश इस अभिलेख में उल्लिखित है। पुनपक्षदेव के भी हस्ताक्षर है।
घ. भा०इं० पृष्ठ १४४ पर प्रकाशित।
ङ. नाडोल के पोरवाड़ जातीय सुभंकर के पुत्रों-पुतिग व सालिग द्वारा परवानगी।
च. संस्कृत

❀

३९८. नंदादेवी मन्दिर का अभिलेख

क. अरणा

ख. ९............ [दहाई व इकाई का अंक लुप्त हो चुका है।]

ग. ब्राह्मण कृष्ण द्वारा हेमवंत शिखर निवासिनी नंदादेवी के मन्दिर के निर्माण का उल्लेख इस लेख में हुआ हैं।

घ. ....

ङ. ....

च. संस्कृत

❀

३९९. वापी अभिलेख

क. बड़लू

ख. माघ सुदि ७ रविवार वि० सं० १९९९

ग. सूत्र (धार) तोलो, नेता, होतराम, भारमल, सूत्र (धार) धरमसिंह, नरसिंह आदि का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

४००. महाराजाधिराज विजय का अभिलेख

क. वोहरावास (जिला जोधपुर)

ख. आरम्भ की पंक्तियां घिस जाने से तिथि पढ़ने में नहीं आती।

ग. प्रस्तुत अभिलेख में (जोधपुर नरेश) विजयसिंह एवं महाराज कुमार जालमसिंह का नामोल्लेख हुआ है। साथ ही किसी जगुजी को ताम्रपत्र दिये जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

च. देशज

❀

अरबी-फारसी अभिलेख
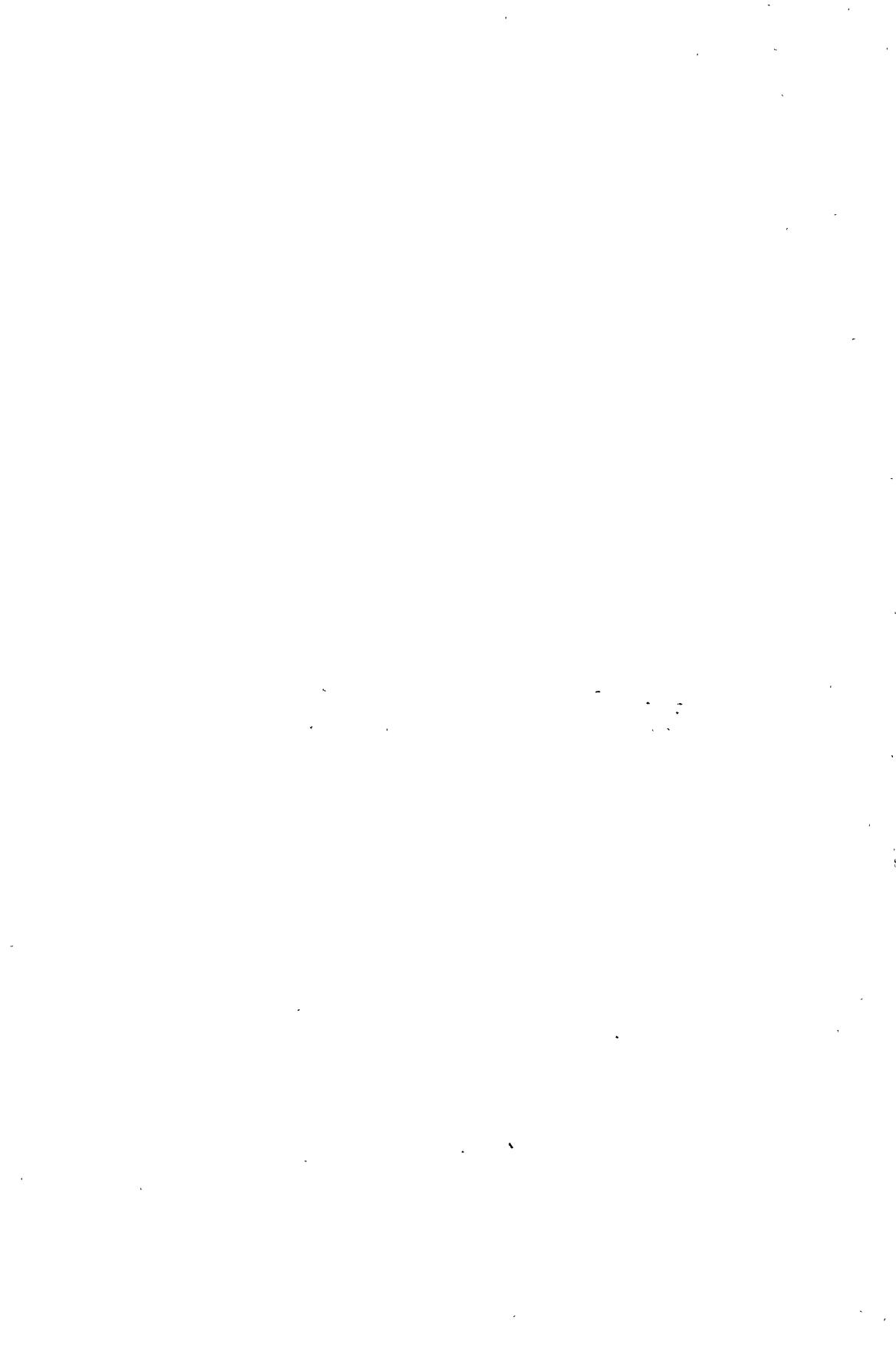
१. ठाकुर धोंकलसिंह की हवेली का अभिलेख

क. वड़ी खाटू (जिला नागोर)

ख. जुमादा १ हि० ५६६ [जनवरी-फरवरी सन् १२०३ ई०]

ग. उक्त तिथि को हवेली के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १६६२-६३ संख्या २०० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

२. ध्वंश मस्जिद का अभिलेख

क. खाटू कलां

ख. हि० सं० ५६६ [सन् १२०३ ई०]

ग. अभिलेख में सम्बन्धित मस्जिद के उक्त तिथि को निर्मित होने का उल्लेख हुआ है।

घ. इं०आ० १६६२-६३ पृष्ठ ६१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

३. दिल्ली दरवाजा अभिलेख

क. डीडवाना (जिला नागोर)

ख. (i) धु'ल-हिज्ज १५ हि० ६०६ [१० जून सन् १२१० ई०]
(ii) द्वितीय रबी १५ हि० ६०८ [२६ सितम्बर सन् १६११ ई०]

ग. ख्वाजगी के पौत्र व महमूद के पुत्र, महान् एवं विद्वान इमाम (धर्माचार्य) रशीदुद्दीन झाऊ की मृत्यु प्रथम तिथि को हुई तथा द्वितीय तिथि को उस पर स्मारक बनवाया गया।

घ. ए०रि०इं०ए० १६६८-६६ संख्या ४११ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

४. उमरावशाह की दरगाह का अभिलेख

क. लाडनूं

ख. धु'ल-हिज्ज १ हि० ६१४ [२८ जनवरी सन् १२८६ ई०]

ग. किसी की मृत्यु का उल्लेख हुआ है ।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या डी ४१६ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

५. मग्रीबीशाह के मकबरे का अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. हि० सम्वत् ६२६ [सन् १२३२ ई०]

ग. मग्रीबीशाह के नाम से प्रसिद्ध, शेख अबूईशाक मग्रीबी के मकबरे के इस अभिलेख में सुल्तान अल्तमश के काल में ऊमर-अल-खिलजी के पौत्र व अहमद के पुत्र मस-ऊद द्वारा तालाव बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है ।

घ. इं०आ० १९५८-५९ पृष्ठ ६४ पर निर्देशित, ए०इं०अ०प०स० १९६६ पृष्ठ ६-७ पर सम्पादित, ए०रि०इं०ए० १९५८-५९ संख्या १७० पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

६. उमरावशाह गाजी की दरगाह का अभिलेख

क. लाडनूं (जिला नागोर)

ख. रमदान ३ सोमवार हि० ६३८ [१८ मार्च सन् १२४१ ई०]

ग. इक्बाल-अस-सुल्तान शाही के पुत्र मुहम्मद की मृत्यु का उल्लेख हुआ है ।

घ ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या डी ४१८ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

७. उमरावशाह गाजी की दरगाह का अभिलेख

क. लाडनूं

ख. हि० ६३८ [सन् १२४१ ई०]

ग. उपरोक्त लेख के अनुसार

घ. ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या डी ४१९ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

८. काजियों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० ६५० [सन् १२५२ ई०]

ग. सम्भवतः किसी मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है। अभिलेख में अलाउद्दौलत वा'द-दीन मुहम्मद तथा मल्खारू'ल उमारा का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या ४१२ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

९. मग्रीबीशाह के मकबरे का दूसरा अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. ११ जुमादि द्वितीय हि०स० ६६६ [२७ फरवरी सन् १२६८ ई०]

ग. गयासुद्दीन बलबन के समय के इस खण्डित अभिलेख में सैफुद्दौलत वद्दीन मलिक-इ-मुलुकि-श-शर्क अहमद (?) सुल्तानी नाम उत्कीर्ण है।

घ. इं०आ० १९५८-५९ पृष्ठ ६४ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१०. उमरावशाह गाजी की दरगाह का अभिलेख

क. लाडनू

ख. हि० ६८४ [सन् १२८६ ई०]

ग. सुपाठ्य नहीं है। मात्र इकबाल सुल्तान शाही नाम पढ़ा जाता है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या डी ४१७ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

११. मस्जिद अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. धु'ल-हिज्ज १ हि० ७०० [७ अगस्त सन् १३०१ ई०]

ग. कुरान की आयत [अध्याय ३ छन्द १८] उत्कीर्ण।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या २०९

ङ. ....

❀

१२. अलाउद्दीन खलजी का अभिलेख

क. खाटू कला

ख. हि० सं० ७०२ [सन १३०२-३ ई०]

ग. अलाउद्दीन के शासन काल में अल् फख़री के पुत्र मोहम्मद द्वारा मस्जिद बनवाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६० पर निर्देशित, ए०इं०अ०प०स० १९६७ पृष्ठ ४ पर सम्पादित, ए०रि०इं०ए० १९६२-६३ संख्या २०२ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१३. ईदगाह की मिह्राब का अभिलेख

क. जालोर

ख. मुहर्रम ५ हि० ७१८ [८ मार्च १३१८ ई०]

ग. उमर कावुली के प्रपौत्र, मुहम्मद के पौत्र व महमूद के पुत्र मलिकु'ल-उमरा ताजुद्दौलत वा'द्दीन हुशंग द्वारा नमजगाह (अर्थात् ईदगाह) बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है। यह निर्माण कार्य महमूद अल गोरी के पौत्र व रुस्तम के पुत्र नुस्रत की देख रेख में हुआ।

घ. ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४९ पर सम्पादित तथा ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या १९४ पर निर्देशित।

ङ. मुहम्मद लाचीन अल-मुक्तसरी अश-शाम्सी द्वारा लिखित।

❀

१४. जलीय आबास की मस्जिद का अभिलेख

क. वड़ी खाटू

ख. द्वितीय रबी १ हि० ७२० [११ मई सन् १३२० ई०]

ग. मलिक ताजुद्दौलत वाद्दीन के प्रान्त पतित्व में वहा उपाधिधारी उमर के पुत्र मुज़फ्फर द्वारा मस्जिद वनवाए जाने का उल्लेख है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १६७ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१५. तोपखाना मस्जिद का अभिलेख

क. जालोर

ख. १ शबान हि० सं० ७२३ [५ अगस्त सन् १३२३ ई०]

ग सुल्तान ग़याथुद-दीन तुग़लक के शासन काल में श'बान हसन काज़िलबाश द्वारा मस्जिद का निर्माण करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३२ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१६. मुहम्मद बिन तुग्लक कालीन अभिलेख

क. खाटू कला

ख. हि० सं० ७३३ [सन् १३३३ ई०]

ग. अभिलेख में अजमेर इलाके के मुहर्रिर सिराज के पुत्र मुअय्यद की देख-रेख में एक भवन निर्माण का उल्लेख हुआ है। यह भी कहा गया है कि इस समय अजमेर इलाके के मुक्ती व अखूर्बेक-ई-मैसर मलिकुल उमरा सैफुद्-दौलत वाद्-दीन नानक के जागीर के अन्तर्गत था।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१७. पीर जुहूरूद्दीन की दरग़ाह का लेख

क. लोहरपुर (जिला नागोर)

ख. सफर हि० ७४५ (अक्षरों में) [जून-जुलाई सन् १३४४ ई०]

ग. किसी की मृत्यु का उल्लेख हुआ है। [मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति का नाम पढ़ा नहीं जा सका।]

घ. ए०रि०इं०ए० १९६५-६६ संख्या डी ३५८ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१८. षट शहीदों का अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. -१ शव्वाल हि० सं० ७६१ [१५ अगस्त १३६०]

ग. उक्त तिथि को छः व्यक्तियों का किसी जिहाद (धर्म युद्ध) में मारे जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है। व्यक्तियों के नामों का उल्लेख नहीं हुआ है।
घ. इ०आ० १९५८-५९ पृष्ठ ६४
ङ. ....

❀

१९. जामा मस्जिद की महराब का लेख

क. लाडनूं
ख. जिल्'क़ादह हि० सं० ७७२ [१२ जून सन् १३७१ ई०]
ग. सुल्तान फिरूज शाह तुग़लक के शासन काल में सेनाध्यक्ष घान्पूर निवासी मुहम्मद फीरूज के आदेश से इस मस्जिद के निर्माण का उल्लेख इस लेख में हुआ है। यह भी कहा गया है कि इस समय मलिक दैलान उप-प्रशासन अधिकारी था।
घ. डा० एम०ए० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ १८-१९ पर सम्पादित।
ङ. ....

❀

२०. डाकखाने के करीब वाली मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना
ख. १० मुहर्रम हि० सं० ७७९ [१९ मई १३७७ ई०]
ग. अभिलेख में हाज़ी बिन मुहम्मद अन नस्साज द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. डा० एम०ए० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ १९ पर सम्पादित।
ङ. ....

❀

२१. शेखों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना
ख. हि० सं० ७७९ [सन् १३७७-७८ ई०]
ग. अभिलेख में अबु'ल मुज़फ्फर सुल्तान फिरूजशाह के शासन में तातार खान् खव्वाज द्वारा मस्जिद का निर्माण करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. डा० एम०ए० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २० पर सम्पादित।
ङ. ....

❀

२२. हज़ीर वाली मस्जिद का अभिलेख

क. लाडनूं

ख. श'बान १० हि० ७८० [२ दिसम्बर १३७८ ई०]

ग. उथमान के पुत्र मलिकु'श-शर्क इख्तियारू-दौलत वा'द् दीन चूबान् के प्रान्तपतित्व काल में भोजा मोथल के पौत्र एवं मुबारक उर्फ जीख के पुत्र अलाउद्दीन द्वारा मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या डी १६१ पर निर्देशित।

ङ. ....

२३. बन्द मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. २० रबी-ई हि० ७८६ [१२ मई सन् १३८४ ई०]

ग. प्रस्तुत अभिलेख में मिन्हाजन्-नाशीही के पौत्र व ख्वाजगी के पुत्र कबीर द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २० पर सम्पादित।

ङ. ....

२४. सम्मनशाह की दरगाह का अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. हि० ८०२ [सन् १३९९-१४०० ई०]

ग. सम्मनशाह के स्मारक के निर्माण का उल्लेख अभिलेख में हुआ है तथा सम्मन शाह की मृत्यु तिथि हि० ६४८ [सन् १२५०-५१ ई०] दी गई है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९५८-५९ संख्या १७७ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

२५. सय्यदों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. रवी हि० ८४० [अक्टूबर १४३६]

ग. अभिलेख में खान-इ-अज़म व खाकान-इ-मुअज्जम मुजाहिद खान द्वारा नगर पनाह व द्वारा के निर्माण का उल्लेख हुआ है ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २१ पर सम्पादित ।

ङ. ....

❀

२६. नागोर के खानज़ादा वंश का अभिलेख

क. खाटू कलां

ख. हि० ८८६ [सन् १४८२ ई०]

ग. इस अभिलेख में भी उसी तथ्य का उल्लेख हुआ है जो लेखाङ्क ७२ में उल्लिखित है । इसके अतिरिक्त इस लेख में यह भी कहा गया है कि मस्जिद का निर्माण ताजुद्-दौलत वाद्दीन् की देख रेख में हुआ ।

घ. इ०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६१ तथा वु०डे०का०रि०इं० II १९४० पृष्ठ १७३ ।

ङ. ....

❀

२७. नागोर के खानजादा राजवंश का अभिलेख

क. खाटू कलां

ख. हि० ८८६ [सन् १४८२ ई०]

ग. प्रस्तुत अभिलेख में नागोर के खानज़ादा राजवंश के शासक फिरोज़ खान (जिसके कि पूर्वजों की वंशावली भी अभिलेख में दी गई है) के शासन काल में खाटू के मुआमला के मुक्ति व शाही अस्तवल के अखुरबेक 'मालिकु'ल उमरा इख्तियारू'द दौलत वाद्' दीन मलिक लाडला खलास द्वारा मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है ।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६१

ङ. ....

❀

२८. दुर्ग अभिलेख

क. लाडनूं

ख. सफर ६ हि० ८८७ (?) [२७ मार्च १४८२ ई०]

ग. मुक्ति (राज्यपाल) व फौजदार मलिक-इ-मुलूकि'श् शर्क इब्राहीम जी (चि) मन खान किश्लूखानी द्वारा कस्बा लाडनूं में रुक्न टाक के पुत्र असअद व कांज की देखरेख में दुर्ग की मरम्मत व द्वार के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ २१-२२ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

२९. मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० ८८६ [सन् १४८४-८५ ई०]

ग. मजलिस-इ-आली फीरूज खान के समय में शहर पनाह व लाडनूं दरवाजे का जीर्णोद्धार हुआ। फीरूज खान नागोर के शम्स खां का प्रपौत्र, मुजाहिद खां का पौत्र व शल्लावत खां का पुत्र था।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ २२ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

३०. जामा मस्जिद की पृष्ठ भित्ती का लेख

क. डीडवाना

ख. शव्वाल ८९६ [अगस्त सन् १४९१ ई०]

ग. शम्स खां के प्रपौत्र, मुजाहिद खां के पौत्र व शलावत खां के पुत्र फीरूज़ खान के शासन काल में शेरदिल खानी के पौत्र व अला के पुत्र मलिक हिजब्र द्वारा मस्जिद का जीर्णोद्धार हुआ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ २२ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

३१. बालापीर की दरगाह के पास वाली मस्जिद का अभिलेख

क. कुम्हारी (जिला नागोर)

ख. हि० ६०२ (?) [सन् १४६६-६७]

ग. सम्भवतः स्वर्गीय खान् फिरूज खान के मकबरे, मस्जिद व बगीचे के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६१-६२ संख्या डी २४३ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

३२. जामी मस्जिद अभिलेख

क. सांचोर

ख. मुहर्रम १ हि० ६१२ [२४ मई १५०६ ई०]

ग. हबीबुल मुल्क के पौत्र तथा सालार अफग़ान के पुत्र बुध द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या डी० १९७ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

३३. बावड़ी वाली मस्जिद का अभिलेख

क. जालोर

ख. हि० ६१२ [सन् १५०६-७ ई०]

ग. इक्ता के मालिक मलिक बुध, सालार का पुत्र, के समय स्मारक निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या १८७ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

३४. दुर्ग में स्थित मस्जिद का अभिलेख

क. जालोर

ख. बुधवार जिल्कद हि० ६२० [जनवरी सन् १५१५ ई०]

ग. इस अभिलेख में गुजरात के शासकों की निम्न वंशावली दी गई है–१. मुजफ्फर शाह २. मोहम्मद शाह ३ अहमद शाह ४. मोहम्मद शाह ५. महमूद शाह

६. अब्दुल नस्र मुजफ्फर शाह (द्वितीय)। यह भी कहा है कि अब्दुल नस्र मुजफ्फर शाह (द्वितीय) के समय में इस मस्जिद का निर्माण हुआ।

घ. ....

ङ. ....

❀

३५. दुर्ग स्थित मस्जिद का अभिलेख

क. जालोर

ख. बुधवार १ जिल्कद शहूर सन ६२५ [२५ अक्टूबर १५१६ ई०]

ग. अभिलेख में महमूद शाह के पुत्र मुजफ्फर शाह के शासन काल में मलिक कबीर सजन (सुभान ?), जहीर-इ-सआदत सुल्तानी द्वारा मस्जिद का निर्माण करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ ३२ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

३६. मुजफ्फर शाह का अभिलेख

क. जालोर

ख. १ रबी II हि० ६२६ [१७ फरवरी सन् १५२३ ई०]

ग. प्रस्तुत अभिलेख में मुजफ्फर शाह के शासन काल में मलिक उबैंद के आदेश से हसन दाउद खां द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ ३३ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

३७. शेख सुलेमान का अभिलेख

क. नागोर

ख. १२ रबि उल अव्वल हि० सं० ६५२ [२४ मई १५४५ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि शेख सुलेमान ने यह 'पोसाल' 'अली यसुफ दौलत खान हुसैन अकबर सैय्यद कबीर' से लेकर सन्त कीरतचन्द को सौंप दी। अब जो कोई यह पोसाल कीरतचन्द से छीनेगा वह कष्टों का भागी होगा।

घ. ....

ङ. ....

❀

३८. तालाब के पास वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. १ शव्वाल हि० ९६० [१० सितम्बर १५५३ ई०]

ग. अभिलेख में कुरान (अध्याय २ आयत ११४) की एक आयत उत्कीर्ण है तदुपरान्त कहा गया है कि इस मस्जिद का निर्माण शेरशाह के पुत्र इस्लाम शाह के शासन काल में रूक्नुद्दीन अलक़ुरेशी अल-हाशिमी के पुत्र अक्ज़ा उल क़ुज़ात काज़ी हाजी उमर ने करवाया।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इ०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३६ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

३९. काज़ियों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. शव्वाल हि० ९६० [सितम्बर १५५३ ई०]

ग. अभिलेख में कुरान की एक आयत दी गई है जिसका आशय यह है कि मस्जिद में जाकर नवाज पढ़ना छोड़ना एक वहुत वड़ा पाप है।

घ. ....

ङ. ....

❀

४०. काजियों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. शव्वाल हि० ९६० [सितम्बर १५५३ ई०]

ग. अभिलेख में कुरान की एक आयत अवतरित है जिसका आशय है कि– लोगों को एक ही ईश्वर की आराधना करनी चाहिए, उसकी (ईश्वर) दया के अभाव में प्रत्येक व्यक्ति को हानि उठानी पड़ती है। फिर कहा है कि इस मस्जिद का निर्माण अकजाउल कुजात काजी हाजी ऊमर ने करवाया (देखिए लेखाङ्क ३८)

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०ई०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३७ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

४१. तालाब के करीब वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. शव्वाल हि० ६६० [सितम्बर १५५३ ई०]

ग. अभिलेख में हाजी ऊमर द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है। (देखिए लेखाङ्क ३८)

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३८ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

४२. काजियों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. २१ शव्वाल हि० ६६० [३० सितम्बर १५५३ ई०]

ग. अभिलेख में कुरान की एक आयत उद्धृत है। जिसमें कहा है कि 'जब जकारिया मरियम के दर्शन करने हेतु जेरूशलम गया तो उसने उसके पीछे बिना मौसम के फल देखे।' इसके अनन्तर कहा है कि इस मस्जिद का निर्माण सुल्तान इस्लाम शाह के शासन काल में शेख रूक्नुद्दीन कुरेशी हश्मी के पुत्र हाजी ऊमर ने करवाया।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३८ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

४३. काजियों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. ....मोहर्रम हि० १०६१ [........दिसम्बर १५५३ ई०]

ग. कहा गया है कि इस मस्जिद का निर्माण नगरपति शेख रूक्न अंदेशी हश्मी के पुत्र हाजी ऊमर द्वारा करवाया गया व उसके १०० वर्ष बाद अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मोहम्मद साहिब क़िरन II शाह जहान बादशाह गाजी के शासन काल में काजी रहमतुल्ला द्वारा इसका पुनर्निर्माण करवाया गया।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४६ पर सम्पादित।

ङ. ....

४४. शेखों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. १२ शबान हि० ९६१ [१३ जुलाई १५५४ ई०]

ग. शहबाज़ खान द्वारा मस्जिद के शिलान्यास का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

❀

४५. शेखों की मस्ज़िद का खण्डित अभिलेख

क. डीडवाना

ख. १४ शबान हि० ९६१ [१५ जुलाई १५५४ ई०]

ग. अभिलेख में जुलाहों के संघ द्वारा मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २३ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

४६. तालाब के पास वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० ९६७ [सन् १५५९-६० ई०]

ग. अभिलेख में जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर के शासन काल में अब्दुलगनी द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३९ पर सम्पादित।

ङ. दूरी नाम से प्रसिद्ध, कातिबुलमुल्क द्वारा सृजित।

❀

४७. शाही जामी मस्जिद का अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. शा'बान हि० ९६८ [अप्रेल-मई १५६१ ई०]

ग. रूरजी के मार्फत इस्लाम बेग द्वारा इस मस्जिद के जीर्णोद्धार का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ए०इं०अ०प०स० १९६९ में सम्पादित तथा ए०रि०इं०ए० १९६२-६३ संख्या १९७ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

४८. नागोर अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० ९६८ [सन् १५६०-६१ ई०]

ग. अभिलेख में किसी विशाल भवन के निर्माण का उल्लेख हुआ है ।

घ. इं०प्रा० १९६२-६३ पृष्ठ ६१ पर निर्देशित ।

ङ. सुप्रसिद्ध कवि असिरी द्वारा सृजित एवं लिखित ।

❀

४९. हाजी मोहम्मद ताज का अभिलेख

क. डीडवाना (जिला नागोर)

ख. मुहर्रम हि० ९७० [सितम्बर १५६२ ई०]

ग. हाजी मोहम्मद ताज द्वारा मस्जिद के बनवाए जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. ....

ङ. ....

❀

५०. अकबरी मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० ९७२ [सन् १५६४-६५ ई०]

ग. बादशाह अकबर शाह के समय में हुसैन कुली खां द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है ।

घ. ....

ङ. दरवेश मुहम्मद अल हाजी, जो रम्ज़ी नाम से प्रसिद्ध है, द्वारा लिखित ।

❀

५१. खानज़ादा जहांगीर कुली का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० सं० ९७३ [सन १५६५-६६ ई०]

ग. अभिलेख में अबकर के सुप्रसिद्ध दरबारी व सेनाध्यक्ष हुसैन कुली खान धुल क़ादर के पुत्र खानजादा जहाँगीर कुली का नामोल्लेख हुआ है ।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६१ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

५२. अकबरी मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० ९७५ [सन् १५६७ ई०]

ग. बादशाह अकबर के शासन काल में हुस्सैन कुली खान ने इस मस्जिद (अकबरी मस्जिद) का शिलान्यास किया ।

घ. ....

ङ. जुम्री नाम से प्रसिद्ध दरवेश मोहम्मद हाजी द्वारा सृजित ।

❀

५३. मस्जिद की मिहराब का अभिलेख

क. कठोती (जिला नागोर)

ख. हि० ९७७ [सन् १५६९-७० ई०]

ग. सम्राट अकबर के यसावुल (उत्सवाधिकारी) अमीर किस्मी के आदेश से नेकबख्त की देखरेख में मस्जिद का निर्माण हुआ ।

घ. ए०इं०अ०प०स० १९६९ में सम्पादित तथा ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या २१६ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

५४. ढोलियों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० ९७७ [१५६९ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि इस मस्जिद का निर्माण बादशाह अबुल मुज़फ्फर फिरोजशाह सुल्तान (तृतीय) के शासन काल में हुआ ।

घ. ....

ङ. ....

❀

५५. बाजे वालों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० ६८० [सन् १५७२ ई०]

ग. अभिलेख कहा गया है कि इस शानदार इमारत का निर्माण शेख अब्दुल गनी के निर्देशन में बादशाह मोहम्मद अकबर के शासन काल में हुआ।

घ ....

ङ. दौरी द्वारा उत्कीर्ण।

❀

५६. दुर्ग स्थित बावड़ी का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० ६८२ [सन् १५७४ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि इस फव्वारे का निर्माण बादशाह अकबर के राज्य काल में हुसैन कुली खान द्वारा करवाया गया।

घ. ....

ङ. ....

❀

५७. चारभुजा-मन्दिर अभिलेख

क. रेण (जिला नागोर)

ख. प्रथम रबी २१ हि० ६८४ [१८ जून सन् १५७६ ई०]

ग. ग्वालियर निवासी दास करोरी का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १६६३-६४ संख्या बी ६७१ तथा डी ३१३ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

५८. तकिया मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० ६८५ [सन् १५७७ ई०]

ग. इस मस्जिद का निर्माण बादशाह मोहम्मद अकबर के शासन काल में मोहसिन द्वारा हुआ।

घ. ....

ङ अब्दुर्रहीम नागोरी उर्फ रहीम द्वारा लिखित व उत्कीर्ण ।

❀

५९. तकिया मस्जिद की मिह्राब का अभिलेख

क. डीडवाना

ख हि० ९९० [सन् १५८२-८३ ई०]

ग. सम्राट अकबर के शासन काल में मस्जिद का निर्माण मीर मुहसिन द्वारा करवाए जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २४ पर सम्पादित ।

ङ. अब्दुर्रहीम द्वारा सृजित व उत्कीर्ण ।

❀

६०. स्तम्भ लेख

क. डीडवाना (तकिया मस्जिद के पास)

ख. हि० १००० [सन् १५९१ ई०]

ग. काजी इसादु'ल मुल्क द्वारा अकबर के दरबारी मिर्जा अब्दुल लतीफ की देख रेख में एक किले के निर्माण का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ हैं ।

घ. डा० चगताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २४ पर सम्पादित ।

ङ. नि'मतुल्लाह द्वारा सृजित व जान् मोहम्मद द्वारा उत्कीर्ण ।

❀

६१. कचहरी के सामने वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० १००६ [सन् १५९७ ई०]

ग. अभिलेख कहा है कि ताहिर खान, जिसे बादशाह अकबर ने नागोर का जिला प्रदान किया था, ने इस मस्जिद का निर्माण करवाया ।

घ. ....

ङ. ....

❀

६२. बादशाह शाहजहाँ का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० १००६ [सन् १५६७-६८ ई०] [हि० १०५६ (सन् १६४६ ई०)]

ग. शाहजहाँ के शासन काल में ताहिर खां को नागोर दिये जाने व खान द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ ४६ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

६३. मग्रीबीशाह की दरग़ाह का अभीलेख

क. बड़ी खाटू

ख. हि० १००८ [सन् १५६६-१६०० ई०]

ग. अभिलेख में बताया गया है कि मीर बुजुर्ग ने अपने पिता नवाब अमीर मुहम्मद मासूम के साथ इस पवित्र स्थान की यात्रा की।

घ. ए०रि०इं०ए० १६५८-५६ संख्या १७२ पर निर्देशित।

ङ. मीर बुजुर्ग द्वारा लिखित।

❀

६४. अतारकिन की दरगाह का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० १००८ [सन् १५६६-१६०० ई०]

ग. अभिलेख में एक धार्मिक आयत लिखी है जिसमें जीवन की अवास्तविकता पर प्रकाश डाला गया है।

घ. ....

ङ. मीर बुजुर्ग द्वारा उत्कीर्ण।

❀

६५. तारिकीन की खानक़ाह का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० १००८ [सन् १५६६-१६०० ई०]

ग. अभिलेख में मीर बुजुर्ग की नव्वाब मुहम्मद मासूम नामी के साथ इस मस्जिद की यात्रा पर आने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४१ पर सम्पादित।
ङ. मीर बुज़ुर्ग द्वारा लिखित।

❀

६६. तारिकीन की खानक़ाह का अभिलेख

क. नागोर
ख. हि० १००८ [सन् १६०० ई०] (नवें महिनें की सातवीं तारीख=२२ मार्च)
ग. उपदेशात्मक वाक्य लिखा है कि "बिना लाभ के समय गंवाना अत्यधिक दुख का विषय है।"
घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४१ पर सम्पादित।
ङ. अमीर मुहम्मद मासूम के पुत्र मीर बुज़ुर्ग द्वारा लिखित।

❀

६७. पीर ज़ुहूरूद्दीन की दरग़ाह का अभिलेख

क. लोहरपुर (जिला नागोर)
ख. हि० १००८ [सन् १५९९-१६०० ई०]
ग. अभिलेख में कहा गया है कि मीर बुज़ुर्ग ने (अपने पिता) नव्वाब अमीर मुहम्मद मा'सूम नामी के साथ इस दरग़ाह की यात्रा की।
घ. ए०रि०इं०ए० १९६५-६६ संख्या डी ३५९ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

६८. सम्राट अकबर का अभिलेख

क. नागोर
ख. हि० १०१० [१६०१ ई०]
ग. अभिलेख में कहा गया है कि दक्षिण विजय के उपरान्त सम्राट अकबर ने मोहम्मद मासूम को ईराक की तीर्थ यात्रा पर जाने की अनुमति प्रदान कर दी थी। इसके उपरान्त संसार की अवास्तविकता पर प्रकाश डालने वाली एक आयत भी उल्लिखित है।
घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४२ पर सम्पादित।
ङ. ....

❀

६९. डीडवाना के दुर्ग के द्वार का अभिलेख

क डीडवाना

ख. हि० १०१० [सन् १६०१ ई०]

ग. बादशाह जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर के शासन काल में मिर्ज़ा अब्दुल्लतीफ द्वारा दुर्ग के निर्मित होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. जान मोहम्मद द्वारा सृजित।

❀

७०. मग्रीबीशाह के मकबरे का लेख

क. बड़ी खाटू

ख. हि० १०१० [सन् १६०१-२ ई०]

ग. अभिलेख में बादशाह (अकबर) द्वारा मीर मोहम्मद मासूम को दूत के रूप में ईराक़ (ईरान को उस समय सामान्यतया ईराक़ ही कहा जाता था) जाने की अनुमति दिए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. इं०आ० १९५८-५९ पृष्ठ ६४-६५ पर निर्देशित।

ङ. मीर मोहम्मद मासूम द्वारा उत्कीर्ण।

❀

७१. कचहरी के सामने वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. रजब ११ हि०........ [२६ दिसम्बर १६०१ ई०]

ग. कहा गया है कि इन चार दूकानों का निर्माण अफग़ान सिराजुद्दीन ने करवाया था।

घ. ....

ङ. ....

❀

७२. छोटी मस्जिद का अभिलेख

क. लोहरपुर

ख. २४ रजब हि० १०११ [२८ दिसम्बर १६०२ ई०]

ग. अभिलेख में बताया गया है कि प्रस्तुत मस्जिद का निर्माण हाजी हुसैन आहंगर (लुहार) के नाम पर हुआ।
घ. ए०इं०अ०प०स० १६६६ में सम्पादित।
ङ. ....

❀

७३. बाजे वालों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर
ख. हि० १०१२ [१६०३ ई०]
ग. कहा गया है कि इस भव्य मस्जिद का शिलान्यास बादशाह अबुल मुज़फ्फर साहिबकिरीन (बादशाह अकबर) के शासन काल में हुआ।
घ. ....
ङ. ....

❀

७४. अमीर मोहम्मद मासूम का अभिलेख

क. नागोर
ख. हि० १०१३ [सन् १६०४-५ ई०]
ग. अभिलेख में मआदनुल अफ्कार, अकबरनामा, खम्सा, राईमूरत व जश्ननामा ग्रन्थों से एक-एक छन्द उल्लिखित है, जिसके कि लिए कहा गया है कि ये छन्द अमीर मोहम्मद मासूम ने नागोर लौटने पर [हि० सं० १०१३] लिखे।
घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ ४२ पर सम्पादित।
ङ. मोहम्मद मासूम द्वारा लिखित।

❀

७५. सम्मनशाह की दरगाह का अभिलेख

क. बड़ी खाटू
ख. हि० १०१३ [सन् १६०४-५ ई०]
ग. अमीर मुहम्मद मासूम द्वारा सृजित एक छन्द उत्कीर्ण है।
घ. ए०रि०इं०ए० १६६६-६७ संख्या १६६ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

७६. मग्रीबीशाह् के मकबरे का लेख

क. बड़ी खाटू

ख. हि० १०१३ [१६०४-५ ई०]

ग. इसमें किसी का नाम तो नहीं दिया गया है लेकिन सम्भवत यह अभिलेख भी मीर बुजुर्ग का ही है। इसमें कहा गया है कि वह (मीर बुजुर्ग) अपने पिता के ईरान से लौटने पर उसके साथ इस पवित्र स्थान के दर्शन करने आया।

घ. इ०आ० १९५८ ५९ पृष्ठ ६५ पर निर्देशित।

ङ. मीर बुजुर्ग (?) द्वारा उत्कीर्ण।

❀

७७. मीर मुहम्मद मासूम नामी का अभिलेख

क. जगमन्दिर-मेड़ता

ख. हि० १०१४ [सन् १६०५-०६ ई०]

ग. अभिलेख में मासूम द्वारा सृजित ३ छन्द दिए गए है।

घ. इ०आ० १९६२ ६३ पृष्ठ ६१ पर निर्देशित।

ङ. मीर मुहम्मद मासूम नामी द्वारा सृजित एवं उत्कीर्ण।

❀

७८. स्मारक अभिलेख

क. हरसोर (जिला नागोर)

ख. हि० १०१४ [सन् १६०५-०६ ई०]

ग. एक साहित्यिक छन्द उत्कीर्ण है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६४-६५ संख्या ३३३ पर निर्देशित।

ङ. मुहम्मद मा'सूम अन नामी अल् बक्करी द्वारा सृजित एवं उसी के द्वारा लिखित।

❀

७९. सैयद मोहम्मद का अभिलेख

क. जालोर (पुरानी कचहरी)

ख. ९ मुहर्रम हि० १०१७ [अप्रेल १६०८ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि इस भवन का निर्माण बादशाह जहांगीर के शासन काल में सैयद हसन अल हुसैनी के पुत्र सैयद मोहम्मद की देखरेख में हुआ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३४ पर सम्पादित।
ङ. ....

❀

८०. सिंहपोल अभिलेख

क. हरसोर
ख. हि० १०२६ [सन् १६१६-१७ ई०]
ग. सरकार अजमेर में स्थित कस्वा हरसोर हेतु दिये गए किसी राजकीय आदेश का उल्लेख अभिलेख में हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १९६४-६५ संख्या ३३४ पर निर्देशित।
ङ. कादी डाडन (?) द्वारा उत्कीर्ण।

❀

८१. सरदार संग्रहालय, जोधपुर में संग्रहीत अभिलेख

क. नागोर
ख. मुहर्रम १ हि० १०४० [३१ जुलाई १६३० ई०]
ग. नवाव सिपहसालार खान-इ-खानान् महाव्रत खान के प्रान्तपतित्व काल में शाहदाद के पुत्र तैयव द्वारा अर्रायान के मुहल्ले में मस्जिद वनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ ए०इ०अ०प०स० १९५५-५६ पृष्ठ ६५ पर सम्पादित।
ङ. ....

❀

८२. दुर्ग की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर
ख. हि० १०४१ [सन् १६३१ ई०]
ग. अभिलेख में उल्लेख है कि इस मस्जिद का निर्माण वादशाह अवुल-मुजफ्फर-शाहावुद्दीन-मोहम्मद-साहिव-किरन II शाहजहाँ-वादशाह-गाजी के शासन काल में खान-ई-खाना महावत खान वहादुर नामक सेनाध्यक्ष ने करवाया।
घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४४ पर सम्पादित।
ङ. काज़ी मुहम्मद ताहिर द्वारा लिखित।

❀

८३. तालाब के करीब वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० १०४१ [सन् १६३१-३२ ई०]

ग. अभिलेख में मुहम्मद द्वारा शाहजहाँ के शासन काल में मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४४ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

८४. कादी हमीदुद्दीन नागोरी की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. २ धुल हिज्ज हि० १०४७ [७ अप्रेल १६३८ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है जिस छत विहीन भवन का निर्माण सन्त कादी हमीदुद्दीन नागोरी ने करवाया था, उस पर छत डालने का कार्य मुहम्मद नासिर ने करवाया।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६१-६२ संख्या डी २६१ तथा कनिंघम द्वारा आ०स०इं०रि० खण्ड XXIII पृष्ठ ६४ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

८५. खड़ी मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. ११ रमदान हि० १०४७ [१७ जनवरी सन् १६३८ ई०]

ग. मुल्ला ताहिर मुल्तानी के पुत्र इशाक द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या डी ४२२ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

८६. साया दरवाजे के करीब वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. रमदान १४ हि० १०४७ [२० जनवरी सन् १६३८ ई०]

ग. लोधान परगने स्थित ग्राम कडान में मस्जिद के निर्माण का निर्देश हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १६६८-६६ संख्या डी ४२४ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

८७. कचहरी की मस्जिद का लेख

क. डीडवाना
ख. हि० १०४८ [सन् १६३८ ई०]
ग. बादशाह शाहजहाँ के शासन काल के ११वें वर्ष में मुहम्मद शरीफ की देखरेख में मस्जिद के निर्माण का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है ।
घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ २६ पर सम्पादित।
ङ. ....

❀

८८. शाहजहाँ कालीन अभिलेख

क. बड़ी खाटू
ख. द्वितीय जमादा २० हि० १०४६ [८ अक्टूबर सन् १६३६ ई०]
ग. पाषाण तक्षक मियांशाह के पुत्र नाहिरशाह द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १६६६-६७ संख्या २०१ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

८६. तबीब की मस्जिद अभिलेख

क. नागोर
ख. मोहर्रम हि० १०५० [अप्रेल १६४० ई०]
ग. अभिलेख में कहा है कि इस मस्जिद का निर्माण 'सुल्तान शहाबुद्दीन शाहजहान् ग़ाजी के शासन काल में, जबकि नवाबे सिपहसालार खान-इ-खाना, यहाँ के गर्वनर थे, शद्दाद के पुत्र तबीब द्वारा अरयन की बस्ती में करवाया गया।
घ. ....
ङ. ....

❀

९०. शाहजहाँ कालीन अभिलेख

क. बड़ी खाटू
ख. रमदान १५ हि० १०५१ [३ दिसम्बर १६४१ ई०]
ग. चौहान जातीय जुमीशाह के पौत्र व आदम के पुत्र जमालशाह द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या २०४ पर निर्देशित।
ङ. पालनपुर (?) निवासी कादी इमाद के पुत्र कादी अब्दुर्रहमान द्वारा लिखित।

❀

९१. जमालशाह का अभिलेख

क. बड़ी खाटू
ख. हि० १०५१ [१६४१ ई०]
ग. जुमीशाह व आदम के नाम पर जमालशाह चौहान द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या २०५ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

९२. कनेरी जुलाहों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर
ख. हि० १०५५ [सन् १६४५-४६ ई०]
ग. मुहब्बत दर्विश द्वारा दिल्ली दरवाजा के सामने मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १९६५-६६ संख्या डी ३५३ पर निर्देशित।
ङ. अब्दुल हाफिज मु'अय्यीन द्वारा लिखित।

❀

९३. शाहजहां कालीन अभिलेख

क. नागोर
ख. हि० १०५६ [सन् १६४६ ई०]

ग. ताहिर खान, जिसे कि निवास हेतु बादशाह द्वारा नागोर प्राप्त हुआ था, द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४५ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

९४. मीर इनायत उल्लाह का अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. प्रथम रबी २० हि० १०५८ [४ अप्रेल १६४८ ई०]

ग. अभिलेख के लेखक मीर सुलेमान के पुत्र मीर इनायतु'ल्लाह का नामोल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या २०६ पर निर्देशित।

ङ. इनायतुल्लाह द्वारा लिखित।

❀

९५. एकमीनारी मस्जिद का अभिलेख

क. जोधपुर

ख. हि० १०६० [१६४९-५० ई०]

ग. मस्जिद के निर्माण व मस्जिद के खर्च हेतु ६ दूकानों के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९५५-५६ संख्या १५३ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

९६. चौक की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. १ मुहर्रम हि० १०६१ [२५ दिसम्बर १६५० ई०]

ग. कादी हाजी उमर द्वारा निर्मित मस्जिद का पुनर्निर्माण हाफिज कादी रहमतुल्लाह के पुत्र मुहम्मद मुराद ने करवाया, जो उमर का पांचवां वंशज था।

घ. ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४६ पर सम्पादित।

ङ. शेर मुहम्मद के पुत्र उमर द्वारा लिखित।

❀

९७. शाहजहाँ का अभिलेख

क. मकराना

ख. हि० १०६१ [१६५१ ई०]

ग. मिर्जा वेग द्वारा एक वापी पर लगे इस अभिलेख में निम्न जाति के व्यक्तियों को उच्च जाति के लोगों के साथ इस बावड़ी पर से पानी नहीं भरने का आदेश दिया गया है।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६०

ङ. ....

❀

९८. पहाड़ कुआ का अभिलेख

क. मकराना

ख. हि० १०६१ [१६५०-५१ ई०]

ग. पहाड़ खां के प्रयास से कूप निर्माण का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है।

घ. ....

ङ. ....

❀

९९. सम्मनशाह की दरगाह का अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. हि० १०६२ [१६५१-५२ ई०]

ग. पहाड़ खान के समय गुम्बद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९५८-५९ संख्या १७८ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१००. शाहजहाँ कालीन अभिलेख

क. मकराना

ख. हि० १०६४ [१६५४-५५ ई०]

ग. अभिलेख में एक ग्राम की स्थापना तथा कूप व मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है। निर्माता का नाम पहाड़ खान दिया गया है।

घ. इं०ग्रा० १६६२-६३ पृष्ठ ६० पर निर्देशित ।
ङ. ....

❀

१०१. शाहजहाँ कालीन अभिलेख

क. अमरपुर (जिला नागोर)
ख. धु'ल-हिज्ज ५ हि० १०६५ [२६ सितम्बर १६५५ ई०]
ग. अभिलेख में उथमान चौहान के पुत्र मुहम्मद द्वारा दिजावास के ग्राम में मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १६६१-६२ संख्या २३६ पर निर्देशित ।
ङ. ....

❀

१०२. जामी मस्जिद का अभिलेख

क. पीपाड़ शहर (जिला जोधपुर)
ख. प्रथम रबी १५ हि० १०६८ [१० जनवरी सन् १६५८ ई०]
ग. सुलतान, राजू, हिशाम, जमालुद्दीन, अली तथा खानू द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है ।
घ. ए०रि०इं०ए० १६६१-६२ संख्या डी २३७ पर निर्देशित ।
ङ. ....

❀

१०३. धोबियों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना
ख. रजब २४ (?) हि० १०७२ [५ मार्च १६६२ ई०]
ग. चार दरवेशों से सम्बन्धित प्रसिद्ध छन्द उत्कीर्ण है ।
घ. ए०रि०इं०ए० १६६६-७० संख्या १४६ पर निर्देशित ।
ङ. ....

❀

१०४. दीन दरवाजे का अभिलेख

क डीडवाना

ख. जमादि उल अव्वल हि० १०७३ [दिसम्बर १६६२ ई०]

ग. कहा गया है कि इस दीन दरवाजे का निर्माण बादशाह आलमगीर के राज्यकाल में दिदर खान की देखरेख में हुआ।

घ. ....

ङ. मीर मोहम्मद मुराद द्वारा उत्कीर्ण।

❀

१०५. जुलाहों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. रमदान ५ हि० १०७४ [२२ मार्च १६६४ ई०]

ग. अबुल फड्ल के पुत्र फिरूज़ द्वारा (सम्भवतः मस्जिद) निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १६६९-७० संख्या १५१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१०६. बन्द मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. २० जमादि उस्सानी हि० १०७५ [२९ दिसम्बर १६६४ ई०]

ग. कहा गया है कि इस मस्जिद का दूसरी बार निर्माण अबुल मुज़फ्फर मोहिउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर बादशाह के शासन के आठवें वर्ष में मोहम्मद अरिफ के निर्देशन में हुआ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २७ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१०७. ईदगाह अभिलेख

क. डीडवाना

ख शव्वाल १ हि० १०७५ [७ अप्रेल सन् १६६५ ई०]

ग. मिर्ज़ा मुहम्मद आरिफ की देखरेख में मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २६-२७ पर सम्पादित तथा ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १४८ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१०८. बादशाह औरंगजेब का अभिलेख

क. नागोर

ख. २९ मोहर्रम हि० १०७६ [१ अगस्त सन् १६६५ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि इस द्वार (जिस पर कि अभिलेख लगा है) का शिलान्यास अबुल मुजफ्फर मोहिउद्दीन मोहम्मद शाह औरंगजेब आलमगीर के शासन काल में व राव अमरसिंह के पुत्र राजा रायसिंह की सूबेदारी व राजपूत डूंगरसिंह कोटवाल की देखरेख में हुआ। इसके अनन्तर इसी तथ्य को ४ पंक्तियों में देवनागरी अक्षरों में उत्कीर्ण किया गया है। दरवाजे का नाम 'दरवाजा-इ-इस्लाम' दिया गया है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४७ पर सम्पादित।

ङ. मुहम्मद गौथ के पुत्र कुली (?) द्वारा लिखित।

❀

१०९. ईदगाह का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. १ शव्वाल हि० १०७५ [१७ अप्रेल सन् १६६५ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि इस मस्जिद का निर्माण मिर्जा मोहम्मद आरिफ के निर्देशन में हुआ था।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २७ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

११०. बन्द मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. द्वितीय जुमादा १ हि० १ ७६ [२९ नवम्बर सन् १६६५ ई०]

ग. हाफिज्ज मिर्जा मुहम्मद आरिफ की देखरेख में मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २७ पर सम्पादित तथा ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १२५ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१११. बादशाह औरंगजेब का अभिलेख

क. मेड़ता

ख. हि० १०७६ [सन १६६५ ई०]

ग अभिलेख में कहा गया है कि जोधपुर सरकार के मुतवल्ली व मुहत्सिब मयंड महुम्मद बुख़री के पुत्र हाज़ी मुहम्मद सुल्तान ने यहाँ मस्जिद का निर्माण करवाया।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६० दर निर्देशित।

ङ. क़्वादि मुहम्मद शरीफ़ के पुत्र मुहम्मद दिया द्वारा लिखित।

११२. लोहारों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० १०७६ [सन १६६५-६६ ई०]

ग. मिर्ज़ा मुहम्मद आरिफ के प्रान्तपतित्व काल में लोहारों के मुहल्ले में लोहार नूरा, इदू तथा फिरूज द्वारा मस्जिद का निर्माण हुआ।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १५२ पर निर्देशित।

ङ. हाफिज़ अब्दुल्लाह अन्सारी नागोरी द्वारा लिखित।

११३. किले में स्थित मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० १०७६ [सन् १६६५ ई०]

ग. सैयद कबीर के प्रयास से बादशाह औरंगजेब के शासन काल में मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४८ पर सम्पादित।

ङ. ....

११४. शेखों की मस्जिद का अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. ध्रु'ल हिज्ज २५ हि० १०७७ [८ जून सन् १६६७ ई०]

ग. मुहल्ल मु'मिनान की मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १५५ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

११५. जलाहों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर
ख. २९ शव्वाल हि० १०७९ [२२ मार्च सन् १६६९ ई०]
ग. शेख युसुफ द्वारा मस्जिद वनवाए जाने का उल्लेख है।
घ ए०रि०इं०ए० १९६५-६६ संख्या डी ३५४ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

११६. औरंगजेब कालीन अभिलेख

क. वकलिया (जिला नागोर)
ख. धु'ल-हिज्ज १ हि० १०८० [२ अप्रेल सन् १६७० ई०]
ग. संगीतज्ञ गोपाल के पुत्र हम्मीद की पुत्री किल्लोल वाई द्वारा एक मस्जिद, एक कुआ तथा एक तालाव वनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या ४१० पर निर्देशित।
ङ. लेखक एवं उत्कीर्ण कर्त्ता के नाम घिस गए हैं।

❀

११७. जलाहों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर
ख. २५ धु'ल·हिज्ज हि० १०८० [६ मई १६७० ई०]
ग. मखदूम वहाउ'द्-दीन के एक वंशज शेख सदरूद् दीन द्वारा यूसुफ दर्विश की देखरेख में मस्जिद वनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।
घ. ए०रि०इं०ए० १९६५-६६ संख्या डी ३५५ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

११८. सैयदशाह निज़ाम बुखारी की दरगाह का अभिलेख

क. छोटी खाटू (जिला नागोर)

ख. धु'ल-हिज्ज २६ हि० १०८० [७ मई सन् १६७० ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि सैयद निजाम जो लाहोर से आया था, यहाँ चालीस वर्ष रहा तथा सौ वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६२-६३ संख्या डी १९३ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

११९. महाराजा जसवन्तसिंह कालीन लेख

क. मेड़ता

ख. हि० १०८० [१६६९ ई०]

ग. महाराजा जसवन्तसिंह के शासन काल में लाखन के पुत्र शेख बाज़ा, जो फौजदार था, द्वारा एक मकबरा व मस्जिद बनवाने का उल्लेख हुआ है।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६० पर निर्देशित।

ङ. शाह अली नक्शबन्दी द्वारा उत्कीर्ण।

❀

१२०. काज़ियों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० १०८० [सन् १६६९-७० ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि सैयद फर्दुल्लाह को देवदूत ने स्वप्न में दर्शन दिये व कहा कि उसके चरण चिन्ह जो पावटा में स्थित हैं, उन्हे यहाँ (डीडवाना में) लाकर स्थापित करो। निर्देशानुसार फर्दुल्लाह चरण चिन्हों को अपने सिर पर रख कर यहाँ लाया।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या ४१३ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१२१. मग्रीबोशाह की दरगाह का अभिलेख

क. बड़ी खाटू

ख. जुमादा (द्वितीय) २७ हि० १०८१ [१ नवम्बर १६७० ई०]

ग. शेख आदम द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है ।

घ. ए०रि०इं०ए० १६५८-५६ संख्या १७५ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

१२२. बालकिशन शर्मा की हवेली का अभिलेख

क. नागोर

ख. २६ रजब हि० १०८१ [२६ नवम्बर १६७० ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि इस हवेली व इसकी प्रतोली का निर्माण नारायण दास गहलोत के पुत्र डूंगरसी, जो इसका वास्तविक मालिक है, द्वारा राईसिंह राठोड़ के समय करवाया गया ।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६१-६२ संख्या डी २५० पर निर्देशित ।

ङ. मुहम्मद अब्बासी के लिए शेख जा द्वारा लिखित ।

❀

१२३. राजा रायसिंह राठोड़ का अभिलेख

क. अमरपुर जिला नागोर)

ख. हि० १०८१ [सन् १६७० ई०]

ग. बादशाह औरंगजेब के काल में नारायणदास गहलोत के पुत्र डूंगरसी द्वारा एक हवेली के निर्माण का उल्लेख हुआ है । यह भी स्पष्ट किया गया है कि इस समय (नागोर का अधिपति) राजा रायसिंह राठोड़ था ।

घ. इं०आ० १९६१-६२ पृष्ठ ९१ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

१२४. औरंगजेब कालीन अभिलेख

क. अमरपुर (जिला नागोर)

ख. मुहर्रम १५ हि० १०८३ (?) [३ मई १६७२ ई०]

ग. किसी 'अली' नामक व्यक्ति द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख प्रस्तुत अभिलेख में हुआ है ।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६१-६२ संख्या २४० पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

१२५. तालाब के पास वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. रबी आखिर हि० १०८३ [जुलाई सन् १६७२ ई०]

ग. मुहम्मद के पुत्र हमीद (?) द्वारा मस्जिद का निर्माण कार्य बादशाह औरंगजेब के शासन काल में सम्पन्न करवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४९ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१२६ काजियों के मोहल्ले की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. द्वितीय रबी २३ हि० १०८४ [२८ जुलाई सन् १६७३ ई०]

ग. मुहम्मद के पुत्र हमीद द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४९ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१२७. शेखों की मस्जिद के मुख्य द्वार का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. २२ मोहर्रम हि० १०८६ [८ अप्रेल १६७५ ई०]

ग. फिरोज़ दाउद की दरगाह के अबुल मुजफ्फर मोहिउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब के शासन काल में पूरा होने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं० मु०१९४९-५० पृष्ठ २८ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१२८. बिसातियों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० १०८६ [सन् १६७५-७६ ई०]

ग. सम्भवत: मस्जिद के पूर्ण होने का उल्लेख है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १५४ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१२९. घोसियों की असली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. १ प्रथम रवी हि० १०८८ [२४ अप्रेल १६७७ ई०]

ग. शेख ताज मुहम्मद अब्बासी कादिरी नागोरी के शिष्य यतीम दर्विश द्वारा मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है ।

घ. ए०रि०इ०ए० १९६८-६९ संख्या डी ४२३ पर निर्देशित ।

ङ. ....

१३०. बादशाह औरंगजेब कालीन स्तम्भ लेख

क. लोहरपुर (जिला नागोर)

ख. धु'ल-हिज्ज १ हि० १०८९ [४ जनवरी सन् १६७९ ई०]

ग. अभिलेख में एक निर्णय का उल्लेख है जो राव राईसिंह के पुत्र राव इन्द्रसिंह (नागोर का शासक) द्वारा डूंगरसी गहलोत के सक्रिय सहयोग से लिया गया था कि परगना नागोर में स्थित जुंजाल के तालाब से होने वाली आय का उपयोग तालाब की मरम्मत के अतिरिक्त अन्य किसी कार्य में नहीं किया जाय ।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या २१५ पर निर्देशित ।

ङ. काडी मुहम्मद के पुत्र शाह मुहम्मद द्वारा लिखित ।

❀

१३१. मस्जिद अभिलेख

क. मेड़ता

ख. हि० १०८९ [सन् १६७८ ई०]

ग. प्रस्तुत अभिलेख में मकराना निवासी शम्सुद्-दीन, जो गौर जाति का था, द्वारा एक मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है ।

घ. इं०आ० १९६२ ६३ पृष्ठ ६० पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

१३२. मस्जिद-इ-सय्यीदान का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० १०८६ [सन् १६७८-७६ ई०]

ग. सय्यीद कबीर द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४८ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१३३. कस्साबों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. प्रथम रबी ७ हि० १०६१ [२८ मार्च १६८० ई०]

ग. शाह महब्बत धिमाली (?) के शिष्य इनायत फकीर के प्रयासों से मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १५० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१३४. फुलेराव दरवाजे का अभिलेख

क. जोधपुर [सरदार संग्रहालय में संग्रहीत]

ख. हि० १०९२ [सन् १६८१ ई०]

ग. किसी विजय के उपलक्ष में द्वार के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ ए०इ०अ०प०स० १९५५-५६ पृष्ठ ६६ पर सम्पादित तथा ए०रि०इं०ए० १९५२ व ५३ संख्या ११० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१३५. दीन दरवाजे का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. जुमाद प्रथम हि० १०९३ [अप्रेल १६८१ ई०]

ग. बादशाह आलमगीरशाह के समय में दींदर खाँ की देखरेख में दरवाजे के निर्माण का उल्लेख हुआ है। दरवाजे का नाम 'दीन दरवाजा' रखा गया।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २८ पर सम्पादित ।

ङ. मीर मुहम्मद मुराद द्वारा लिखित ।

❀

१३६. मोचियों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. रजब १ हि० १०९७ [१४ मई १६८६ ई०]

ग. दर्या मोची की देखरेख में मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है। साथ ही पीरू बिल्लू तथा ईदू मोची का भी नामोल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १४१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१३७. मस्जिद अभिलेख

क. फलोदी

ख. धु'ल का'दा १० हि० ११०० (?) [१६ अगस्त १६८९ ई०]

ग. महाराजा जसवन्तसिंह के शासन काल में मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९५९-६० संख्या २७४ पर निर्देशित।

ङ. ....

१३८. बड़ी मस्जिद का अभिलेख

क. वासनी (जिला नागोर)

ख. हि० ११०५ [सन् १६९३-९४ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि वासनी वहलीम ग्राम में मस्जिद का निर्माण हुआ। बादशाह औरंगजेब का भी नामोल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६१-६२ संख्या २४१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१३६. स्मृति स्तम्भ अभिलेख

क. अमरसर (जिला नागौर)

ख. हि० ११११ [सन् १६६६-१७०० ई०]

ग. महाराजा इन्द्रसिंह के काल में डूंगरसी के पुत्र जीवनदास द्वारा एक कूप व उद्यान बनवाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. इं०आ० १६६१-६२ पृष्ठ ६१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१४०. बिसपंथी पंचायत भवन का अभिलेख

क. नागोर

ख. हि० ११११ [सन् १६६६-१७०० ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि महाराजा इन्द्रसिंह के समय नारायणदास के पौत्र व डूंगरसी के पुत्र जीवनदास ने यहाँ एक कुआ खुदवाया तथा बगीचा बनवाया।

घ. ए०रि०इं०ए० १६६१-६२ सख्या डी २५६ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१४१. चाँदी का हॉल का अभिलेख

क. नागोर

ख. ११ शा'बान १० हि० १११७ [१६ नवम्बर सन् १७०५ ई०]

ग. कहा गया है कि इस भवन का निर्माण डूंगरसी गहलोत के पुत्र जीवनदास ने महाराजा इन्द्रसिंह के समय करवाया।

घ. ए०रि०इं०ए० १६६१-६२ संख्या डी २५१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१४२. महाराजा इन्द्रसिंह का अभिलेख

क. अमरपुर

ख. हि० १११७ [सन् १७०५ ई०]

ग. महाराजा इन्द्रसिंह के शासन काल में डूंगरसी के पुत्र जीवनदास द्वारा एक भवन बनवाने का उल्लेख हुआ है।

घ. इं०ग्रा० १९६१-६२ पृष्ठ ९१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१४३. कबीरी मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. ७ जिल्हिज हि० ११२२ [१६ जनवरी सन् १७११ ई०]

ग. कहा गया है कि इस मस्जिद का निर्माण सुल्तान-मोहम्मद-मोअज्जम शाह बहादुर आलमगीर (बहादुरशाह प्रथम) के शासन काल के ५वें वर्ष में शाह चुंगी मदारी के निर्देशन में हुआ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ २९ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१४४. मुहम्मद शाह के शासन काल का अभिलेख

क. मेड़ता

ख. हि० ११३४ [सन् १७२१-२२ ई०]

ग. प्रस्तुत अभिलेख में मुहम्मद शाह के शासन काल में एक मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है, तथा ट्रस्टी के रूप में सय्यद मूसा के पुत्र सय्यद मुहम्मद का नामोल्लेख हुआ है।

घ. इं०ग्रा० १९६२-६३ पृष्ठ ६० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१४५. बन्द मस्जिद अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० ११४३ [सन् १७३०-३१ ई०]

ग. राजा किशनसिंह द्वारा एक महल बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १३६ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१४६. डाकघर के पास वाली मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. २१ जमादि उस्सानी हि० ११५४ [२३ अगस्त सन् १७४१ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि इस मस्जिद का निर्माण मोहम्मद शाह गाजी के शासन काल में शाह शाकिर अली के शिष्य शाह अब्बास की देखरेख में हुआ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३० पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१४७. धोबियों की मस्जिद का अभिलेख

क. वड़ी खाटू

ख. रजव ३ हि० ११८० [१० दिसम्बर १७६६ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि पहले गौर जातीय समाज द्वारा मस्जिद का निर्माण हुआ था जिसका कि जीर्णोद्धार अव धोबी समाज द्वारा करवाया गया।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या २०० पर निर्देशित।

ङ. मुहम्मद सादिक खान द्वारा लिखित।

❀

१४८. मोचियों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. धु'ल हिज्ज १ हि० ११८४ [१८ मार्च सन् १७७१ ई०]

ग. मस्जिद निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १४० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१४९. शाह हाफिजुल्लाह की दुर्ग स्थित मस्जिद का अभिलेख

क. वड़ी खाटू

ख. धु'ल कद २६ हि० ११८८ [२९ जनवरी सन् १७७५ ई०]

ग. सन्त शाह हाफिजुल्लाह की मृत्यु का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९५८-५९ संख्या १८० पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

१५०. शाह हाफिजुल्लाह की मस्जिद का लेख

क. बड़ी खाटू
ख. धु'ल कद २६ हि० ११८८ [२९ जनवरी सन् १७७५ ई०]
ग. उक्तांकित अभिलेख के समान सूचनाए इसमें दी गई हैं साथ ही मलिकदीन के पुत्र नूर मुहम्मद का नाम दिया है, जो पाषाण तक्षक था।
घ. ए०रि०इं०ए० १९५८-५९ संख्या १८१ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

१५१. शाह आलम (II) कालीन अभिलेख

क. बड़ी खाटू
ख. द्वितीय रबी २१ हि० १२०४ [८ जनवरी १७९० ई०]
ग. मस्जिद निर्माण का उल्लेख हुआ है साथ ही शासक की उपाधि मजफ्फर उद्दीन दी गई है।
घ. ए०रि०इं०ए० १९५८-५९ संख्या १८२ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

१५२. संगतराशों की मस्जिद का अभिलेख

क. बड़ी खाटू
ख. रजब हि० १२११ [दिसम्बर-जनवरी १७९६-९७ ई०]
ग. संगतराशों के समाज द्वारा मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।
घ ए०रि०इं०ए० १९६२-६३ संख्या २०७ पर निर्देशित।
ङ. ....

❀

१५३. सूफी साहिब की दरगाह का अभिलेख

क. नागोर

ख. द्वितीय जुमादा ६ हि० १२२१ अथवा १२२९
[२१ अगस्त १८०६ अथवा २६ मई १८१४ ई०]

ग. नव्वाब मुहम्मद शाह खान वहादुर की सेना का एक अधिकारी उमर खान जो गुलाम मुहम्मद खान का पुत्र था, वह यहाँ दफनाया गया। उमर खान के सबंध में यह कहा गया है कि व अवध सूबा के अन्तर्गत लखनऊ सरकार में हद्रतपूर बदू सराय के पास तिकुरी का निवासी था।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६२-६३ संख्या डी २३१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१५४. जामा मस्जिद का अभिलेख

क. मेड़ता

ख. हि० १२२२ [सन १८०७-०८ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया है कि राजा धोकलसिंह, महाराजा भीमसिंह का उत्तराधिकारी पुत्र, के प्रयासों से इस परित्यक्त मस्जिद का जीर्णोद्धार हुआ। यह भी कहा गया है कि मस्जिद की दूकानों के किराए के सम्बन्ध में गड़बड़ी करने वाला पाप का भागी होगा।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१५५. अतार्किन की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. जमादि-उल-अव्वल हि० १२२३ [जुलाई सन् १८०८ ई०]

ग. अभिलेख में कहा गया कि वली हमीदुद्दीन की इस मस्जिद का शिलान्यास अब्दुल गफ़ूर खान के प्रयासों से नवाब अमीर खान द्वारा हुआ और इस मस्जिद का निर्माण कार्य फैजुल्लाखान के पुत्र बैहराम खान की देखभाल में बादशाह मोहम्मद अकबर शाह (द्वितीय) के समय सम्पन्न हुआ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं० मु०१९४९-५० पृष्ठ ५१ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१५६. अतार्किन की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. ११ जमादि-उल-अव्वल हि० १२२३ [५ जुलाई सन् १८०८ ई०]

ग. अभिलेख का विषय लेखाङ्क १५५ के अनुसार ही है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ४९ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१५७. पुराने कोट में स्थित मस्जिद का अभिलेख

क. कुचेरा जिला नागोर)

ख. हि० १२२५ [सन् १८१०-११ ई०]

ग. मुहम्मद ग्रयाज के समय जहान खान् द्वारा मस्जिद बनवाए जाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए १९६१-६२ संख्या २४२ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१५८. सिंधियों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोरी द्वार, जोधपुर

ख. हि० १२५५ [सन् १८३९-४० ई०]

ग. शाह हुसैन द्वारा मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९५५-५६ संख्या १५४ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१५९. जामा मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. ९ जिल्हिज हि० १२६३ [२८ नवम्बर सन् १८४७ ई०]

ग. कहा गया है कि मस्जिद का निर्माण शाह सिराजुद्दीन बहादुर बादशाह गाजी (बहादुरशाह द्वितीय) के शासनकाल में कैम खान के पुत्र मलिक दैम खान के प्रयत्न से हुआ।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ३० पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१६०. जामी मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. शव्वाल २० हि० १२७१ [६ जुलाई सन् १८५५ ई०]

ग. अरबी एवं उर्दू में एक-एक छन्द उल्लिखित है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या ११९ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१६१. जामी मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० १२७२ [१८५५-५६ ई०]

ग. सुल्तान मुहम्मद पीर पहाड़ी की दरगाह से सम्बद्ध दूकानों का उल्लेख हुआ है तथा आगाह किया है कि कोई उन्हें गिरवी न रखे।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १२० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१६२. जामी मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. हि० १२७२ [सन् १८५५-५६ ई०]

ग. उक्त लेख (१६१) में उल्लिखित दुकानों का ही जिक्र इस लेख में हुआ है व कहा गया है कि यदि कोई इनका किराया नहीं देगा अथवा दुरूपयोग करेगा तो उसे शाप होगा।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १२१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१६३. देस्वालियों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. रजब २७ हि० १२७३ [२३ मार्च १८५७ ई०]

ग. मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या १२९ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१६४. अतार्किन की मस्जिद का लेख

क. नागोर

ख. हि० १३०४ [सन् १८८७ ई०]

ग. लेख में कहा गया है कि शाह हमीदुद्दीन नागोर इलाके का रक्षक है। यहाँ शेख इलाही बक्श न्यायाधीश था, जो मस्जिद में गुम्बद का निर्माण करवाना चाहता था, लेकिन उसका स्थानान्तरण मेड़ता हो गया, अतः उसने अपने इच्छित कार्य को सम्पन्न करवाने हेतु सैय्यद अब्दुला को यहां भेजा।

घ. ए०रि०इं०ए० १६६२-६३ संख्या डी २३४ पर निर्देशित।

ङ. गुलाम द्वारा सृजित।

❀

१६५. फैदुल्ला खान की छतरी का अभिलेख

क. जालोर

ख. हि० १३१२ [१८६४-६५ ई०]

ग. अफ़्फ़खान की मृत्यु व उस पर जमादार समद खान द्वारा स्मारक बनवाने का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १६६६-६७ संख्या १६३ पर निर्देशित।

ङ. मुहम्मद शम्सुद्दीन कादिरी द्वारा लिखित तथा सलावट अहमद द्वारा उत्कीर्ण।

❀

१६६. ईदगाह अभिलेख

क. लाडनूं

ख. ....

ग. अभिलेख में कहा गया है कि यह जामा मस्जिद पहले नष्ट हो गई थी अतः सेनानायक मोहम्मद फिरोज खानस मोदी के आदेश से बादशाह फिरोज शाह सुल्तान के शासन काल में इसका पुनर्निर्माण हुआ।

घ. ए०इं०मु० १६४६-५० पृष्ठ १८ पर ए० चग़ताई द्वारा सम्पादित।

ङ. ....

❀

१६७. तोपखाना का अभिलेख

क. जालोर

ख. ....

ग. कुरान की आयत दी गई है जिसमें कहा है कि अल्लाह एक है महमूद उसका पैगम्बर है।

घ. ....

ङ. ....

❀

१६८. दुर्ग-स्थित-मस्जिद का अभिलेख

क. जालोर

ख. ....

ग. भक्तों को प्रभु की प्रार्थना में निमन्त्रित करते हुए लिखा गया है।

घ. ....

ङ. ....

❀

१६९. संद बावड़ी को मस्जिद का लेख

क. जालोर

ख. ....

ग. कहा गया है कि इस मस्जिद का शिलान्यास अबुल नस्त्र मुजफ्फर शाह सुल्तान (द्वितीय) [गुजरात] के शासन काल में हुआ।

घ. ....

ङ. ....

❀

१७०. जामा मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. ....

ग. कुरान की आयत इस अभिलेख में उत्कीर्ण है, जिसका आशय है कि खुदा सर्व-शक्तिमान व सर्वव्यापी है।

घ. ....

ङ. ....

❀

१७१. जामा मस्जिद का अभिलेख

क डीडवाना

ख. ....

ग. कुरान कि एक आयत इस अभिलेख में उल्लिखित है, जिसका आशय यह है कि 'ईश्वर जो चाहता है वही कर देता है।'

घ. ....

ङ. ....

❀

१७२. जामा मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. ....

ग. अभिलेख में हदीस का पद्य उल्लिखित है जिसमें कहा गया है, पैगम्बर मोहम्मद का कथन है कि जो यहाँ (पृथ्वी पर) मस्जिद वनवाता है उसे स्वर्ग में मकान मिलता है।

घ. ....

ङ. ....

❀

१७३. सैयदों की मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. ....

ग. कहा गया है कि इस मस्जिद का शिलान्यास वादशाह औरंगजेब के शासन काल में सैयद कवीर के प्रयासों से हुआ।

घ. ....

ङ.

❀

१७४. हाजी मोहम्मद ताज द्वारा निर्मित मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. ....

ग. कुरान की आयत उल्लिखित है जिसमें कहा है कि 'खुदा के अतिरिक्त और कोई नहीं है, मोहम्मद उसका पैगम्बर है ।

घ. ....

ङ. ....

❀

१७५. हाजी मोहम्मद ताज द्वारा निर्मित मस्जिद का लेख

क. डीडवाना

ख. ....

ग. कुरान की आयत इस लेख में अवतरित है जिसका भाव है कि 'खुदा का कथन है कि उसके (खुदा के) अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं की जाय ।

घ. ....

ङ. ....

❀

१७६. पुराने किले के पास वाली मस्जिद का अभिलेख

क. डीडवाना

ख. रबी-उल-अव्वल हि० ....

ग. अभिलेख में कहा गया है कि इस मस्जिद का निर्माण अबुल-मुज़फ्फर फिरोज़ शाह सुल्तान के शासन काल में हुआ ।

घ. ....

ङ. ....

❀

१७७. काज़ियों की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. रवि-उल-आखिर मास का तृतीय सप्ताह

ग. अभिलेख में कुरान की आयत उत्कीर्ण है जिसका आशय है कि अल्लाह एक ही है व मोहम्मद उसका पैगम्बर है ।

घ. ....

ङ. ....

❀

१७८. दुर्ग की मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. ....

ग. कहा गया है कि इस मस्जिद का निर्माण उस्ताद बहाउद्'दीन की देखरेख में हुआ।

घ. ....

ङ. ....

❀

१७९. बावड़ी के पास का भित्ति-लेख

क. नागोर-दुर्ग

ख. ....

ग. अभिलेख में कहा है कि इस नगर में जो कोई भी व्यक्ति खुश मिजाज अथवा नाखुश मिजाज में आए, वह खुदा के वास्ते, हमारे लिए दुआ करें।

घ: डा० चग़ताई द्वारा ए०इ०मु० १९४९-५० पृष्ठ ५३ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१८०. कचहरी के सामने वाली मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. ....

ग. कहा गया है कि जिस किसी व्यक्ति का शासन इस नगर पर हो वह इस मस्जिद की पवित्रता की रक्षा करे। अभिलेख के नीचे देवनागरी अक्षरों में महाराजा मानसिंह का नाम उत्कीर्ण है।

घ. ....

ङ. ....

❀

१८१. धर्माभिलेख

क. अकबरी मस्जिद, नागोर

ख. ....

ग. अभिलेख में कुरान-ए-शरीफ से आयत-उल-कुर्सी नामक छन्द अवतरित है जिनमें

कहा गया है कि अल्लाह सर्वोच्च एवं सर्वशक्तिमान है, उसकी महत्ता के सम्बन्ध में कोई शंका नहीं कर सकता ।

घ. ....

ङ. ....

❀

१८२. अकबरी मस्जिद का अभिलेख

क. नागोर

ख. ....

ग. अभिलेख में कहा गया है कि बादशाह अकबर के शासन काल में खान हुस्सैन कुली खान ने इस मस्जिद का शिलान्यास किया था ।

घ. ....

ङ. जुम्री के नाम से प्रसिद्ध दरवेश मोहम्मद हाजी द्वारा सृजित ।

❀

१८३. मस्जिद का अभिलेख

क. बालापीर

ख. अभिलेख में खानवाडाह परिवार के शासक फिरोज खान के शासन काल में इस मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है । २४ वर्ष तक शासन करने के उपरान्त ८९९ हि० (सन् १४९३ ई०) में फिरोज खान की मृत्यु हुई ।

घ. इं०आ० १९६०-६१ पृष्ठ ५२ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

१८४. बड़ी मस्जिद का अभिलेख

क. बासनी-बहलोम

ख. ....

ग. बादशाह औरंगजेब के शासन काल के ३८ वें वर्ष में मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है ।

घ. इं०आ० १९६०-६१ पृष्ठ ५३ पर निर्देशित ।

ङ. ....

❀

१८५. औरंगजेब व महाराजा जसवन्तसिंह का अभिलेख

क. फलोदी

ख. ....

ग. मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. इं०आ० १९५९-६० पृष्ठ ६३ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१८६. फिरोजशाह तुगलक का अभिलेख

क. मण्डोर

ख. .... [फिरोजशाह तुगलक का शासन काल]

ग. मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. इं०आ० १९५५-५६ पृष्ठ ३२ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१८७. अल्तमश का अभिलेख

क. खाटू कलां

ख. ....

ग. लेख के खण्डित होने से इसमें मात्र अल्तमश की उपाधियाँ ही अवशिष्ट रही है।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१८८. मुहम्मद तुगलक का अभिलेख

क. खाटू कलां

ख. ....

ग अभिलेख में मात्र मुहम्मद तुगलक का नाम व उसके किसी अधिकारी की उपाधियां उल्लिखित हैं।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६१ पर निर्देशित।

ङ. ....

२८९. शाहजहाँ कालीन अभिलेख

क. मेड़ता

ख. ....

ग. अभिलेख में कहा गया है कि राजा सूरजसिंह की मृत्यु के उपरान्त मेड़ता-परगना बादशाह शाहजहाँ द्वारा अबू मुहम्मद इमाद मुरताद खानी' को दिया, जिसने कि वहाँ जामा मस्जिद का निर्माण करवाया। अभिलेख में यह भी कहा गया है कि ताज़ महबूब नामक सन्त ने भी यहाँ की यात्रा की थी।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१९०. मुकुल तालाब का खण्डित लेख

क. खाटू कलां

ख. अभिलेख में जागीरदार मलिकुल ऊमर फिरोज़ के नाम पर 'फिरोज़ सागर' नामक तालाव के निर्माण का उल्लेख हुआ है। मलिकुल ऊमर फिरोज़, राजकीय अस्तबल के शाहनवेक (मुख्य अधीक्षक) मुहम्मद का पुत्र था। अभिलेख में मलिक ताजुद्-दौलत वाद्-दीन का नामोल्लेख हुआ है।

घ. इं०आ० १९६२-६३ पृष्ठ ६१ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१९१. बहादुरशाह (द्वितीय) का अभिलेख

क. नागोर

ख. ....

ग. राजा सिराजुद्दीन (बहादुरशाह द्वितीय) के शासन काल में खान-ई-आलीशान अशरफ खान् अफगान द्वारा दूकान का निर्माण जाने का उल्लेख इस अभिलेख में हुआ है।

घ. डा० चग़ताई द्वारा ए०इं०मु० १९४९-५० पृष्ठ ५२ पर सम्पादित।

ङ. ....

❀

१९२. छप्परवाली मस्जिद का अभिलेख

क. मकराना

ख. ....

ग. सम्भवत: किसी मस्जिद के निर्माण का उल्लेख हुआ है।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६९-७० संख्या डी १६८ पर निर्देशित।

ङ. मुहम्मद आरिफ द्वारा उत्कीर्ण।

❀

१९३. कालन्दरी मस्जिद का अभिलेख

क. कुम्हारी (जिला नागोर)

ख. ....

ग. अक्षर टूट फुट जाने से अभिलेख पढ़ा नहीं जाता।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६६-६७ संख्या डी २१८ पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

१९४. उमरावशाह गाजी की दरगाह का अभिलेख

क. लाडनूं

ख. ....

ग. अभिलेख मात्र निम्न अंश पढ़ा जाता है–'अल-मुल्कु लि'ल्लाह' अर्थात मात्र अल्लाह का राज्य।

घ. ए०रि०इं०ए० १९६८-६९ संख्या डी ४२० पर निर्देशित।

ङ. ....

❀

परिशिष्ट 1

अभिलेखों में उपलब्ध महत्वपूर्ण वंशावलियां

1. मारवाड़ के प्रतिहार

१. हरिचन्द्र [रोहिल्लद्धि]
२. रज्जिल[1] [१ की क्षत्रिय पत्नि भद्रा के गर्भ से उत्पन्न]
३. नरभट्ट=पेल्लापेल्लि[2] [२ का पुत्र]
४. नागभट्ट[3] [३ का पुत्र]
५. तात[4] [४ का पुत्र]
६. भोज [४ का पुत्र]
७. यशोवर्धन [५ का पुत्र]
८. चण्डुक [७ का पुत्र]
९. शीलुक[5] [८ का पुत्र]
१०. झोटा[6] [९ का पुत्र]
११. भिल्लादित्य[7] [१० का पुत्र]
१२ कक्क[8] [११ का पुत्र व घटियाला का शासक]

---

1. इसके तीन भाई भोगभट्ट, कक्क व दद्द थे। इन्होंने शत्रुओं को भयभीत करने हेतु स्वभुजबल से विजित माण्डव्यपुर-दुर्ग के प्राकार का निर्माण करवाया था।
2. यह अत्यन्त पराक्रमी था, अतः इसका दूसरा नाम पेल्लापेल्लि रखा गया।
3. इसकी रानी का नाम जज्जिकादेवी था। इसने मेडान्तक (मेड़ता) को अपनी राजधानी बनाया था।
4. इसे संसार अस्थाई प्रतीत हुआ, अतः यह अपने अनुज भोज को राज्य सौंप कर सत्य धर्म का ज्ञान प्राप्त करने चला गया।
5. इसने स्त्रवणी एवं वल्ल देश के मध्य तक अपनी राज्य सीमा का विस्तार किया था तथा वल्ल-मण्डल के शासक भट्टिक देवराज को पराजित कर उसका राज्य एवं छत्र छीन लिया व त्रेता में एक जलाशय एवं सिद्धेश्वर महादेव के मन्दिर का निर्माण करवाया।
6. राज्य भोगने के उपरान्त यह गंगा यात्रा पर चला गया।
7. यह भी राज्य भोगने के उपरान्त गंगा यात्रा पर चला गया तथा अनशन कर स्वर्ग को प्राप्त हुआ।
8. इसने मुद्‌गिरी (मुंगेर) में यश प्राप्त किया व गौड़ देश में युद्ध किया। यह छन्द शास्त्र, व्याकरण, तर्कशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, कला तथा समस्त भाषाओं की कविताओं का मर्मज्ञ था।

१३. वाउक [१२ की भट्टि वंशीय रानी पद्मिनी के गर्भ से उत्पन्न-मण्डोर का शासक]

१४. कक्कुक [१२ का पुत्र-घटियाला का शासक][1]

2 हस्तिकुण्डी के राष्ट्रकूट

१. हरिवर्मन [रानी रूचि]
२. विदग्धराज [१ का पुत्र] वि० स० ९७३ (लेखाङ्क ६)
३. मम्मट [२ का पुत्र] वि०सं० ९९६ (लेखाङ्क १२)
४. धवल[2] [३ का पुत्र]
५. बालप्रसाद [४ का पुत्र] वि० सं० १०५३ (लेखाङ्क १७)

3. परमार वंश

१. सिंधुराज [मरूमण्डलाधीश]
२. ऊसल=उत्पल [१ का पुत्र]
३. अरण्यराज[3] [२ का पुत्र]
४. वासुदेव[3]=अद्भुत कृष्णराज प्रथम [३ का पुत्र]
५. धरणीवराह[4] [४ का पुत्र]
६. महीपाल [५ का पुत्र-दूसरा नाम देवराज[5]] वि० सं० १०६९ (लेखाङ्क २२)
७ धधुक[6] [६ का पुत्र]
८. पूर्णपाल[7] [७ का पुत्र-रानी अमृत देवी के गर्भ से उत्पन्न] वि० सं० १०९९, ११०२ (लेखाङ्क २७)

---

1. अभिलेखाङ्क ८ में राणुक व उसकी पत्नि संपल्लदेवी का नामोल्लेख हुआ है यह सम्भवतः कक्कुक का ही कोई वंशज था। इसी प्रकार अभिलेखाङ्क २५ में सुभच्छ राज व उसकी पत्नि सपिका का नामोल्लेख हुआ है तथा सुमच्छराज को कक्कुक का वशज बताया है। लेखाङ्क २६ के अनुसार सुमच्छराज का पुत्र चहिल था।
2. इसने किसी राजा (भण्डारकर के अनुसार सम्भवतः मेवाड़ के गहलोत शासक अम्बाप्रसाद) की सेना को तथा गुर्जराधीश को आश्रय प्रदान किया जबकि मुञ्जराज ने मेदपाट के आघाट को नष्ट कर दिया था। इसने दुर्लभराज के विरुद्ध महेन्द्र को संरक्षण दिया तथा धरणीवराह को सहायता दी जिसकी कि शक्ति को मूलराज ने नष्ट कर दिया था।
3. किराडू अभिलेख (लेखाङ्क ८४) में ये दोनों नाम नहीं हैं।
4. राष्ट्रकूट धवल का समकालीन [लेखाङ्क १७]
5. देवराज हेतु द्रष्टव्य प्रो०रि०आ०स०, वे०स० १९०७-८ पृष्ठ ३८
6. चालुक्य दुर्लभ तथा भीम प्रथम का समकालीन (लेखाङ्क ८४)
7. पूर्णपाल की अनुजा का नाम लाहिणी था, जो राजा विग्रहराज की पत्नि थी व अपने पीहर में ही रहती थी।

९. कृष्णराज द्वितीय[1] [७ का पुत्र] वि० सं० १११७, ११२३ (लेखाङ्क २६, ३०)

१०. सोच्छराज [९ का पुत्र]

११. उदयराज[2] [१० का पुत्र]

१२. सोमेश्वर [११ का पुत्र] वि० सं० १२१८ (लेखाङ्क ८४)[3]

4. जालोर के परमार

१. वाक्पतिराज

२. चन्दन [१ का पुत्र]

३. देवराज [२ का पुत्र]

४. अपराजित [३ का पुत्र]

५. विज्जल [४ का पुत्र]

६. धारावर्ष [५ का पुत्र]

७. वीसल [६ का पुत्र] वि०सं० ११७४ (लेखाङ्क ४२) [वीसल की रानी का नाम मल्लारदेवी दिया गया है।]

5. नाडोल के चौहान

१. वाक्पतिराज [शाकम्भरी का शासक]

२. लक्ष्मण [१ का पुत्र, नाडोल का शासक] वि०सं० १०२४, १०३९ (लेखाङ्क १५ व १६)

३. शोभित [२ का पुत्र]

४. बलिराज [३ का पुत्र]

५. विग्रहपाल [२ का पुत्र]

६. महेन्द्र=महिन्दु [५ का पुत्र]

७. अश्वपाल [६ का पुत्र]

८. अहिल [७ का पुत्र]

९. अणहिल्ल [६ का पुत्र]

१०. बालप्रसाद [९ का पुत्र]

११. जेन्द्रराज=जेसल [९ का पुत्र]

१२. पृथ्वीपाल [१० का पुत्र]

१३. जोजल्ल=योजक [११ का पुत्र] वि०सं० ११४७ (लेखांक ३३व३४)

१४. आशाराज=अश्वराज [११का पुत्र] वि० ११६७ (लेखाङ्क ३८)

१५. कटुकराज [१४ का पुत्र] वि० सं० ११७२ तथा सिंह सं० ३१ (लेखाङ्क ४१ तथा ३९४)

१६. रत्नपाल [१२ का पुत्र] वि०सं० ११७६ (लेखाङ्क ४५)

---

1. यह चालुक्य भीम I तथा नाडोल के चौहान बालप्रसाद का समकालीन था। (लेखाङ्क १५१)
2. यह चालुक्य जयसिंह का सामन्त था तथा इसने चोड़, गौड़, करनाट तथा मालव तक अपनी शक्ति का विस्तार कर लिया था।
3. इसने चालुक्य जयसिंह सिद्धराज की कृपा से सिंधुराजपुर का राज्य पुनः हस्तगत कर लिया तथा सम्वत १२०५ में कुमारपाल के शासनकाल में इसने स्थायी रूप से अपनी सत्ता स्थापित करली व लम्बे समय तक किरातकूप व शिवकूप की रक्षा की।

१७ रायपाल[1] [१३ का पुत्र] वि०सं० ११८९,११९५,११९८ तथा १२०० (लेखाङ्क ५१, ५५, ५७, ५९)

१८. आल्हण[2] [१४ का पुत्र] रानी अन्नल्लदेवी वि० सं० १२०९, १२१८ (लेखाङ्क ७३ व ८२)

१९. केल्हण[3] [१८ का पुत्र] रानी महिवलदेवी तथा जाल्हणदेवी वि० सं० १२२०, १२२१, १२२३, १२२४, १२२७, १२३१, १२३३, १२३६, १२४१, १२४९ (लेखाङ्क ८७, ९०, ९४, ९५, ९७, १०२, १०६, ११०, १११, ११६)

२०. जयंतसिह [१९ का पुत्र] वि०सं० १२५१ (लेखाङ्क १३१-३२)

6. जालोर के चौहान [सोनगिरा चौहान]

१. कीर्तिपाल[4]

२. समरसिंह[5] (१ का पुत्र) वि० सं० १२३९ तथा १२४२ (लेखांक ११४ तथा ११९)

३. उदयसिंह[6] [२ का पुत्र] वि० सं० १२६२, १२७४, १३०५ व १३०६ (लेखांक १३९, १४३, १४८ व १४९)

---

1. इसके दो रानियां थी—(i) पद्मल्लदेवी, जिसके कि गर्भ से सहजपाल (लेखाङ्क ३९५) का जन्म हुआ तथा (ii) मानलदेवी, जिसके कि गर्भ से रूद्रपाल व अमृत पाल (लेखाङ्क ५१) का जन्म हुआ।
2. इसके तीन पुत्र थे —गजसिंह (लेखाङ्क ८६), कीर्तिपाल (लेखाङ्क ८२) तथा विजयसिंह। इनमें से कीर्तिपाल से चौहानों की सोनगरा शाखा चली (देखिये वंशावली संख्या 6) तथा विजयसिंह से सांचोरा शाखा चली (देखिये वंशावली संख्या 7)।
3. इसके दो अन्य पुत्र सिंहविक्रम (लेखाङ्क ११०) तथा सोढलदेव (लेखाङ्क ११६ तथा १२९) थे। इसकी एक पुत्री शृंगारदेवी का विवाह परमार शासक धारावर्ष के साथ हुआ तथा दूसरी पुत्री लाल्हणदेवी का विवाह प्रतिहार विग्रह के साथ हुआ।
4. यह नाडोल शाखा के चौहान आल्हण का पुत्र था। सम्वत् १२१८ तक यह महाराजा पुत्र (राजकुमार) था (लेखाङ्क ८२)।
5. इसके दूसरे पुत्र का नाम मानवसिंह (महणसिंह) था, जिससे चौहानों की देवड़ा शाखा चली तथा इसकी पुत्री लीलादेवी का विवाह चालुक्य भीमदेव (द्वितीय) के साथ हुआ था (ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ७४)।
6. चाचिगदेव के अतिरिक्त इसके दो पुत्र और थे—पहला चामुण्डराज जो प्रह्लादन देवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था तथा दूसरा पुत्र वाहड़सिंह था।

४. चाचिगदेव[1] [३ का पुत्र रानी प्रह्लादनदेवी के गर्भ से उत्पन्न] वि०सं० १३१६, १३२३, १३३०, १३३२, १३३३, १३३४, लेखांक १५१, १५५, १६०, १६१, १६२, १६३)
५. सामन्तसिह [४ का पुत्र] वि० सं० १३३६, १३४०, १३४२, १३४४, १३४५, १३४८, १३५२, १३५३, १३५५, १३५६, १३५६, १३६२, (लेखांक १६५, १६७, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७ से १८०)
६. कान्हड़देव[2] [५ का पुत्र]
७. मालदेव[3] [५ का पुत्र]
८. वणवीरदेव [७ का पुत्र] वि० सं० १३६२ व १३६४ (लेखांक १६६)
६. रणवीरदेव [८ का पुत्र] वि० सं० १४४३ (लेखांक १६६)

7. सांचोर के चौहान [सांचोरा चौहान]

१. विजयसिंह[4]
२. पद्मसिंह[4] [१ का पुत्र]
३. सोभित [२ का पुत्र]
४. साल्हृ [३ का पुत्र]
५. विक्रमसिंह [४ का पुत्र]
६. संग्रामसिंह [५ का पुत्र]
७. प्रतापसिंह [६ का पुत्र] इसकी रानी ऊमट परमार सूहड़सल्य की पुत्री थी वि० सं० १४४४ (लेखांक १६७)

8. कन्नौज के प्रतिहार

१. नागभट्ट [नागावलोक]
२. काकुस्थ=कक्कुक (१ के भाई का पुत्र, इसके पिता का नाम ज्ञात नहीं होता)।
३. देवराज=देवशक्ति (२ का अनुज)
४. वत्सराज[5] (३ की रानी भूयिकादेवी के गर्भ से उत्पन्न।
५. नागभट्ट II[6]=नागावलोकाम (४ की रानी सुन्दरदेवी के गर्भ से उत्पन्न) वि०स० ८७२ (लेखांक १)
६. रामदेव=रामभद्र (५ की रानी इसटा देवी के गर्भ से उत्पन्न)
७. भोज I[7]=मिहिर आदिवराह (६ की रानी अप्पादेवी के गर्भ से उत्पन्न) वि०सं० ६०० (लेखांक ३)

---

1. इसकी पुत्री रूपादेवी का विवाह तेजसिंह के साथ हुआ था (लेखाङ्क १६६)।
2. मूता नैणसी के अनुसार इसका पुत्र वीरमदेव था।
3. द्रष्टव्य ए०इं० खण्ड XI पृष्ठ ७८।
4. ये नाम मूता नैणसी की ख्यात के आधार पर दिये गये हैं।
5. इसका शक सम्वत् ७०५ का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है (द्रष्टव्य इं०ए० खण्ड XV पृष्ठ १४२ तथा ए०इं० खण्ड VI पृष्ठ १६५)।
6. इसकी मृत्यु वि०सं० ८६० में हुई (द्रष्टव्य 'प्रभावक चरित' पृष्ठ १३१)
7. इसके अन्य अभिलेखों हेतु देखिये-भण्डारकर कृत 'लिस्ट ऑफ द नार्थ इण्डियन इन्स्क्रिप्सन्स' लेखाङ्क २५, २८, ३३, ३५, ३६, १४१०, १४१२, १६६२ व ६३।

9. खेड़ के राठोड़

१. सीहाजी[1]
२. सोनिग (१ का पुत्र)
३. आसथान (१ का पुत्र)
४. धूहड़ (३ का पुत्र)
५. रायपाल (४ का पुत्र)
६. कान्हराज (५ का पुत्र)
७. जालणसी (६ का पुत्र)
८. छाडा (७ का पुत्र)
९. तीडा (८ का पुत्र)
१०. सलखा (९ का पुत्र)
११. माला[2] (१० का पुत्र)
१२. जगमाल I (११ का पुत्र)
१३. मण्डलिक (१२ का पुत्र)
१४. भोजराज (१३ का पुत्र)
१५. नीसल (१४ का पुत्र)
१६. वरसिंह (१५ का पुत्र)
१७. हापा (१६ का पुत्र)
१८. मेघराज[3] (१७ का पुत्र)
१९. माणदुर्योधन राज (१८ का पुत्र)
२०. तेजसी[4] (१९ का पुत्र)
२१. जगमाल II[5] (२० का पुत्र)
२२. भारमल

---

1. इसे सूरिज वंशी कन्नोजिया राठोड़ कहा गया है। इसकी मृत्यु वि०सं० १३३० में हुई। (द्रष्टव्य लेखांक १५७)।
2. इसके अनुज वीरम के पुत्र चूण्डा से मण्डोर के राठोड़ों की शाखा चली।
3. इसके दो अभिलेख क्रमशः वि०सं० १६१४ व १६३७ के प्राप्त हुए हैं। (लेखांक २३५) प्रो०रि०आ०स० १९११-१२ पृष्ठ ५५।
4. इसके काल के दो अभिलेख वि०सं० १६६६ व १६६७ के प्राप्त हुए हैं (लेखांक २६१ व २६२)।
5. इसके काल के तीन अभिलेख वि०सं० १६७८, १६८१ तथा १६८६ के प्राप्त हुए हैं (लेखांक २७०, २७२, २८३) प्रस्तुत वशावली अन्तिम अभिलेख के आधार पर दी गई है (विशेष अध्ययन हेतु देखिए मेरे निवन्ध—(i) राठोड़ों की रावल शाखा-अन्वेषणा भाग १ अंक १ पृष्ठ ४४ तथा (ii) रावल जगमाल का नगर अभिलेख-प्रॉसिडिंग्ज ऑफ राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस १९६७ पृष्ठ २११।

परिशिष्ट 2

क. व्यक्तियों की नामानुक्रमणिका

❀ नागरी अभिलेख

अरबी-फारसी अभिलेख

ख. स्थानों की अनुक्रमणिका

❀ नागरी अभिलेख

अरबी-फारसी अभिलेख

सुमन प्रिन्टर्स, त्रिपोलियाँ, जोधपुर.